

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्री श्रुतकेवलीभद्रवाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग चोथो ॥

(मूल अने शीलाङ्काचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)



जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मरणर्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज—(जामनगरवाला)

१९९०

पडतर किंमत रु. २-८-०

प्रति २००

श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्यु—जामनगर.

आचार
॥६०९॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ॥

(मूल अने शिलाङ्गाचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर)
भाग चोथो

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

पांचमो उद्देशो कहे छे.

पांचमा उद्देशानो चोथा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे के, चोथामां कहुं केः—अगीतार्थ अपाकष वयनो साधु एकलो विचरतां दुःख पामे छे, तेथी ते दुःखो दूर करवा इच्छता साधुए हमेशां आचार्यनी सेवामां रहेबुं; तथा, ते आचार्ये पण हृदनी उपमावाळा थबुं; अने तेमनी साथे बीजा साधुए रही तप—संयमथी युक्त बनीने निःसंगपणे विचरबुं. [ए पांचमां उद्देशामां छे,] आवा संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

सूत्रम्
॥६०९॥

आचार्य
॥६१०॥

से वेमि तंजहा—अवि हरए पडिपुण्णो समंसि भोमे चिट्ठइ उवसंतरए सारखखमाणे, से
चिट्ठइ सोयमज्जगए से पास सब्बओ गुत्ते, पास लोए महेसिणो जे य पन्नाणमंता पबुद्धा
आरंभोवरया सम्ममेयंति पासह, कालस्स कंखाए परिव्ययंति, त्तिवेमि (सू० १६०)
से (जेवा) गुणवाळो आचार्य होय; ते हुं तमने तीर्थकरना उपदेशना अनुसारे कहुं छुं. ते आ प्रमाणे छे:—(वाक्य स्थापना
'तथा' वपराय छे, तथा, अपि शब्द भांगना समुच्चय माटे वपराय छे.)

हुद (होद—कुंड) नुं वर्णन.

तेना चार भांगा नीचे मुजब छे. (१) ते होदमां धीरे धीरे पाणी नीकलतुं होय अने पाछुं बीजी वाजुथी भरातुं होय ते
सीता तथा सीतोदा नदीना प्रवाहना कुंड जेबुं छे. (२) बीजो कुंड ते पाणी नीकले खरुं; पण पाछुं बीजुं न आवे ते पदमद्रह
जेबुं छे. (३) तथा त्रीजो पाणी नीकले नहीं पण आवे खरुं ते लवण समुद्र जेवो छे, (४) जेमां पाणी आवे पण नहीं अने नीकले
पण नहीं, ते, मनुष्य लोकनी बहारना समुद्र माफक छे, तेज प्रमाणे आचार्य पोते श्रुतने अंगीकार करीने बीजाने भणावे छे,
तेथी ते पहेला भागमां आवे छे, तथा क्रोधना कारणे बीजा भांगामां आवे छे, एङ्गले कषायना उदयमां ग्रहणनो अभाव छे तेथी
तप तथा कायोत्सर्ग विगेरेथी क्षणना उपपत्तितुं कारण छे, आलोचनाने अंगीकार करवाथी त्रीजो भांगो लागु पडे, आलोचनाना
कारणे कोइने संभलावी शके नहीं, कुमार्गमां पडेलो चोथा भांगामां छे कारण के तेने प्रवेशनिर्गमननो अभाव छे, अथवा धर्मि

सूत्रम्
॥६१०॥

आचार

॥६११॥

भेदथी भेदो योजाय छे, स्थविर कल्याचार्यो प्रथम भंगमां छे, बीजा भांगमां तीर्थकरो छे, त्रीजा भांगमां अहालंदिक छे तेमने कोइ वखत अर्थनी प्राप्ति थइ न होय, त्यारे आचार्य विगेरे पासेथी तेमने तेना निर्णयनो सद्भाव छे, अने प्रत्येक बुद्धोने उभय [लेवुं आपवुं ने भणवुं भणाववुं] तेनो निषेध होवाथी तेओ चोथा भांगमां छे, पण आ जग्याए प्रथम भंगमां आवेला ने भणवा भणाववानो सद्भाव होवाथी तेनो अधिकार छे, अने तेवा हृदरूप आचार्यनोज अहीं दृष्टांत छे, अने ते हृद निर्मल जलनो भरेलो तथा सर्व ऋतुमां जन्मनारां [उत्पन्न थनारां] कमळोथी शोभायमान छे, समभूभागमां रहेल पाणीनुं नीकलवुं अने आववुं नित्यज थाय छे, पण कोइ दहाडो सुकातो नथी, अने सुखेथी तेमां तरवानुं तथा नीकलवानुं बनी शके तेवो छे, तथा उपशांत ते रज विगेरे जे पाणीने काळुं बनावे ते जेमांथी दूर थयेल छे, तथा जुदी जुदी जातना जळचर जीवोना समूहने बचावतो अथवा जळचर जीवोबडे पोतानी रक्षा करतो रहेल छे, आ आपणी चालु क्रिया दृष्टांतमां लेवानी एटले आ हृद जेवा आचार्य छे, ते प्रथम भांगाना लेवा, पांच प्रकारना आचार युक्त छे. अने आचार्यनी आठ प्रकारनी संपदाथी जोडायेलो छे, ते बतावे छे.

आयार सुअ सरीरे वयणे वायण मई पओगमई । एए सुसंपया खलु अट्ठमिआ संगहपरिज्ञा ॥१॥

आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मति, प्रयोगमति, अने आठमी संग्रह-परिज्ञा छे. अर्थात् आचारमां सारो, सिद्धांतनुं पूर्वापरनुं ज्ञान, शरीर सुंदर, वचन माननीय होय; वाचना आपवामां होशीयार होय; बुद्धि तीक्ष्ण होय; प्रयोगमतिवाळो, तथा साधु-समुदायने योग्य उपकारण विगेरेनो संग्रह करनारो होय.

सूत्रम्

॥६११॥

आचार्य
॥६१२॥

तथा, छत्रीस प्रकारना गुणोना समुदायने धारनारो कुंडनी माफक निर्मल ज्ञाने भरेलो समान-भूमाग एटले, संसक्त विग्रे
(रागद्रेष)-दोषथी अदोषित, अथवा सुखविहारनां क्षेत्रमां मध्यस्थ रहे; तथा, ज्ञानदर्शन-चारित्र नामनो मोक्षमार्ग उपशमवाळा
साधुओनो छे, तेमां रहे छे. समता धारे, केवो बनीने? उपशांत थइ छे रजरूप मोहनीकर्म जेने, शुं करतो? जीवनीकायनी पोते
रक्षा करतो बीजाने सारो उपदेश देवावडे रक्षा करावतो; अथवा नरकपात अटकावी बचाववाथी परनो रक्षक बने छे. 'स्रोतो मध्य
गतः' आथी प्रथम भांगामां आवेला स्थविर आचार्यने कहे छे, तेने श्रुतअर्थना दान ग्रहणनो सद्भाव छे, तेथी स्रोत मध्यगतपणुं
छे ते आचाय केवा होय? ते कहे छेः—ते आचार्य क्षोभायमान न थाय; तेवा हृद जेवा बधी रीते इन्द्रियो तथा मनने वश राख-
नारा गुस्ति गुप्त छे तेने तुं जो, (आवुं शिष्यने गुरु कहे छे,) तथा आचार्य शिवाय पण, एवा बीजा वहु साधुओ संभवे छेः एवुं
बताववा कहे छेः—आ मनुष्य लोकमां पूर्वे बतावेला स्वरूप—(गुणो) वाळा महर्षिओ [मोटा मुनिओ] छे तेमने तुं जो ते महर्षिओ
केवा छे? ते कहे छेः—फक्त आचार्योंज हृद जेवा छे. एटलुंज नहि; पण, बीजा साधुओ पण तेवा हृद जेवा छे. प्रकर्षथी जणाय
ते प्रज्ञान. पोतानुं तथा परनुं स्वरूप बतावनार ते आगम छे, तेने भगेला अर्थात् आगमना जाण (गीतार्थ) होय; कदाच, तेवुं
जाणनारा छे छतां, मोहना उदयथी कोइ वखत हेतु उदाहरणना असंभवमां, अने ज्ञेयना गहनपणाथी संशयमां पडेला सम्यग—
श्रद्धानने न माननारा पण होय; तेथी, खुलासो करे छे के, 'प्रबुद्धा' प्रकर्षथी जेम, तीर्थकर कहे तेवुंज तत्त्व पोते समजेला होय;
अने तेवा छतां भारी कर्मने लीघे सावद्य—अनुष्ठानने छोडनारा न होय; (चारित्र न पाळे;) तेथी खुलासो करे छे के, 'आरंभो
परताः' ते सावद्ययोगथी दूर रहेला महर्षिओ छे. अमारा उपरोध (शरमथी) ग्रहण न कर; पण तमारे तमारी निर्मल बुद्धिवडे

सूत्रम्
॥६१२॥

आचार्य
॥६१३॥

विचारीने जोवा, ते बतावे छे, आ जे में कहुं; ते तमे (हे शिष्यो!) पण, मध्यस्थता धारण करीने समर्यादने जुओ; वक्ती आ पण जुओ. काळ ते, समाधि—मरण छे. तेनी अभिकांक्षावडे साधुओ मोक्षमार्गवाला संयममां बधी प्रकारे वर्ते छे. आ प्रमाणे हुं कहुं छुं. इति ब्रवीपि शब्द, प्रकरण, उद्देशो, अध्ययन, श्रुतस्कंध के, परिसमाप्तिमां आवे छे, तेमां, अहीं अधिकारनी समाप्तिमां जाणवो, आचार्यनो अधिकार कहा। पछी विनेय (शिष्य) नो अधिकार कहे छे:—

वितिगिच्छसमावन्नेणं अप्पाणेणं नो लहड समाहिं, सिया वेगे अणुगच्छंति, असिता वेगे
अनुगच्छंति, अणुगच्छ माणेहिं अणणुगच्छमाणेकहंनिविजे ? (सू० १६१)

विचिकित्सा ते, चित्तनो विष्वल छे, आप पण छे. एवा प्रकारना संकल्पो ते, युक्तिथी उत्पन्न थता अर्थमां मोहना उदयथी मतिनो विभ्रम थाय छे. ते आ प्रमाणेः—आ महान् तपनो कलेश रेतीना कोळीया खावा जेबुं निःस्वाद छे, ते करवाथी तेनुं फल मळशे के नहि? कारण के, खेती करनार विभेरेने महेनत करवा छतां, फल मळे छे के, नथी पण मन्तुं ? आवी मति मिथ्यात्वनो अंश उदयमां आववाथी तथा, ज्ञेयने जाणबुं गहन छे तेथी थाय छे, ते ज्ञेयने बतावे छे.

अर्थ त्रण प्रकारनो छे. (१) सुखथी समजाय दुःखथी समजाय; अने बीलकुल न समजाय. २ त्रणे सांभळनारना आधार उपर भेद छे, तेमां सुखाधिगम बतावे छे. जेमके—चक्षुवालो होय; अने चित्रकलामां निपुण होय; तेने रूपप्रसिद्धि (चित्र करबुं) सुलभ छे, अने अनिपुणने दुःखेथी चीतराय; पण आंधकाथी तो, बीलकुल देखायात्तिना न चीतराय; तेमां अनधिगम रूप तो, अ-

सूत्रम्
॥६१३॥

आचारो
॥६१४॥

स्तु ज छे, अने सुखाधिगम पण शंकानो विषय न थाय, पण जे देशकाळ स्वभावथी विप्रकृष्ट होय; तेमांज शंका थाय, ते धर्म—
अधर्म, आकाश विगेरेमां जे विचिकित्सा थाय ते जाणवी; अथवा ‘विडिगिच्छति’ विद्वाननी जुगुप्सा एटले, विद्वानो ते साधुओ
छे. जेमणे संसारनो स्वभाव जाण्यो छे, अने समस्त संगनो त्याग कर्यो छे, तेओनी जुगुप्सा (निंदा) करे छे. कारणके, तेओ
स्नान करतानथी; तथा, परसेवाना मेलथी गंधातां शरीरवाळा छे. तेओने निंदे छे, ‘निंदनारा कहे छे के,’ जो, अचित्त पाणीथी
स्नान करे; तो, शुं दोष छे ? आ जुगुप्सा छे, ते जुगुप्साने अथवा, विचिकित्साने प्राप्त करेला आत्मावाळो (शंकावाळो) चित्तनी
समाधि अथवा ज्ञानदर्शन चारित्ररूप समाधिने पामतो नथी, कारण के विचिकित्साथी मलीन चित्तवाळाने आचार्य कहे तौपण
सम्यक्त्व नामनी बोधि [भगवानना बचन उपर आस्था] मेलवतो नथी; अने जे बोधि मेलवे छे, ते गृहस्य अथवा साधु होय, ते
बतावे छे, ‘सितांः’ पुत्र स्त्री विगेरेमां रागी बनेला होय, अथवा लघुकर्मवाळा सम्यक्त्वने पमाइनार आचार्यने अनुसरे छे. अर्थात्
आचार्यनुं कहेलुं माने छे ते प्रमाणे केटलाक गृहनास छोडेला साधुओ शंका विगेरेथी रहित बनी आचार्यना मार्गने अनुसरे छे.
तेमनामां पण जो कोइ कोरडु माफक होय, ते पण तेवा बीजा उत्तम मार्गने अनुसरनारा साधुने जोइ ते आ कोरडु जेवो पण
तेनां अशुभ कर्म ओछां थतांते पण सम्यक्त्व पामे, ते बतावे छे. आचार्यनुं कहेलुं सम्यक्त्व भाननार श्रावकोथी परिचयमां आवतो
अथवा प्रेरणा करातो न माने, तो पछी केवी रीते निर्वेद न पामे? अर्थात् खराव कृत्यनी मिथ्यात्वादि रूप विचिकित्साने छोडीने
ते पण सम्यक्त्व पामे; अथवा साधु—श्रावक जेओ संसारमां रक्त अथवा विरक्त होय; तेओ आचार्यनुं कहेलुं समजे; तो, कोइ अ-
ज्ञानना उदयर्थी मंद बुद्धि होवाथी तपस्वी साधु घणा वर्षनो दीक्षित होय; ते जो, न समजे; तो, केम खेद न पामे ? (कदाच) तप

सूत्रम्
॥६१४॥

आचार्य

॥६१५॥

अने संयमनो निर्वेद न होय; अने अनिर्वेदी होय; तो आचार्यण भावना भावे. जेयके—जो, हुं भव्य नहीं होउं तो, मने संयमभाव पण न थी. के, प्रकट—(सुलुं करीने) गुरु कहे छे तोपण, हुं समजतो न थी. आ प्रमाणे खेद पामताने आचार्य समाधिनां वचन कहे छे के:—हे साधु ! खेद न कर ! तुं भव्य छे. कारण के, तुं सम्यक्त्व पाम्यो छे, अने ते ग्रन्थीभेद विना न होय. अने ग्रन्थीभेद भव्यत्व विना न होय, कारण के, अभव्यने भव्य, के अभव्यपणानी शंका पण न थाय.

वली, अविरतिनो परिणाम बार कषायनो क्षय उपशम उपशम के क्षय थतांज होय छे, अने ते विरति तुं पाम्यो छे. तेथी, दर्शनचारित्र-योहनीयनो तारे क्षयोपशम थयो छे. नहीतो, सम्यग्दर्शन-चारित्रनी प्राप्ति न होय पण, तने कहा छतां जो, वधा पदार्था न समजाय; तो, ज्ञानावरणीयकर्मना उदयनुं लक्षण जाणवुं; त्यां तो, तारे श्रद्धारूप—प्रम्यक्त्व स्वीकारवुं. ते कहे छे:—

तमेव सञ्च नोसंकं जं जिण हिं पवेइयं (सू० १६२)

ज्यां आगळ स्वसमय, परसमयना जाण आचार्य न होय; तथा, जीणी गृह बावतोमां, अने अतींद्रिय पदार्थेमां बने पक्षने मान्य दृष्टांत तथा, सम्यग्देतुना अभावथी ज्ञानावरणीयना उदयथी सम्यग्ज्ञान न होय; त्यां पण आ प्रमाणे चिंतव्यवुं के, तेज एक सत्य छे अने तेज निःशंक छे के, जिनेश्वरे कहेला अत्यंत सूक्ष्म-अतींद्रिय पदार्थो जे फक्त आगमथी मानवायोग्य छे (ते मारे प्रमाण छे.) तथा मानवामां शंका न होय; ते निःशंक्ति कहेवाय. के धर्म-अधर्म, आकाश, पुहळ विगेरे जे तीर्थकरे कहेलुं छे, ते रागद्वेषने जीतेला जिनो छे, माटे तेमनुं कहेलुं सत्यज छे. आवुं श्रद्धान करवुं. वरोवर रीते पदार्थ न समजाय; तोपण, शंका न करवी.

सूत्रम्

॥६१५॥

आचा०
॥६१६॥

ॐ नमः शिवाय

प्र०—थुं साधुने पण शंका थाय छे के, तमे आम कहो छो ?

उ०—संसारनी अंदर रहेला जीवोने मोहना उद्यथी शुं न थाय ? ते प्रमाणे आगमां कहेलुं छे.

गौतमनो प्र०—हे भगवन् ! साधुनिग्रन्थो कांक्षामोहनीयकर्म वेदे छे ?

“ अतिथि णं भंते ! समणावि निगंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता अतिथि, कहन्नं समणावि णिगंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेयंति ? गोयमा ! तेसु तेसु नाणन्तरेसु चरित्त तरेसु संकिया कंखिया विइगिच्छासमावन्ना भेयसमोवन्ना कलुससमावन्ना, एवं खलु गोयमा ! समणावि निगंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदंति तत्थालंबणं ‘ तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ’ से णूंगं भंते एवं मणं धारेमाणे आणाए आराहए भवति? हंता गोयमा ! एवं मणं धारेमाणे आणाए आराहए भवति, ”

उ०—हा. प्र०—केवी रीते ते वेदे छे ?

उ०—तेवा तेवा ज्ञानना के, चारित्रिना विषयमां न समजातां शङ्का, कांक्षा, विचिकित्सावाळा वनी भेदोने पामेला न समजातां हृदयमां झंखवाणा वने छे तेथी हे गौतम ! ते ठीकछे के, साधुने पण शङ्का विगेरे थाय.

सूत्रम्

॥६१६॥

ॐ नमः शिवाय

आचा०

॥६१७॥

गौतम कहे छे:—हे भगवान् ! ते समये साधु मनमां एम चिंतवे के, “तेज सत्य, निःशङ्क छे. के जे, जिनेवरे कहेलुं छे.”
तो, ते आज्ञा पाळवानो आराधक थाय के ?

उत्तर—हे गौतम ! एम मनमां धारे; तो आराधक थाय छे.

वली गुरु उपदेश आपे छे के, साधुए विचारवुं के—

वीतरागा हि सर्वज्ञा मिथ्या नं ब्रुवते व्वचित् । यस्मात्स्माद्वचस्तेषां, तथ्यं भूतार्थदर्शनम् ॥१॥

वीतराग पोते सर्वज्ञ छे. अने तेथी, निश्चे तेओ जुडुं न बोले. जेथी, तेमनुं वचन जीवोनुं स्वरूप बतावनाहुं साचुं छे. विगेरे समजी लेबुं. वली, आ विचिनित्सा दीक्षा लेनारने आगममां मति स्थिर थयली न होवाथी थाय छे. तेवाए पण उपर बतावेलुं रहस्य चिंतवुं ते कहे छे:—

सद्गुरुस्म णं समणुन्नस्स संपद्यमाणस्स समियंति मन्नमाणस्स एगया समिया होइ
१, समियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ २, असमियंति मन्नमाणस्स एगया
समिया होइ ३, असमियंति मन्नमाणस्स एगया असमिया होइ ४, समियंति मन्नमा-
माणस्स समिया वा असमिया वा समिया होइ ५, असमियंति मन्नमा-

सूत्रम्

॥६१७॥

आचा०

॥६१८॥

णस्स समिया वा असमिया वा असमिया होइ उवेहाए ६, उवेहमाणो अणुवेहमाणं
ब्रूया-उवेहाहि समियाए, इच्चेवं तत्थ संधी झोसिओ भवइ, से उट्टियस्स ठियस्स गइं
समणुपासह, इत्थत्रि बालभावं अप्पाणं नो उवदंसिज्जा (सू० १६३)

श्रद्धा धर्मनी इच्छा ते जेने होय; ते, श्रद्धावान् छे. तेवा भव्यजीवने संविग्र, अने योग्य विहार करनारा साधुओए, अथवा संविग्र विगेरे गुणोथी दिक्षा लेवायोग्य होय; तेने दिक्षा लेतां शंका थाय; तो, तेने जीवादि पदार्थमां बोध पामवानी अशक्ति होय; तो, तेने समजावरुं के, हे भद्र ! जिनेश्वरे जे कहेलुं छे, ते शंकारहित अने सत्य छे. आ प्रमाणे दिक्षालेतां बोध आपवाथी तेनो आत्मा चारित्रथी निर्मल थतां; चडता कंडकथी पछाना काळमां पण निर्मल भावना वधे; अथवा बरोबर रहे; ओछी पण थाय अथवा अभाव पण थाय. आवी जीवनी विचित्र परिणामता बतावे छे, ते श्रद्धावालाने समजावीने दिक्षा लीथा छतां, पोते जिनेश्वरनुं कहेलुं वचन शंकारहित साचुं मानतो पाछलथी पण शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, विगेरेथी रहित निर्मल सम्यक्त्ववालो होय छे, पण भगवानना वचनमां शंका उत्पन्न थती नथी. (१) कोइने दीक्षा लेतां श्रद्धा होवार्थी मानवा छतां पाछलथी न्याय भणतां कोइ जातनो एकांत पक्ष पकडतां हेतु दृष्टांतनो लेश हाथमां आवतां पूर्वापर विचार न थवाथी; अने ज्ञेयपदार्थ गहन होवाथी मति मुंझातां कोइ वखत पिध्यात्वना अंशानो उदय थतां; ते जिनवचनने मम्यक् मानतो नथी, ते कहे:—आ वधा नयना समूहना अभिप्रायना कारणे अनंत धर्मथी युक्तवस्तु जेवी छतां, पोहना उदयथी एकनयना अभिप्रायवडे एक अंश साधवा माटे ते साधु जाय छे. जो, नित्य

सूत्रम्

॥६१८॥

आचा०

॥६१९॥

जिनेश्वरे कहेल; ते फरी अनित्य केम थाय? अथवा अनित्य ते, नित्य केम थाय? कारणके, ते बने परस्पर विरोधी छे.
ते प्रमाणे अप्रच्युत अनुसन्ध स्थिर एक स्वभाववालुं नित्य छे, अने तेथी उल्डुं दरेक क्षणे नाश पामनारुं अनित्य छे, विगेरे
असम्यक्भावने पामे छे, पण ते एबुं विचारतो नथी, के अनंत धर्मवाली अने बधा नयना समूहथी युक्त वस्तु छे, ते मंद बुद्धिवा-
जाने ते मानबुं अति गहन होवाथी अशक्य छे, पण श्रद्धाथी मानवा योग्य छे, पण हेतुथी क्षोभायमान न थबुं, कहाँ छे के:—

सर्वैर्नयौर्नियतनैगमसंग्रहाद्यैरेकैकशो विहिततीर्थिकोशासनैर्यत् ॥

निष्ठां गतं बहुविधै गमपर्ययैस्तैः श्रद्धेयमेव वचनं न तु हेतुगम्यम् ॥ (इत्यादि)

बधा नयोवडे एरले नैगम संग्रह विगेरे अने कथा नियत एक एक अंशथी अन्य तीर्थीक शासनवालाए बतावेल जे बहु प्रका-
रना गमपर्ययोवडे संपूर्णता पामेलुं तमारुं वचन श्रद्धा करवा योग्य छे. पण त्यां हेतुथी जाणवा योग्य नथी,

जेथी विचारबुं के हेतुतो एक नयना अभिप्राय प्रमाणे वर्ते छे. तथा एक धर्मने साधे छे, पण बधा धर्मने साथे साधनारने
हेतुनो असंभव छे, (तेथी तेने शङ्का थाय छे.) (२) वळी विचित्र भावनाने बतावे छे, के कोइ मिथ्यात्मना लेशथी मुझाएलाने शङ्का
थाय के शब्द पुद्दलनो केवीरीते बने एबुं उल्डुं मानीने मिथ्यात्मना परमाणुओना उपशमणाथी पछीथी शंका विगेरे गुरुना उपदेथी
दूर थतां ते श्रद्धावालो थाय छे; के जो शब्द पुद्दलनो बनेलो न होय तो तेनो करेलो अनुग्रह अथवा उपघात कान उपर केवी रीते
थाय? कारण के आकाश माफक शब्द अमूर्त होय तो कानने काँइ पण न थाय एम समजीने सम्यक्त्व पामे छे (३) कोइने आग-

सूत्रम्

॥६१९॥

आचार
॥६२०॥

ममां रमणता न थवाथी मति अपरिणात थतां विचारे के एक समयमांज परमाणु लोकांते केवी रीते जाय एम खोदुं मानतां कोइ वखत कु हेतुना वितर्कना प्रकट अवसरे पूरेपूरो मिथ्याती बने छे, के चौदराज लोकनो एक छेडाथी बीजा छेडा सुधी जतां आ-काश प्रदेशने साथे स्पर्श न थवाथी समयनो भेद पडे, ते भेद न पडे तो वे जग्याए एक साथे स्पर्श न थाय तेथी परमाणुनुं तेटला पणुं थाय, एटले ते एबुं माने के लोकने बने छेडे रहेला प्रदेशोनो एक वखते परमाणुए स्पर्श कर्या माटे तेटलो मोटो परमाणु छे, अथवा ते बन्नेनुं छेडुं परमाणु जेटलुं छे, आ तेनुं मानबुं खोदुं छे. पण ते आग्रही बनेलो विचारतो नथी, के विस्तसा परिणामवडे शीघ्र गतिपणाथी परमाणुनुं एक समयमां असंख्येय प्रदेशनु गमन थाय छे, जेमके आंगळीना माप जेटला एक द्रव्यना असंख्यात आकाश प्रदेश छे, तेटला बधाने एक समयमां परमाणु ओळंगी जाय छे. प्र०—ए केवी रीते बने ? उ०—जे प्रत्यक्ष देखाय छे ते ना नहि पाडी शकाय, कारण के ज्यां सौने देखीतुं प्रत्यक्ष प्रमाण होय, त्यां अनुमान विगेरेनुं प्रयोजन नथी जो एक समयमां अनेक प्रदेश ओळंगवा न मानीये तो अंगुल मात्र प्रदेश ओळंगतां असंख्येय समय नीकळी जाय, तो आपणे देखेलुं इष्ट छे तेने पण बाधा आवे, माटे ते शंका नकामी छे. (४).

हवे भांगानी समाप्ति करवा परमार्थ बतावे छे.

भगवाननुं बचन साचुं छे, एबुं मानीने शङ्का विगेरे छोडीने ते वस्तु यत्न वडे तेवा रुपेज सम्यक् पूर्वे भावी होय तो पण गुरुना सद्वासथी तेमनो उपदेश विचारतां ते शिष्य श्रद्धावालो थाय छे, जेम इर्यापथमां उपयोग राखनारने कोइ वखत जीवहिंसा थाय. (तो पण तेने दोष लागतो नथी.) (५) हवे तेथी उलटुं बतावे छे, कोइ वस्तु खोटी रीते मानतां छद्मस्थ साधुने

सूत्रम्

॥६२०॥

आचारो
॥६२१॥

दुंक बुद्धिथी शंका थाय, ते समये ते वस्तु खोटी अथवा साची विचारी होय, तो तेणे खोटी विचारेली होवाथी खोटा विचारने लीधे अशुभ अशुभ अध्यवसाय होवाथी ते मिथ्यात्व छे, कारण के जेवी शंका करे तेवोज भाव मेलवे, एवुं वचन छे, (६) अथवा सम्यक् माननारने बीजी रीते खुलासो करे छे, शमिनो भाव शमिता छे ते शमिताने माननारो शुभ अध्यवसायवालो उत्तर कालमां पण उपशमवालोज रहे छे, अने बीजो तो शमिताने मानवा छतां कषायना उदयथी अशमिता थाय छे, एज प्रमाणे बीजा भांगमां सम्यक् शब्दनी योजना करवी, के सारुं विचारे तो सारुं फल मेलवे, तेज प्रमाणे सारुं नरसुं तेनो विवेक विचारतो बीजाने पण उपदेश देवाने समर्थ थाय छे, कहुं छे के, आगममां मति परिणत थवाथी यथायोग्य पदार्थनो स्वभाव वताववायी आ योग्य छे, आ अयोग्य छे, एवुं विचारतो विद्वान बीजा नहि विचारताने पण समजावे छे, एटले गाडरनां टोळा माफक एक पछी एक जेम दोडे तेम कोइ विना विचारनो शंकावालो होय, तेने कहे के हे भद्र ! तुं मध्यस्थता राखीने निर्मल भावथी विचार के जिनेश्वरनुं कहेलुं जीवादितत्व विचार युक्तिने योग्य छे के नहीं ? ते आंखो वींचीने विचार, अथवा संयने सारी रीते पालनारो होय, ते संयम सारी रीते न पालनारने कहे, के हे भद्र ! सम्यग् भाव पामीने हवे संयममां सारो रीते उद्घम कर ! शुं आंलंबीने ? उ०—पूर्वे कहेला प्रकारे ते संयममां कर्म संतति क्षय करवा रूप जे संधि छे. ते जो संयम सारो पाले तो, कर्म दूर कराय तेम छे, आ कर्म संतति तेसिवाय बीजी रीते क्षय थाय तेम नथी. वळी सारीरीते संयम पालनारने शुं लाभ थाय, ते कहे छे, ‘से’—ते सम्यक् रीते दीक्षा लेवाने तैयार थएलाने शंका रहित धर्म अद्वा होवाथी चारित्र लङ् गुरुकुल वासमां रहेवाथी अथवा गुरुनी आज्ञामां वर्त्तवाथी जे गति थाय छे, अथवा जे पदवि प्राप्त थाय छे, तेने हे शिष्यो! तमे सारी रीते जुओ! बधा लोकमां प्रशंसा, ज्ञानदर्शनमां स्थिरता चारित्रमां

सूत्रम्
॥६२१॥

आचार
॥६२२॥

निष्कंपता अने तेने श्रुत ज्ञाननी आधारता थाय छे, अथवा स्वर्ग मोक्ष विगेरेनी उत्तम गति मळे छे, तेने जुओ ! अथवा संयममां प्रयत्न (न) करनारने उपग्ना उत्तम गुणो विना पासत्था विगेरेनी गति जे बधा लोकोने हांसी रूप छे. ते अथवा अधम स्थाननी गति मळे छे. ते तमे देखो ! आ प्रमाणे संयम पालनार अने प्रमाद करनार साधुनी उंच नीच गतिने जाणीने पांच प्रकारना सारा आचारमां तमारे प्रवर्त्तन करवुं, पण जे चारित्र लेवामां प्रमाद करे तेनी नीच गति थाय तेथी शुं समजवुं, ते कहे छे, के जेओ असंयममां बाल भावमां रमेला छे, जे सुगति सकल कल्याणना आधाररूप छे, तेने न मेलबी शके, अर्थात् हे शिष्य ! तुं दीक्षा लइने बाल चेष्टा माफक कुकृत्य न करीश ! ते बाल जेवो आचार शाक्य कपिल विगेरेना मतने माननारा आचरे छे, अने बोले छे, के नित्य, अने अमूर्त आत्मा होवाथी आकाश माफक तेनो अति पातज नथी ! अथवा दृश छेदतां के बालतां आकाशनो भेद के बळवुं थतुं नथी, तेमज शरीर विकारी छे. तेने घा विगेरे थतां अविकारी आत्माने कंइ पण थतुं नथी, तेओ कहे छे के.

न जायते न म्रियते कदाचिन्नायं भूत्वा भवितेति ॥

आत्मा जन्मे नहीं, तेम मरतो पण नथी, कोइ पण दिवस आ थइने थवानो नथी ! (जेवो छे तेवोज रहेवानो छे)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः । नैवैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥१॥

जीवने शस्त्रो छेदे नहीं, अग्नि बाले नहीं, पाणी भींजावे नहीं, तेम पवन शोषण करतो नथी.

अच्छेद्योऽयमभेद्योयमविकारी स उच्यते । नित्यः सततगः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

सूत्रम्

॥६२२॥

आत्मा०

॥६२३॥

आ आत्मा अछेद्य अभेद्य अविकारी नित्य तथा हंमेशां गमन करनार स्थाणु तथा अचल अने सनातन (पुराणो) छे. (विगेरे तेमनां वचनो छे) ते प्राणीने हणवा विगेरेमां प्रवर्त्तनाराने तेना निषेध माटे कहे छे.

तुमंसि नाम सच्चेव जं हंतवंति मन्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं अज्ञावेयवंति म-
न्नसि, तुमंसि नाम सच्चेव जं परियावेयवंति मन्नसि, एवं जं परिघित्तवंति मन्नसि,
जं उद्वेयंति मन्नसि, अंजू चेयपडिबुद्धजीवी, तम्हा न हंता नवि धायए, अणुसंवेय-
णमप्पाणेण जं हंतवं नाभिपत्थए (सू० १६४)

तमे जे आत्माने हणवा पणे विचार्यो ते तुंज छे, (नाम शब्द संभावना माटे छे,) जेम तमे माथुं हाथ पग पासां पीठ पेट-
वाळा छो, तेम आ पण छे. के जेने तमे हणवा योग्य मानो छो, जेम तमने कोइ मारवा आवे तो ते देखीने तमने दुःख थाय छे,
तेवी रीते बधाने छे, तेने दुःख उत्पन्न करवाथी पाप बंधाय छे, तेनो भावार्थ आ छे, के अदीर्यां अंतर आत्मा जे आकाश जेवो
छे तेनी हिंसा मारवा वडे नथी पण शरीर आत्मानी हिंसा छे, कारण के ज्यां कंइ पण आधार रूप पोतानुं शरीर छे, तेने सर्वथा
दूर करबुं तेज हिंसा छे, एवुं जैनो माने छे. कहुं छे केः—

पंचेन्द्रियाणि त्रिविधं बल च, उच्छ्रवासनिःश्वासमथान्यदायुः ॥

सूत्रम्

॥६२३॥

आचा० ॥६२४॥

प्राणा दशैते भगवद्विरुक्तास्तेषां वियोजी करणं तु हिंसा ॥ १ ॥

पांच इन्द्रियो त्रण बळ श्वासोश्वास, अने आयु ए दश प्राण भगवाने कहेला छे. तेनो वियोग करवो ते हिंसा छे.

बळी संसारमां रहेला जीवने सर्वथा अमूर्तपणुं न घटे. के आकाशनी माफक जेनावडे विकार न थाय, तथा बधी जग्याए प्राणीने दुःख देतां पहेलां आत्मानी तुलना विचारवी, एवुं जोडेना सूत्रथी बतावे छे. तुं पण तेज छे. के तने आज्ञा करवामां आवे ते माने छे. तथा बीजा जीवने परितापवा. एवुं माने छे. तेज प्रमाणे जेने ग्रहण करवा, ते तुं माने छे. जेने दुःख देवुं ते पण तुं माने छे. पण जेवुं तने विरुद्ध थतां दुःख थाय तेम बीजाने पण जाणवुं. अथवा जे कायने तु हणवानो विचार करे छे. त्यां अनेकवार तुं हतो. आ प्रमाणे जुठ विगेरेमां पण समजवुं के. बीजो जुदुं बोली तने ठगेतो तने न गमे, तेय तुं जुदुं बोले तो बीजाने न गमे, जो हणानारो तथा हणनारो बन्नेने उपर कहा प्रमाणे एकता थाय तो शुं? ते कहे छे.

‘अञ्जु’ रुजु प्रगुण तेज छे के, जे धातक अने हंतव्यना एकपणाना बोधने माने (पोताना जीव माफक सर्वे जीवोने माने) तेज प्रतिबुद्धजीवी साधुज पोते परिज्ञानवडे जीवे छे, पण जीवनी हिंसा करनारो पोताना समान बीजाने न माननारो जीवतो नथी. जो एम छे, तो शुं करवुं? ते कहे छे. हणनारा जीवने पोतानी माफक मोहुं दुःख थाय छे, माटे पोतानी उपमाथी बीजानी हिंसा न करवी, न बीजा पासे मराववा, हणनाराने अनुमोदवा नहि, बळी संवेदन ते अनुभव छे. के जे बीजा जीवोने ‘मोहना उद्यथी हणवा विगेरेथी दुःख दे छे, ते पोते पछवाडे दुःख भोगवे छे, एवुं जाणीने कोइने पण हणवो नहि, प्र०—आत्माथी अनुभव

सूत्रम्

॥६२४॥

आचार्य
॥६२५॥

सता के असातारूप छे, ते वातने नैयायिक तथा वैशेषिक मतवाला आत्माथी भिन्न गुण भूत संवेदननुं एकार्थपणुं समवायिज्ञान वडे माने छे, तेबुं तमे मानो छो, के आत्मा सथे एकपणे मानो छो? तेनो उत्तर मूत्रकार आपे छे,

जे आया से विज्ञाया, जे विज्ञाया से आया, जेण वियाणइ से अया, तं पदुच्च पडि-
संखाए, एस आयावाई समियाए परियाए वियाहिए त्तिवेमि (सू० १६५) ॥ ५-५ ॥

जे आत्मा नित्य उपयोग लक्षणवालो छे. तेज विज्ञाता छे, पण ते आत्माथी पदार्थनो अनुभव करावनार ज्ञान जुदुं नथी अने जे विज्ञाता छे, ते पदार्थनो परिछेदक उपयोग ते पण आ आत्माज छे. कारण के जीवनुं लक्षण उपयोग छे अने उपयोग ते ज्ञान-स्वरूप छे, ज्ञान अने आत्माने अभेदपणे मानवाथी बौद्धमतने अनुकूल ज्ञानज एकलुं सिद्ध थशे, एम तमने शंका थाय तो जैनाचार्य कहे छे, के तेम नथी, भेदनो अभाव फक्त अमे अहीं बताव्यो, पण एकता कही नथी, जो एम मानता हो के ज्यां भेदनो अभाव तेज ऐक्यता छे, तो ते मानबुं फक्त वार्तामात्र छे; कारण के 'धोलुं वस्त्र' तेमां धोलुं तथा पट ए बन्नेमां भेदनो अभाव होवाछतां एकतानी प्राप्ति नथी, एमां पण शुक्ल पणाना व्यतिरेकवडे बीजो कोइपण पट [वस्त्र] नथी, एम मानो तो ते अशिक्षित (मुर्ख) नो उल्लाप छे, कारण के तमारा कहेवा प्रमाणे मानतां शुक्ल (धोला) गुणनो अभाव थतां सर्वथा पटनो अभाव थवा जशे.

वादी—त्यारे एम मानतां आत्मा विनष्ट थयो?

जैनाचार्य—थवा दो! अपारी किं हानि नथी, कारण के अनंत धर्मवाली वस्तुनो अपर (बीजो) मृदु विगेरे धर्मनो सङ्घाव

सूत्रम्
॥६२५॥

आचा०
॥६२६॥

छे, तेनो नाश थायतो पण अविनष्ट (कायम) ज छे, एज प्रमाणे आत्मानो पण प्रत्युत्पन्न ज्ञान आत्मकपणाथी विनाश थवा छतां बीजो अमूर्तत्व असंख्य प्रदेशपणुं अगुरुलघु विगेरे धर्मेना सद्भावथी आत्मानो अविनाशज छे ! आटलुंज बस छे ! (जैनमत प्रमाणे मूळ वस्तु द्रव्य पणे कायम रहे छे. अने फक्त पर्यायोनोज नाश अने उत्पत्ति छे. तेथी पर्याय नाश थवा छतां मूळ द्रव्य वस्तु तो कायमज रहे छे.)

शंका—जे आत्मा ते जाणनारो, एम तृप्रत्ययवाळो कर्त्ताना अभिधानथी अने आत्माना कर्त्तव्यपणाथी एम थवुं के जे आत्मा तेज विज्ञाता एम अहीं विपत्ति पत्तिनो अभाव थयो, के जेना वडे आ जाणे छे, ते भिन्न पण होय. जेमके ते करण अथवा क्रिया थशे? जो करण मानीए तो दातरडा माफक भिन्न पदार्थ थशे, अने जो क्रिया मानीए तो कर्त्तामां रहेली संभवे छे, एम कर्ममां रहेली पण संभवे छे, आ प्रमाणे भेदना संभवमां क्यांथी ऐक्यता होय? जैनाचार्य शिष्यने कहे छे, के तेवाने खुल्लुं कहेवुं जे मति विगेरे ज्ञान रूप करणवडे अथवा क्रियावडे सामन्य विशेष आकारपणे जे कोइ (जीव) वस्तुने जाणे छे ते आत्मा छे. अने ते आत्माथी भिन्न ज्ञान नथी; तेम करणपणे भेद नथी, एकने कर्म करणना भेदवडे उपलब्धि थाय छे, जेमके देवदत्त आत्माने आत्मावडे जाणे छे, क्रियाना पक्षमां पक्षसंबंधी अभेद छे एवुं तमे पण स्वीकार्यु छेज, वक्ती

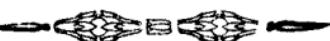
भूतियेषां क्रिया सैव, कारकं सैव चोच्यते

जेमां भूति (थवापणु) छे तेज क्रिया छे, अने तेज कारक छे, आ वचन विगेरेथी एकपणुंज छे,

सूत्रम
॥६२६॥

आचार्य
॥६२७॥

ज्ञान अने आत्मानुं एकपण्यं मानतां शुं थाय ? ते कहे छे
 ते ज्ञान परिणामने आश्रयी आत्मा ते नामेज व्यपदेश कराय छे, जेमके इन्द्रिधी उपयुक्त होय ते इन्द्र कहेवाय, अथवा मति-
 ज्ञानीश्रुत ज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी छे. अने जे ज्ञान आत्मानुं एकपण्यं स्वीकारे छे, तेने शुं गुण थाय, ते कहे
 छे. उपर बतावेली नीतिए यथावस्थित आत्मवादी थाय, अने तेना सम्यग् भावबडे अथवा शमिता (उपशमणा) बडे पर्यायरूप छे,
 एटले तेज संयम अनुष्टानरूप प्रसिद्ध छे, (इति शब्द समाप्ति माटे छे) लोकसार अध्ययनमां पांचमो उद्देशो पूरो थयो.



छटो उद्देशो.

पांचमो उद्देशो कहो हवे छटो कहे छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशामां कहुं के आचार्ये निर्मल हृद (कुण्ड) जेवा
 थवुं, तेवा उत्तम आचार्यना संसर्गथी शिष्यने कुमार्गनो परित्याग थाय. तेथी रागद्वेषनी अवश्ये हानि थाय, माटे आ प्रतिपादन
 [सिद्ध] करवाना संबन्धबडे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे,

अणाणाए एगे सोवट्टाणा आणाए एगे निरुवट्टाणा, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स

दंसणं तद्विट्टीए तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तसन्नी तन्निवेसणे (सू० १६६)

अहींआं तीर्थकर गणधर विग्रेनो उपदेश माननार होय, तेने विनेय [शिष्य] कहेल छे, अथवा सर्व भावना संभावितपणाथी

सूत्रम्

॥६२७॥

आचार

॥६२८॥

सापान्यथी अभिधान छे, अनाज्ञा एटले भगवानना उपदेश विना पोतानी मेले आचरे, ते अनाचार छे, ते अनाचारमां प्रवर्तेला केटलाक इन्द्रियोने वश थएला अने दुर्गतिमां जवानी इच्छाथी पोताना मतना अभिमान ग्रहथी वंधायला [कदाग्रही]छे, तथा उपस्थान ते बनावटी तेमनुं धर्मचरण छे, तेमां उद्यम ‘करनारा’ ते सोपस्थानवाळा छे, तेओ बोले छे, के ‘अपे पण प्रवर्जित छीए’ छतां सारा धर्मना विवेकथी रहित बनीने सावद्य आरंभमां वर्ते छे. तेम केटलाक कुमार्गनी वासनावाळा (मिथ्यात्वी) नथी, पण आळस निंदा स्तंभ [मान] विभेरे (१३ काठिया) थी बुद्धि हणातां तीर्थकरना कहेला सदाचारमां निरूपस्थानवाळा(सारा धर्मानुस्थान रहित) छे. एटले मिथ्यात्वी चारित्रना नामे अनाचार करे, अने सम्यक्त्वी जीवो प्रमादथी संयम पालवामां खेद पामे छे. ते बन्नेने दुर्गति पलवानी छे, तेबुं जाणीने गुरु कहे छे हे शिष्य ! तने तेवी दुर्गति न थाओ ! [माटे सम्यक्त्व धारण करीने प्रमाद छोडी पुरो संयम पाळ !] आबुं सुधर्मास्वामी पोतानी बुद्धिथी नथी कहेता, ते कहे छे, ‘एतद’ उपर कहेलुं (जिनेवरनुं छे) अथवा आज्ञा रहित निरूपस्थानपणुं छे, अने आज्ञा पालनमां सोपस्थानपणुं (चारित्र) छे, आबुं तीर्थकरनुं दर्शन (मंतव्य) छे.

अथवा हवे पछी जे उपदेश कहे छे, ते तीर्थकरनुं दर्शन छे, के कुमार्ग छोडीने हमेशां आचार्यनी सेवा करनारा थबुं ते आचार्यनी दृष्टिमां रहेबुं ते ‘तदृष्टि’ छे, एटले तीर्थकरे कहेला आगममां दृष्टि राखनारो छे; तथा ते आचार्य अथवा तीर्थङ्करनी आज्ञा पालनारनी मुक्ति थाय छे, ते ‘तन्मुक्ति’ छे, तथा ते साधु आचार्यने बधां क्षर्यमां आगळ करे तेथी पुरस्कार छे अर्थात् आचार्यनी अनुमतिथी कार्य करनारो छे, तत्संज्ञी, ते तेमना ज्ञानथी उपयुक्त छे, तथा ‘तन्निवेशन’ एटले ते सदा गुरुकुल निवासी छे, तेवाने शुं गुण थाय ते कहे छे.

सूत्रम्

॥६२८॥

आचार्य

॥६२९॥

**अभिभूय अदक्खू अणभिभूए पभू निरालंबणयाए जे महं अबहिमणे, पवाएण पवायं
जाणिज्ञा, सह संमइयाए परवागरणेण अन्नेसिं वा अंतिए सुच्चा (सू० १६१९)**

परिषिहो तथा उपसर्गेने जीतीने अथवा धाति चतुष्टयने जीतीने तत्वने जोयुं, तथा अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग आवतां अथवा अन्य तीर्थिकोथी पोते हार्यो नहीं; एवो समर्थ (पभु) निरालंबनताने धारण करे; पण ते आ संसारमां मातापिता, स्त्री विगेरेनुं अवलंबन न चाहे; तथा तीर्थकरनी आङ्गा बहार वर्तवामां नरक विगेरेमां जवानुं छे. एवुं भाववामां समर्थ थाय; प्र०—पण क्यो पुरुष परिषह उपसर्गने जीतनारो छे ? तथा कोइथी पण, न हारीने निरालंबनपणुं लेवामां समर्थ थाय ? आवुं शिष्य पूछे तो तीर्थ-कर, सुधर्मास्वामी अथवा आचार्य तेने कहे छे:—

उ०—जेणे मोक्षने लक्ष्यमां राख्यो छे, ते महापुरुष लघुकर्मवालो मारा उपदेशथी बहार न होय. माटे अबहिर्मन (स्थिरचित्तवालो) छे, ते सर्वज्ञना उपदेश प्रमाणे चाले.

प्र०—पण, तेना उपदेशनो निश्चय केवी रीते थाय ? के, आ जिनेश्वरनो छे ?

उ०—प्रकृष्टवाद ते, प्रवाद छे. आचार्यनी परंपराए चालेलो; तेने सर्वज्ञना उपदेश तरीके जाणीले अथवा अन्य मतवालानी अणिमादि आठ प्रकारनी लब्धि (ऐश्वर्य) देखीने पण तीर्थङ्करना भचनथी बहार मन न करे, पण तेवाओने इन्द्र जाळीया जेवा ठगनारा जाणीने तेमनुं अनुष्टान तथा तेमना वादो (वचननो) ने विचारे (परिक्षा करे)

सूत्रम्

॥६२९॥

आचारा०
॥६३०॥

प्र०—केवी रीते ? उ०—“पवाण यवायं जाणिज्ञा” प्रकृष्टवाद ते प्रवादु ‘सर्वज्ञ वाक्य’ छे, ते प्रवादवडे बीजा तीर्थिकोना प्रवादनी परिक्षा करे, जेमके वैशेषिको तेनु सुखन विगेरे कानारने इश्वर माने छे, कहे छे के :—

अन्यो जंतुरनीशः स्यादात्मनः सुखदुःखयोः । ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् स्वर्ग वा श्वभ्रमेव च । १॥

बीजो जीव पोतानुं सुख दुःख भोगवां असमर्थ छे, पण इश्वरनी प्रेरणा थतां ते स्वर्गे अथवा नरकमां जाय छे.

आवा प्रवादोने जिनेश्वरना प्रवादवडे विचारवा जेमके आकाशमां इन्द्र धनुष्य विगेरे विस्त्रसा परिणामे परिणीने पोताने रुपे बनेलां छे, तेनो बनावनार जुदो इश्वर विगेरे कारणनी कल्पना करवामां अति प्रसंग आवशे, तथा घटपट विगेरेमां दंड चक्र चीवर (कपड़) पाणी कुंभार तुरी वेम शंलाका कुविद विगेरेना व्यापारथी आंतरा विना मळता आत्मलाभवाळाने मुकी तेने बदले नहीं देखाता एवा इश्वरथी पदार्थी बने छे एवी कल्पना करतां रासभ (गधेडा)ने पण कर्ता कां न गणवो ?

वादीनो उत्तर—तनुकरण विगेरेमां पण पोतानुं करेलुं कृत्य अने तेथी बन्धाएलुं कर्म तेना विना अवंध्य छे. पण पोताना कर्मनी विचित्रता छे. कर्मनी उपलब्धि सिवाय आवुं क्यांथी होय ? जैनाचार्य कहे छे, जो तमे एम मानो तो बन्नेमां ते समान कथन छे, वळी कारणरूप माता पिता एक छतां अपत्यानी विचित्रता देखवाथी अधिक निमित्तवडे भाववुं, अने ते इश्वरनो स्वीकार करवा करतां अटृष्ट (नशीव) नेज इच्छावुं सारुं छे ? कारण के तेना विना सुख दुःख सुभग दुर्भग विगेरे जगत्नी विचित्रता न होय ! हवे सांख्य मतवाळा कहे छे.

सूत्रम्

॥६३०॥

आचार्य

॥६३१॥

सत्त्व, रज, तपः ए वधांनी साम्यअवस्था प्रकृति छे. प्रकृतिशी महान्, तेथी अहंकार, तेथी अग्यार इन्द्रियो, तेथी पांच तन्मात्र, तेथी पंचभूत, अने तेथी बुद्धि, ए विचारेल अर्थने पुरुष (आत्मा) जाणे छे. पण, ते पोते अकर्ता, अने निर्गुण छे. ते प्रमाणे प्रकृति करे छे, अने पुरुष भोगदे छे. त्यारपछी, कैवल्य अवस्थामां हुं दृष्टा छुं. एवुं निवर्त (दूर थाय) छे. विगेरे तेमनुं मानवुं युक्ति विकल्प होवाथी तेमना आंतरा विनाना मित्रोज मानवे, कारणके, प्रकृति अचेतन होवाथी केवीरीते आत्माना उपकार माटे क्रियानी प्रवृत्ति करशे? अने हुं दुःख देनारो छुं. एवुं आत्मा देखीने पोताना उपकारनी प्रवृत्ति पोते न करे? कारणके' प्रकृति अचेतन होवाथी तेने विकल्प थवानो संभवज नथी; अने प्रकृति जो, नित्य होय; तो, प्रवृत्तिनी निवृत्तिना अभाव थइ जाय; अने पुरुषनुं कर्तापणुं न होय; तो, संसारथी उद्घेग, अने मोक्षनी उत्कंडा विगेरेनो अभाव थशे. कहुं छे के:—

न विरक्तो न निर्विषणो, न भीतो भववंधनात् । न मोक्षसुखकांक्षी वा, पुरुषो निष्क्रयात्मकः ॥१॥

ते विरक्त नथी; खेद पामेलो पण नथी; तेम, भववंधनथी डरेलो नथी; अथवा, मोक्ष-सुखनो आकंक्षी नथी. एवा गुणवान्नो क्रियारहित पुरुष छे. तेनो उत्तर जैनाचार्य कहे छे:—

कः प्रव्रजति सांख्यानां, निष्क्रिये क्षेत्रभोक्तरि । निष्क्रियत्वात् कथं वाऽस्य, क्षेत्रभोक्तृत्वमिष्यते ॥

आत्मानिष्क्रिय छे. त्यारे, सांख्यमतमां दीक्षा कोण ले छे? तथा क्षेत्र भोगवामां निष्क्रियपणाथी तेनुं क्षेत्र भोगवत्वुं केवीरीते इच्छे छे? बौद्धमतवाला बधु क्षणिक माने छे. तेनो उत्तरः—

सूत्रम्

॥६३१॥

आचारा०
॥६३२॥

जो, अन्वय रहित विनाश थाय; तो प्रतिनियतकार्य कारणभाव सिद्ध न थाय; पण एक संतान परंपराथी सिद्ध थाय छे. तेवुं तमारुं कहेवुं भण्या विनाना जेवुं छे ! कारणके संतानवाळाना व्यतिरेक (अभावथी) कोइपण संतान नथी, अने संताननुं मूळ पूर्व काळमां रहेवा पणुं छे, तेज कारण होय तो वधुं ए वधांनुं कारण थशे, कारण के वधाने पूर्व काळमां रहेवापणुं छे, तेथी तमारुं कहेवुं माल विनानुं छे, वळी.

यज्ञातमात्रमेव, प्रध्वस्तं तस्य का क्रिया कुंभे? । नोत्पन्नमात्रभग्ने क्षिप्तं सन्नितष्ठते वारि ॥१॥

जो घडो बनवा वखतेज नाश पामेतो ते घडामां शुं क्रिया थइ? अने उत्पन्न थतांज घडो भांगेतो तेमां नांखेलुं पणी रही शके नहिः

कर्त्तरि जातविनष्टे धर्माधर्मक्रिया न संभवति । तदभावे वंधः को बन्धाभावे च को मोक्षः? ॥२॥

धर्म पाप करनारो तुर्त नाश पामे, तो धर्म अने अधर्मनी क्रिया संभवे नहि, अने धर्म अधर्मना अभावमां पुण्य पापनो बंध न होय, अने ते बंधना अभावमां मोक्ष कोनो थाय ?

बृहस्पिति (चार्वाक) मतवाळा फक्त पांच भूतोने मानता होवाथी जीव पुण्य पाप परलोकनो तेमने अभाव थतां निर्मर्यादापणे अमानुषी कृत्य करनाराने तिरस्कार पदयुक्त कृत्यवाळाने उत्तर न आपवो, तेज उत्तर छे [तेमनी जोडे वात करवी अयोग्यछे]वळी.

अब्रह्यचर्यरक्मूढैः परदारघर्षणाभिरतैः । मायेन्द्रजालविषववत्प्रवर्त्तितमसत्किमप्येतत् ॥१॥

दुराचारमां रक्त अने परखी आलिंगनमां मूळ बनेला इंद्रजालना जुठा पदार्थ माफक आ लोकोए एवुं असत् मंतव्य फेलाव्युं छे? वळी.

सूत्रम
॥६३२॥

आषाढ

1163311

भवोनुं दुःख आपनारी माता समान जेमनुं मिथ्यादर्शन छे, अने जे धर्मने नामे अधर्म फेलाईयो छे, तेवाने पृथिविमां बीजो क्यो अधर्म हशे ?

आ प्रमाणे वधा तीर्थीना वादमां जिनेश्वरना मतने अनुसरीने विचारी असत्यने दूर करवुं; अने ते सर्वज्ञनुं वचन तथा कुमार्गनुं बरोबर निराकरण करीने तीर्थीकोना प्रवादोने आ बतावेला त्रण प्रकारवडे जाणे. (१) मनम करवुं ते मति छे, अने ज्ञानआवरणीयकर्मना क्षय उपशमथी कोइपण ज्ञान थाय; ते ज्ञानज छे, तेथी एकदम तेज क्षणे मनना कारणे मतिश्रुत अवधि के, बीजां ज्ञानवडे (निर्मलता थतां) पोते बीजा वादोनी परीक्षा करे; अथवा ज्ञानवडे जोवायोग्य तेमने शोभनिक तथा, मिथ्यात्व कलंकरहित निर्मलमति (बुद्धिवडे) वधा वादोना स्वरूपने जाणे, कारणके, स्व, अने परनुं सत्यपणुं बतावनार मति छे. कोइ वखतपर [तीर्थकरना] उपदेशथी जाणे; अथवा तेमनुं कहेल आगम भणीने तेनावडे जाणे; अथवा तेथी न समजाय; तो, बीजा आचार्य विगेरे पासे सांभळीने यथावस्थित वस्तुना सङ्घावने जाणे; अने जाणीने शुं करे ? ते कहे छेः—

निहेसं नाइवद्वेजा मेहावी सुपडिलेहिया सबओ सबप्पणा सम्मं समभण्णाय, इह
आरामो परिवृए निद्वियद्वी वीरे आगमेण सया परक्कमे (सू० १६८)

सूत्रम्

1163311

आचार्य

॥६३४॥

(निर्देश कराय ते) निर्देश एटले, जिनेश्वर विगेरेनो जे उपदेश (साधुना हित माटे) छे, तेनुं मर्यादामां रहेल मेधावीसाधु उल्लंघन न करे. शुं करीने ? ते कहे छे :—
सारीरीते विचारीने के, आ त्यागवाजोग अन्य मतो छे, अने आ ग्रहण करवायोग्य तीर्थकरनां वचन छे, तेने पोते बधा प्रकारोथी एटले, द्रव्यक्षेत्र काळभाव—रूपे तथा सामान्य विशेषरूपे—बधा पदार्थेने उत्तम मति विगेरे त्रण ज्ञान थी विचारीने हमेशां आचार्यनी आज्ञा पालन करनारो बनी बधां दर्शनोनुं निराकरण करे.

प्र०—शुं करीने ? ते कहे छे :—बधा मतोनुं तत्त्व सारीरीते जाणीने, विचार करी निराकरण करे. वळी, आ मनुष्यलोकमां संयममां रति करे; कारणके, परमार्थी विचारतां एकांत अत्यंत रति (आनंद) संयममां छे, ते संयमने पूरो पाल्वानी परिज्ञावडे जाणीने तेमां लीन रही इन्द्रियोनी उन्मत्तता रोकीने संयम—अनुष्ठानमां रक्त रहेकुं. ‘किभूत’ विगेरे. अहीं निष्ठित ते मोक्ष छे, तेनो अर्थी बन, अथवा निष्ठित ते पूरो. अने अर्थ ते, प्रयोजनबाळो वीर ते कर्मने विदारण करवामां तैयार बनीने सर्वज्ञे बतावेला आचार विगेरेमां सर्वकाळ यत्न करीने कर्मरिपुने जीत अथवा, मोक्षमार्गमां गमन कर.

आ प्रमाणे मुधर्मास्वामी कहे छे. आवो उपदेश वारंवार शामाटे करे छे ? तेनुं कारण कहे छे :—

उड्हं सोया अहे सोया, तिरियं सोया वियाहिया । एए सोया विअवखाया, जेहिं संगंति पासह ॥१॥

श्रोतो एटले, कर्म आववानां आस्ववद्वारो छे, ते दरेक भवना अभ्यासथी विषयोना अनुबंध विगेरेथी जीवकर्म पुद्गलोने लीधांज

सूत्रम्

॥६३४॥

आचा०

॥६३५॥

करे छे, तेथी उंचे श्रोत ते वैमानिक देवीनां अभिलाशनी इच्छा, अथवा वैमानिक देवना सुखनुं नियाणुं करवुं; के, मने तेबुं मळो. अधो (नीचे) भवनपतिना देवोना सुखनो अभिलाष, अने तिर्यक्लोकमां व्यंतर तथा मनुष्य तथा तिर्यचना विषयोनी इच्छा थाय छे, ते श्रोतो छे, अथवा प्रज्ञापकना आश्रयथी उंचे ते पहाडनां शिखरो तथा मोटां मेदान होय; अथवा मोटा धोव पडता होय. नीचे नारकी तथा नदीना किनारानी उंडी गुफाओनां स्थान तथा तिर्यक्लोकमां आराम सभा विगेरे जीवोने उपभोगनां स्थानो छे, ते बनावटी के स्वभाविक बने छे अथवा कर्म परिणतिना कारणे मळेलां छे, ए बधां (रमणिक अरमणिक) स्थानो कर्मना आसूबद्धारो होवाथी श्रोतनी घाफक श्रोतो छे, आ त्रणे प्रकारोवडे तथा बीजां पापोनां उपादानना हेतुवडे प्राणीओनी थती आसक्तिने अथवा कर्मना अनुसंगने जो, ते कर्मना अनुसंगना कारणथीज ए श्रोतो छे. एम कहे कहे छे, माटे तुं सदा जैनागम प्रमाणे उद्यम कर.

आवृं तु पेहाए इत्थ विरमिज वेयवी, विणइत्तु सोयं निकखम्म एसमहं अकम्मा

जाणइ पासइ पडिलेहाए नावकंखइ इह आगइं गइं परिन्नाय (सू० १६९)

राग द्वेष कषाय अने विषयरूप जे आवर्त्त छे, ते अथवा कर्म बन्धनो जे भाव आवर्त्त छे, तेने जोइने तुं विषयरूप भाव आवर्त्तने वेद (आगम)ने जाणनारो बनीने तेनाथी विरम, अर्थात् आसूबद्धारनो अटकाव कर, बीजी प्रतिमां “विवेगं किंदृइ वेदवी” पाठ छे. एटले आसूबद्धारने अटकावी तेनाथी थता कर्म बन्धनो वेदविद् माणस अभाव करे? आसूबद्धारना निरोधथी शुं थाय? ते कहे छे, आसूबद्धारने दूर करवा दीक्षा लइने प्रयास करे, तेज आ प्रत्यक्ष प्रयोजन छे. अने ते आपणी चालु वातमां मुख्य छे. तेथी

सूत्रम्

॥६३५॥

आचारो
॥६३६॥

‘आ’ सर्वनाम वांची शब्दथी सूचव्युं, के जे कोइ महा पुरुष अतिशयवालां (उत्तम संयमनां) कृत्य करीने केवो थाय ? ते कहे छे—
अकर्मा एटले घाति कर्म रहित बने, (कर्मनो अर्थ घाति कर्म लीघेल छे) आ घाति कर्म दूर थवाथी ते विशेषर्थी जाणे, तथा सामा-
न्यथी देखे छे, तथा बधी लब्धिओ तेने थाय छे, एथी ते पूर्वे जाणे छे, अने पछी देखे छे. आथी क्रमनो उपयोग बताव्यो छे;
ते प्रमाणे तेने दिव्य (केवळ) ज्ञान उत्पन्न थवाथी त्रण लोकमां माथाना मुकुटना मणि समान (माननीय) तथा सुरासुर नरेन्द्रथी
पूज्य बने छे, तथा संसार समुद्रना किनारे पहोंचनारो संपूर्ण जाणेल बनी ते पोते शुं करे ? ते कहे छे, ते जाणवानुं जाणेला सुर
असुर तथा माणसोथी थती पूजाने अनुभवीने पण तेने कृत्रिम अनित्य असार सोपाधिक [इन्द्रजाळ जेवी] मानीने इन्द्रियोना वि-
षयोने जीतवाथी उत्पन्न थएल सुखनी निस्पृहताथी तेवी इन्द्रादिनी पूजाने पण तेओ इच्छतानथी, वळी आ मनुष्यलोकमां रहा
छतां केवळ ज्ञानथी जीवोनी आगति संसार भ्रमण तथा तेनां कारणोने ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे संसार भ्रमण
दूर करेछे, तेना निराकरणथी शुं थाय ? ते कहे छे.

अच्चेइ जाईमरणस्स वट्टमगं विक्खायरए, सबे सरा नियट्टन्ति, तक्का ज्ञत्थ न वि-
ज्ञइ, मई तत्थ न गाहिया, ओए, अप्पइट्टाणस्स खेयन्ने, से न दीहे न हस्से न
वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमंडले न किणहे न नीले न लोहिए न हालिहे न सु-
विक्लेने सुरभिगंधे न दुरभिगंधे न तित्तेन कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न

सूत्रम्

॥६३६॥

आचार

੧੯੩੭

कक्खडे न मउए न गरुए न लहुए न उण्हे न निञ्चे न लुक्खे न काऊ न रुहे न संगे न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा परिन्ने सन्ने उवमा न विजए, अरूपी सत्ता, अ-पयस्स पयं नत्थि, (सू० १९०)

जाति (जन्म) अने मरणना मार्गना उपादान कारणरूप कर्मने ते केवळी साधु उलंघे छे, अर्थात् बधां कर्मानो क्षय करे छे, अने कर्म क्षय थवाथी शुं गुण थाय छे, ते कहे छे, विविध प्रकारे प्रधान पुरुषार्थपणे रचेलां शास्त्रोना विषयथी तप अने संयम अ-नुष्टाननो विषय अंते मोक्ष आपनार कहो छे, ते मोक्ष बधा कर्मना क्षयरूप छे, अथवा जे स्थानमां मोक्षना जीवो [सिद्ध भवंगतो] रहेला छे, ते स्थान जे आकाश प्रदेशमां रहेल छे, तेमां पोते रत छे. (मूत्रमां व्याख्यातनो अर्थ मोक्ष लीधो छे) अने त्यां पोते अत्यंत एकांत बाधा रहित सुखबाला छे, अने क्षायिक ज्ञान दर्शनरूप संपदाथी युक्त बनेला अनंत काळ रहेवाना छे—(नमुत्युणंमां सिव मयल मरुय मणंत प्रकर्खेय मध्वा बाह मपुणराविति सिद्धि गड नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं नो अर्थ विचारवो.)

प्र०—त्यां केवी रीते रहेला छे? ते कहे छे त्यां शब्दोनी प्रवृत्ति नथी, अर्थात् शब्दोथी कहेवाय एवी त्यां कोइ पण अवस्था नथी, ते बतावे छे, ‘सच्चे’ संपूर्ण स्वरो ते अध्ययन (भणवानुं भणाववानुं) जेम अहीं छे, तेम त्यां वाच्य वाचक संबन्धमां उच्चारण पण नथी, कारण के शब्दो तो रूप रस गंध अने स्पर्श समजाववामां कोइ पण कारणे संकेत काळमां ग्रहण कर्या होय, त्यारे अथवा तेनी तुलनामां प्रवर्ते छे, पण त्यां सिद्धोने शब्द विगेरेनी प्रवृत्ति नथी. एथीज मोक्ष अवस्था शब्दोथी कहेवाय तेम नथी; फक्त

सूत्रम्

॥६३७॥

आचार
॥६३८॥

शब्दथी कहेवाय तेम नथी, एम नहीं पण उत्पेक्षणीय पण नथी ते पण बतावे छे,

ज्यां पदार्थनो संबन्ध होय त्यां तेना अध्यवसायना अस्तित्वमां उह तर्के थाय, पण ज्यां ते नथी त्यां शब्दोनी प्रवृत्ति केवी रीते थाय ? प्र०—शा माटे त्यां तर्कनो अभाव छे ? ते कहे छे—‘मनन’ करबुं ते मति छे अर्थात् ते मननो व्यापार छे. अने पदार्थनी चिंता [विचार] नी चार प्रकारनी औत्पादिका विगेरे बुद्धि छे. त्यां तेनो ग्राहक नथी. (प्रयोजन नथी) कारण ते मोक्ष अवस्थामां बधा विकल्पोनो अभाव छे, [त्यां विकल्प थइ शकतो नथी] त्यां मोक्षमां जे जीवो जाय तेओने कोइ पण जातना कर्मेनो अंश छे के अथवा अकर्म बनीने जाय छे, ? तेनो उत्तर—कर्म सहित जे जीवो छे तेमनुं त्यां गमन नथी, एबुं बतावे छे. ‘ओजः’ एकलोज अर्थात् संपूर्ण मलरूप कलंकथी रहित त्यां सिद्ध भगवंत छे, वक्ती तेमने औदारिक शरीर विगेरेनुं अथवा कर्मनुं प्रतिष्ठान नथी, माटे तेओ अप्रतिष्ठान छे. एटले मोक्ष अप्रतिष्ठान छे, ते मोक्षने जाणवामां ‘खेदज्ञ’ (निपुण) छे. अथवा अप्रतिष्ठान नामनो नरक छे. त्यां तेमने लोकनाडी पर्यंतनुं परिज्ञान छे, तेना आवेदनबडे बधा लोकनी खेदज्ञता बतावेली छे [सर्वे जीवोनुं तेओ दुःख सुख जाणे छे] सर्व स्वरनुं निवर्तन जे अभिप्रायबडे कहुं छे ते अभिप्रायने हवे प्रकट करे छे. ते परमपदनो अभ्यासी लोकांते कोशना छट्ठा भागे ($\frac{1}{4}$ कोश) जे क्षेत्र छे, तेमां रहेल छे, तेमने अनंत ज्ञान तथा दर्शन छे, ते संस्थाने आश्रयी पोते दीर्घ न थाय, न हृस्व थाय, न गोलाकारे न त्रिकोण, न चतुष्कोण, न गोला जेवो, तेमज वर्णरहित ते काळो नीलो लोहित (लाल) हारिद्र (पीळो) धोळो कोइपण जातनो रंग तेमने नथी, तेम सुरभि के दुरभि गंधनथी, तेम तीखो कडवो कषायलो खाटो मधुर रस नथी, तेमज कर्कश [खरबचडो] मृदु गुरु शीत उष्ण स्निग्ध लूखो कोइपण जातनो स्पर्श नथी, तथा उष्ण शब्दथी कापोत विगेरे लेश्यापण नथी,

सूत्रम्

॥६३८॥

आचा०

॥६३९॥

अथवा कायवाळो नथी, एटले जेम वेदतांवादी कहे छे के, एकज मुक्त आत्मा तेनी कायमां बीजा क्षीण कलेशवाळा प्रवेश करे छे, सूर्यनां किरणो सूर्यमां समाइ जाय छे, (तेम इश्वरमां वधुं समाइ जाय छे,) तेम जैनमां सिद्धनुं स्वरूप नथी.

बळी न रुह (एटले बीज अने जन्मना अर्थमां रुह शब्द वपराय छे) एटले कर्म बीजना अभावथी फरीथी तेमने जन्म नथी. पण जेम बौद्धयतवाळा माने छे के पोताना दर्शननुं अपमान थवाथी ते मुक्त परमात्मा पण जन्म ले छे.

दग्धेन्धनः पुन रूपैति भवं प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितभीरुनिष्ठम् ॥

मुक्तः स्वयंकृतभवश्च परार्थं शूरस्त्वच्छासनप्रतिहतेष्विह मोहराज्यम् ॥१॥

जैनाचार्य तेमना मंतव्यथी तेमनुं खंडन करवा जिनेश्वरनी स्तुति करतां कहे छे के, बळेकुं लाकडुं जेम उगी न शके, तेम मोक्षमां गयेला कर्म रहित थएला जीवने जन्म मरण न होय छतां संसारनुं प्रमर्थन करीने निर्वाण पाप कर्या पछी मुक्त थइने पण बौद्ध नायक पोतानी मेळे नवो भव लेनार पारकाने (शिक्षा करवा) माटे शूर बनेला तेणे विना विचारे बीकणपणाना अंतवाळुं निर्वाण मान्युं छे (अर्थात् परोपकार करवा दुष्टने दंड देवा पोताना शाशननुं महत्व वधारवा जन्म ले छे) एवा विपरीत बोलनारा जेओ तमारी आङ्गाथी बहार रहेला छे, तेमने विषे मोह राजानुं आवुं प्रबल राज्य ले! (जैन धर्ममां एवुं मंतव्य छे के मुक्त जीवने फरी जन्म नथी)

तथा अमूर्त यवाथी तेने संग न होवाथी ते असंग छे, तथा स्त्री पुरुष नपुंसकनी गणतरीमां नथी. (त्यारे केवा छे ते कहे छे) विशेषथी जाणे ते परिज्ञ छे, तथा सामान्य बरोबर जाणे [देखे] एवी संज्ञावाळो ज्ञानदर्शन युक्त छे. प०—जोस्वरूपथी मुक्तात्मा

सूत्रम्

॥६३९॥

आचारो

॥६४०॥

न जणाय तो, उपमाद्वारवडे आदित्यनी गति माफक जणाय छे के ? उ०—नहीं ते कहे छे, सादृश वस्तुनी उपमा थाय छे के तेनी माफक आ छे पण ते सिद्ध मुक्त आत्मानी तुलना के तेमना ज्ञान के सुखनी तुलना लोकनी वस्तुनी साथे थती न होवाथी अनुपम छे. प०—शा माटे ? उत्तर-ते मुक्त आत्मानी जे सत्ता छे ते रूप रहित छे. अने ते अरुपीपणुं उपर कहेल दीर्घ विग्रेरेनो निषेध करवाथी बतायुंज छे.

बळी तेने पद 'ते अवस्था कोइ पण जातनी न होवाथी अपद छे, तेनुं अभिधान पण नथी के जे पद वडे अर्थ बोलाय कारण के वाच्य पदार्थनो अभाव छे. कारण के जे कहेवाय छे, तेज शब्दरूप गंभ रस फरस विग्रेरेमांथी कोइ पण एक विशेषणथी बोलाय छे. तेनो अभाव छे ते बतावे छे. अथवा दीर्घ विग्रे शब्दोथी रूप विग्रेरेनुं विशेषयी निराकरण कर्युं हवे सामान्यथी पछीना सूत्रमां निराकरण करे छे.

सेनसदे न रूवे गंधे न रसे न फासे, इच्चेव त्तिवेमि (सू० १७१) षष्ठ उद्देशकः लोकसाराध्ययनं समाप्तम् ५-६॥

ते मुक्त आत्माने शब्दरूप गन्ध रस के स्पर्श नथी आज भेदो मुख्यत्वे वस्तुना छे. अने तेना प्रतिषेधथी बीजो कंइ विशेष भेद देखातो नथी, के जेथी अमे बीजुं बतावीए ! आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कडे छे. सूत्रानुगम कहो, अने तेनी समाप्तिथी अपवर्गने पामेलो (मोक्ष विषय कहेवानो) उद्देशो पूरो थयो, ते मोक्षनी प्राप्तिमां तपनी वक्तव्यता थोडामां बतावी पंचम अध्ययन पुरुं थयुं

॥ टीकाना स्लोक ११५ थया ॥

सूत्रम्

॥६४०॥

आचार

੧੯੪੧॥

धुताख्य नामनुं छट्ठं अध्ययन.

पांचमुं अध्ययन कहुं, हवे छहुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया अध्ययनमां लोकमां सारभूत संयम अने मोक्ष बताव्यो छे, अने ते निःसंगता सिवाय संयम न होय, तथा कर्म दूर कर्या विना मोक्ष न थाय. तेथी कर्म दूर करवा आ धुत ते कर्म धोवानुं बताववा कहे छे, आ संबंधे आवेला धुत नामना अध्ययनना चार अनुयोग द्वार थाय छे, तेमां प्रथम उपक्रम छे. ते उपक्रममां अर्थाधिकार बे भेदे छे, अध्ययननो अर्थ अधिकार अने उद्देशानो अर्थाधिकार छे, तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार १ला अध्ययनमां कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार कहेवा निर्युक्तिकार कहे छे,

पद्मे नियगविहणणा, कम्पाणं वितियए तइयगंभि । उवगरणं सरिराणं चउत्थए गारबतिगस्स ॥२५०॥

पहेला उद्देशामां पोताना जे सगां छे, तेओनुं विधून न (मोह त्याग) करवो जोइए. बीजा उद्देशामां घातिकर्मने दूर करवां, त्रीजामां उपकरण शरीरने, अने चोथामां त्रण गारवने दूर करवा तथा उपसर्ग के सन्मान थाय, तोपण रागद्वेष न करवो, तथा साधुओए (पूर्वे) ते प्रमाणे कर्म विगेरे धोयां छे, ते आ पांचमा उद्देशामां बतावे छे. आ प्रमाणे अर्थाधिकार बतावीने निक्षेपो कहे छे, ते त्रण प्रकारनो छे, ओघ निष्पन्नमां अध्ययन छे, नाम निष्पन्नमां धुत नाम छे तेना चार प्रकारे निक्षेपा छे, तेमां सुग-मनाम स्थापना छोडीने द्रव्य अने भाव बताववा अडधी (पूरी) गाथा कहे छे.

उवसगा सम्माणयविहुआणि पंचमं मित्रदेसे । दत्तवधुयं वत्थाई, भावधुयं कम्म अट्टविहं ॥२५१॥

सूत्रम्

116891

आच०

॥६४२॥

द्रव्यधूत वे प्रकारे छे, आगमथी अने नो आगमथी तेमां आगमथी धुतनो ज्ञाता (जाणनारो) होय, पण तेमां उपयोग न होय अने नो आगमथी तो इ शरीर भव्य शरीर सिवाय द्रव्यधूत ते कपड विगेरेनी धूळ दूर करवानुं छे. (द्रव्य ते कपडां विगेरेने अने धूत ते मेल दूर करवानुं छे)

आदि शब्दथी वृक्ष विगेरे फल माटे धोवानुं छे (मूकां पांदडां विगेरे दूर थवाथी फल तैयार थाय छे, अथवा विना जस्तरनी वनस्पति वचमांथी निंदी काढे छे) अने भाव धूत तो आठे कर्मने दूर करवा [मोक्ष माटे] उपाय कराय ते छे, [आ अडधी गाथानो अर्थ छे.] फरी आज विषयने खुलासाथी कहे छे.

अहियासित्तुवसग्गे, दिव्वे माणुस्सए तिरिच्छे य । जो विहुणइ कम्माइं, भावधुयं तं वियाणाहि ॥२५२॥

उपसर्गेनि अतिशे (सारी रीते) सहन करीने कर्म धोवां, एटले देवताना के मनुष्योना के तिर्यंचोना दुःख सुखरूप जे उप-सर्गे आवे तेमां समभाव राखीने जे संसार वृक्षना वीज समान मोहनीय विगेरे कर्मेने दूर करे, ते भाव धूत छे; एवं तुं जाण अथवा क्रिया अने कारकनो भेद नथी, तेथी कर्म धुनन तेज भावधूत छे, एम जाण नामनिक्षेप कद्यो हवे त्रीजा सूत्रालापाक निष्पन्न निक्षेपामां सूत्रानुगममां अस्वलितादि गुणयुक्त सूत्र कहेवुं ते आ छेः—

ओवूज्ज्ञमाणे इह माणवेसु आघाड से नरे, जस्स इमाश्रो जाइओ सवओ सुपडिले-
हियाओ भवंति, आघाड से नाणमणेलिसं, से किट्टि तेसिं समुट्ठियाणं निकिखत्तद-

सूत्रम्

॥६४२॥

आचा०
॥६४३॥

पटाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं, एवं (अवि) एगे महावीरा विष्परिक्मंति,
पासह एगे अवसीयमाणे अणत्तपन्ने से बेमि, से जहावि (सेवी) कुंमे हरए विणिविट्ठचित्ते
पच्छन्नपलासे उम्मग्गं से नो लहइ भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति एवं (अयि) एगे
अणेगरूबेहिं कुलेहिं जाया रूबेहिं सत्ता कलुण थण्णति नियाणओ ते न लभंति मुक्खं,
अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए जाया गंडी अहवाकोढी, रायंसी अवमारियं काणियं झिमियं
चेव, कुणियं सुजियं तहा ॥१॥ उदरिंच पास मूयं च चुणीयं च गिलासणि बेवइं पीढसर्प्पि
च, सिलिवयं महुमेहणि ॥२॥ सोलस एएरोगा, अकखाया अणु पुवसो अहणं फुसंति आ-
यंका, फास्ता य असमंजसा ॥३॥ मरणं तेसि संपेहाए उववायं चवणं च नच्चा, परियागं
च संपेहाए (सू० १७२)

स्वर्ग तथा मोक्ष, तथा नेनां कारणो तेमज संसारनां कारणोने आवरणरहित (केवङ्ग) ज्ञानना सद्ग्रावयी जे माणस जाणे; अने
आमर्त्य (मनुष्य)-लोकमां मनुष्योनो धर्म समजावे एश्ले, ते घातिकर्म दूर थयां पछी; पोते अघातिकर्मरूप [शरीरधारी] मनुष्य-
पणामां रहेलो थको धर्म कहे छेः—

सूत्रम्
॥६४३॥

आचारा०
॥६४४॥

पण जेम-बौद्धमतमां भीत विगेरेमांथी पण धर्मेपदेश प्रकट थाय छे. तेम जैनधर्ममां नथी; अथवा जेम, वैशेषिकोनुं उल्लुक भावबडे पदार्थीनुं बताववापणुं छे, एवुं अमारुं (जैनशासन) नथी.

प्र०—शा माटे ? उ०—धातिकर्म क्षय थया पछी, केवळ ज्ञान उत्पन्न थवाथी मनुष्यपणामां रहेलाज (तीर्थकर) पोते कृतार्थ थया छतांपण, जीवोना हितने माटे मनव्य अने देवोनी सभामां धर्मनो उपदेश करे छे.

प्र०—तीर्थङ्करज धर्म कहे छे, के, बीजो पण कहे छे ? उ०—बीजो पण कहे छे. जेने विशिष्टज्ञान होय, अने सारीरीते पदार्थीनो परिच्छेदक होय; ते धर्मेपदेश करे छे. ते कहे छेः—

जेओ अतींद्रियज्ञानि छे, अथवा श्रुत केवळी छे, तेओ धर्म कहे छे. एवुं शस्त्रपरिज्ञा नामना १ला अध्ययनमां कहेल छे. (तेथी आ प्रत्यक्ष सूचक-विशेषणबडे सूचव्युं के,) ते विशिष्टज्ञानीए आ एकेन्द्रिय विगेरे जातीओ वधा प्रकारो एट्ले सूक्ष्मवादर पर्याप्त—अपर्याप्तरूपे वरोवर रीते [शंकारहित] जाणेली छे, तेज साधु धर्म कहे छे. पण, एम न जाणनारो बीजो (अजाण) धर्म कहेतो नथी. तेज कहे छेः—

‘स आख्याति’ ते तीर्थङ्कर अथवा सामान्य केवळी अथवा अतिशय ज्ञानी [जातिस्मरण-ज्ञानवाला, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवेज्ञानी] अथवा श्रुत केवळी होय ते कहे छे. प्र०—युं कहे छे, जेनावडे जीव विगेरे पदार्थी जणाय छे, ते ज्ञान मति विगेरे पांच प्रकारनुं छे, ते, प्र०—ते ज्ञान केवुं छे ? उ०—तेवुं बीजे नथी, माटे ‘अनीहशं’ ले, अथवा सकल [वधा] शंसयने दूर करवावडे धर्म संभलावता तेज पोतानुं अनन्य सद्गत (अनुपम) ज्ञान बतावे छे, [अर्थात् संसारी ज्ञानथी तुष्णी वधे, पण तेमना उपदेशना ज्ञानथी

सूत्रम
॥६४४॥

आचा०
॥६४५॥

तृष्णानी जड दूर थाय माटे ते ज्ञान अनुपम छे] प्र०-तेओ कोने धर्म कहे छे ? उ०-ते तीर्थङ्कर गणधर विगेरे यथावस्थित भावो (पदार्थी) ने धर्मचरण माटे योग्यरीते जे पुरुषो उठेला होय, तेमने कहे छे, अथवा द्रव्यथी शरीरवडे, अने भावथी ज्ञान विगेरेना उत्सुक बनी विनय सहित (उभा थया होय) तेमने धर्म कहे छे.

समोसरणनो विनय

समोसरणमां हीओ बन्ने प्रकारे उभी थइने विनय पूर्वक सांभळे छे, अने पुरुषो उभा थइने अथवा बेठा रहीने पण सांभळे पण भावथी उत्सुक होय; तेमज बीजा उठेलां जीवो, तथा देवता अने तीर्थंच विगेरेने धर्म संभळावे छे. एटलुंज नहि पण जेओ भाव विना फक्त कौतुक विगेरेथी आवी सांभळे, तेमने मण धर्म कहे छे, भावथी उठेलानुं विशेषथी कहे छे.

मन वचन कायाने जेमणे कबजे लीधां छे, एटले मन वचन कायार्थी जीवोने दुःख देवारूप जे दंड छे, ते दूर करवाथी ते निक्षिप्त दंडवाळा [संयम पाळनारा] छे. तथा तप संयममां उद्यम करवाथी समाहित (शांत) अंतःकरणवाळा छे, तेमने जिनेश्वर विशेषथी धर्म कहे छे, तेज प्रमाणे प्रकर्षथी जणाय ते प्रज्ञान छे, तेवुं ज्ञान धरावनार बुद्धिमानोने आ मनुष्यलोकमां ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मुक्ति मार्ग छे ते बतावे छे, आ प्रमाणे समोसरणमां साक्षात् धर्म संभळावतां केटलाक लघुकर्मी जीवो (पूर्ण अद्वा थतां) तेज वखते चारित्र ग्रहण करे छे, पण बीजा तेम चारित्र लेता नथी, ते कहे छे, एटले उपर कहा प्रमाणे कर्मविवर जेमने मळयुं तेवा केटलाक भव्यात्माओ जिनेश्वर पासे धर्म सांभळतांज संयम संग्रामनी टोचे पराक्रम बतावे छे, अथवा पर ते इन्द्रियो अथवा कर्म शत्रुने जीतवा पराक्रमी बने छे, (अपि शब्दनो अर्थ ‘च’ छे, अने ‘च’ नो अर्थ वाक्यनो उपन्यास करवा माटे छे) हवे तेथी

सूत्रम्
॥६४५॥

आचारा
॥६४६॥

उलटुं कहे छे. तीर्थङ्कर पोते वधा संशयने छेदनारा धर्म कहे छे, छतां केटलाकर्ने प्रबळ मोहना उदये वेरी लेवाथी संयममां खेद पामता रहे छे, (कांतो संयम लेता नथी, ले, तो पूरो पालता नयी) तेवाने तपे जुओ [गुरु शिष्यने कहे छे] ते बहोळा कर्ही संयममां दुःख पामता जीवो केवा छे. ते कहे छे, आत्माना हितने माटे जेमनी प्रज्ञा [बुद्धि] काम करती नथी, ते अनात्म प्रज्ञावाळा (कुबुद्धिवाळा) छे, प्र०—तेओ शा माटे संयममां खेद माने छे? उ०—हुं कहुं छुं. अहों दृष्टांत वडे समजावे छे के शा कारणे तेओ खेद पामे छे. [सूत्रमां 'से' शब्द 'ते' ना अर्थमां छे, 'अपि' शब्द 'च'ना अर्थमां छे, अने ते वाक्यना उपन्यास माटे छे]
कुंडना काचबानुं दृष्टांत.

कोइ काचबो मोटा कुंडमां विनिविष्ट[प्रेमी]चित्तवाळो बनीने घृद्ध बनेलो अने पलाश (कोमल पांदडांवडे)ठंकायलो(तथा सूत्रमां प्राकृतना नियम प्रमाणे व्यत्यय करवाथी)उन्मार्ग एटले, उपर आववानां विवर(छिद्र)ने मेळवतो नथी; अथवा, जेनावडे उंचे कुदाय; ते उन्मज्य छे. अथवा, उचे जवाय ते, उन्मार्ग छे, तेवो उन्मार्ग मेळवी शकतो नथी. अर्यात् जे कुंडमां ते काचबो रहेल छे, ते, पाणी उपर पांदडां विगेरे छवाइ जवाथी बीलकुल ठंकाइ गयो छे. तेथी ते काचबो बहार आवी शकतो नथी. आ कहेवानो आ सार छेः—

कोइ मोटो कुंड होज] एक लाख जोजनना विस्तारवाळो छे, अने ते अतिशे शेवाळना झुंडथी कठण बनी गयेला जाळोना समूहथी ठंकाइ गयलो छे, अने ते कुंडना जुदा जुदा रूपवाळा करि मगर, माछलां, विगेरे जळचर जीवोनो आश्रय छे, तेना मध्य भागमां कुदरतीज एक फाटनुं बाकुं पढेलुं हतुं. जेमां फक्त काचबानी गरदन उंचे आवी शके; तेवा कुन्डमांथी एक काचबाए पोताना दोलांथी जुदां पडतां वियोगथी आकुल बनीने आम तेम गरदन फेरवतां कोइपण रीते तेवी भवितव्यताना योगथी ते काणामां पो-

सूत्रम

॥६४६॥

आचा०

॥६४७॥

तानी गरदनने बहार काढी; ते समये त्यां तेणे शरदकृतुना चंद्रनां चांदरणार्थी क्षीरसागरना पाणीना प्रवाहथी छवाइ रहेलुं शोभायमान बनेलुं तथा, स्वीलेलां कुमुदना समूहथी पूजा करवा जेवा उगेला ताराओथी भराइ गयेलुं आकाश जोयुं.

आबुं देखीने ते घणो खुश थयो; अने तेना मनमां आ प्रमाणे संकल्प थयो के—मारा सहचारी मित्रो आ स्वर्गसमान पूर्वेन देखेलुं मनोरथ (विचारमां) पण, न कळी शकाय; तेबुं ते काचबाओ जुए, तो वहु सारुं थाय. आ प्रमाणे चिचारो शीघ्रताथी पोताना बन्धुओने शोधवा माटे भटक्यो; अने तेमने मळीने तेमने तेबुं बताववा माटे पेलुं छिद्र शोधतो आम तेम भटके छे, छतां, होजनी विस्तीर्णताथी, तथा जीवोनो समूह त्यां घणो मोटो छे, तेथी ते छिद्र मेलवी शक्यो नहि; पण, त्यांज ते, (विनादेखे) मरण पाम्यो. तेनो सार आ लेवानो छे के—संसाररूपी—होज छे. तेमां जीवरूपी—काचबो छे, कर्मरूपी—चीकणी सेवाळ छे, तेमां छिद्र समान—मनुव्यजन्म, तथा आर्द्धक्षेत्र सुकुलमां जन्म मळयो; अने सम्यक्त्वनी प्राप्तिरूप—सुंदर चन्द्रवाळुं आकाशतळ मेलवीने मोहना उदयथी पोतानी ज्ञाति माटे, अथवा विषयस्वादना उपभोग माटे सारां संयममां अनुष्ठान न करतां, सफळता (मोक्षने) पामतो नथी; अने तेवीरीते बखत गुमावी; ते सामग्री गुमावी देवाथी पाढो काचबाना चिवर माफक क्यांथी तेवी उत्तम सामग्री मेलवी शके?

आ कारणथी गुरु उपदेश आपे छे के, हे भव्य ! सेंकडो भवोमां पण, दुष्प्राप्य एवं कर्मविवररूप—सम्यक्त्व पामीने एकक्षण मात्र पण, तमारे प्रमादवाळा न थबुं. फरीथी पण, संसारलुब्ध—जीवोनुं बीजुं दृष्टांत कहे छेः—

‘भजगा’—वृक्षो पोते ठंड, ताप, धुजारो [कंपवुं] छेदन शाखा (डाळीओनुं) खेंचवुं; क्षोभ पमाडबो; मरडवुं; भांगीनाखवुं. एवां अनेक उपद्रवोने सहेवा; छतां पण, पोतानां स्थानने तेमां स्थिर बनीने ते छोडतां नथी. ते प्रमाणे साधुने बोध आपे छे के,

सूत्रम्

॥६४७॥

आचा०

॥६४८॥

ए वृक्षो प्रमाणे जेओ कर्मथी भारे छे, तेवा मोहांध-जीवो अनेक उंचनीच कुळमां उत्पन्न थइने धर्मचारित्रने योग्य पोते होवा छतां पण रूप विगेरेनी चक्षुइन्द्रियोनी अनुकुलतामां, अने तेज प्रमाणे मधुर अवाज विगेरे विषयोमां गृद्ध बनो शरीर मननां दुःख भोग-ववा छतां; राजाना उपद्रवथी पीडावा छतां, अने अग्रिदाहथी बधुं बक्की गयेला जेवा बनवा छतां, अने जुदा जुदा निमित्तथी अनेक आधि (चिंतावाळा) छतां पण सकळ (बधां) दुःखोना घरसमान -गृहवासनुं कर्म छोडवा समर्थ थता नथी; पण, घरमां रही-नेज तेवां दुःखो आवतां दीन स्वरे रडे छे, अने बोले छे के, “ हे बाप ! हे मा ! हे दैव ! आवा अवसरे तमने आवुं दुःख देवुं योग्य नथी ! तेज कह्यं छे के :—

किमिदम चिन्तित मसदश, मनिष मतिकष्टमनुपमं दुःखं ॥ सहसैवोपनतं मे, नैरयिकस्येव सत्त्वस्य ॥१॥

न चिंतवेलुं अजायबीवालुं अनिष्ट, तथा अनुपम आवुं (भयंकर) दुःख जेम नारकीना जीवने आवे; तेम मने एकदम क्यांथी आवी पडचुं छे ! विगेरे, ते बोले छे.

अथवा रूप विगेरेमां आसक्त थएला चीकणां कर्म बांधीने नरक विगेरेमां उत्पन्न थइ त्यां दुःख भोगवतां करुण स्वरे उपर मुजब रडे छे, अने ते प्रमाणे करुण स्वरे रडवाथी पण ते रांकडो जीव ते दुःखथी मुकातो नथी, ते बतावे छे. दुःखनुं निदान ते उपादान कर्म छे, तेनावडे दुर्गतिमां उत्पन्न थएला दुःख भोगवतां रडवा छतां पण त्यांथी दुःखनी मुक्ति (छुटकारो) अथवा मोक्षनुं कारण जे संयम अनुष्ठान छे, ते पामी शकता नथी, अने दुःखना छुटकाराना अभावमां संसार उदरमां जुदी जुदी व्याधिओथी वेरायला जीवो आम तेम भमे छे, ते बतावे जे (अथ शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे) हे शिष्य ! तुं जो ! ते संमारी रखडता जीवो

सूत्रम्

॥६४८॥

आचा०
॥६४९॥

उच्च नीच कुळमां पोताना शुभ अशुभ कर्म भोगवाने गयेला (जन्म पामेला) छे, अने ते कर्मना उदयथी आवी अवस्थाने भोगवे छे, तेमां तेमने उत्पन्न थता सोळ रोग बतावनार त्रण इलोको छे. तेमां (१) प्रथम रोग, वात, पित्त, इलेष्म अने ते त्रणेना भेगा थवाथी संनिपात एम चार प्रकारे गंड (कंडमाळ) छे, ते गंड जेने होय ते गंडी कहेवाय छे, एटले गंडमाळा नामनो रोग ते संसारी जीवने थाय छे, तेज प्रमाणे बीजा पण रोगो थाय छे, ते बतावे छे, (अथवा शब्द दरेक रोग साथे जोडवो) अथवा राजांसी एटले अपस्मार (क्षयनो भेद) विगेरेनो रोग थाय छे, अथवा अढार प्रकारना कोढ रोगवालो कोढीयो थाय छे. तेमां सात मोटा कोढ छे, ते आ प्रमाणे

(१) अरुणो (२) दुम्बर (३) निश्यजीव्ह (४) कपाल (५) काकनाद (६) पौण्डरीक (७) दद्रु. (लाल दादर) आ साते प्रकारना कोढो बधी धातुमां प्रवेश थवाथी अने असाध्य यइ जवाथी ते साते भयंकर छे.

नीचला अगीआर कोढ क्षुद्र छे.

(१) स्थूलआरुष्क (२) महाकुष्ट (३) एककुष्ट (४) चर्मदल (५) परिसर्प [६] विसर्प [७] सिध्म [८] विचर्चिका (काळीदादर) [९] किटिभ (खरसबुं) [१०] पामा (खस) [११] शतारुक (घणी फोल्हीओ.) कुल नाना मोटा १८ छे, ते सामान्यथी जोतां, बधाए कोढ-रोगो संनिपातथी थाय छे. छतां पण, वात विगेरेना ऊत्कट दोषथी जुदा जुदा भेदवाला गणाय छे. तथा, राजांस रोग ते, राज्यक्षमा (क्षय) रोगवालो, राजांसी (क्षयी) कहेवाय छे, अने ते क्षयरोग संनिपातथी चार कारणे थाय छे. कहुं छे के:—

सुमत्र
॥६४९॥

आचार
॥६५०॥

त्रिदोष जायते यक्षमा, गदो हेतुचतुष्टयात् वेगरोधात् क्षयाच्चैव, साहसाद्विषमाशनात् ॥१॥

त्रण दोषवालो यक्षमा (क्षय) नामनो रोग वीर्यना वेगना रोधथी वेगना क्षयथी, साहस करवाथी; तथा विषम [अयोग्य] खोराकथी-एम चार कारणे थाय छे. तेज प्रमाणे अपस्मारनो रोग वात, पित्त अने कफना संनिपातथी चार प्रकारे छे, ते रोग-वालो सारा माडाना विवेकथी विकल होय छे, तथा भ्रम (चक्री) मूर्छा विगेरेनी अवस्थाने ते रोगी भोगवे छे. कहुं छे के,
भ्रमावेशः ससंरम्भो, द्वेषोद्रको हृतस्मृतिः अपस्मार इति ज्ञेयो, गदो घोरश्चतुर्विंशः ॥२॥

भमेल चडे, मूर्छा विगेरे थाय, द्वेषनो उडालो थाय, विसरी जवानी टेव थाय, एम चार प्रकारनो आ 'घोर' अपस्मार रोग जाणदो. तेमां ब्रह्मरंग पर्यंत भ्रमण करनारो वायु छे, तेनुं मुख्य स्थान हृदयनो प्रदेश छे. तथा 'काणियंति' अस्ति [आंख] नो रोग वे प्रकारे छे, प्रथमनो गर्भमांज रोग थाय छे, अने बीजो जन्म्या पछी थाय छे, तेमां गर्भवालाने दृष्टिनो भाग अपूर्ण होय छे, तेने तेज (प्रकाश) जन्मथी आंधलो बनावे. तेज प्रमाणे, एक आंखमांथी तेज जतां काणो बनावे छे. तेज प्रमाणे रक्तपाणमां जतां, रक्तता-[लालाश आंखमां वधारो होय.] पित्तपणामां जतां, पिंगाक्ष [पीछी आंखवालो] अने श्लेष्मपणाने पामतां शुक्लाक्ष (धोक्की आंखवालो) बने छे, वातने पामतां विकृत आंखवालो बने छे, अने जन्म्या पछी जे रोग थाय; ते वात विगेरेथी अभिष्यंद-(आंखमांथी पाणी झरबुं) थाय छे. कहुं छे के:—

वातात्पित्तात् कफादक्ता, दमिष्यन्दश्चतुर्विंशः प्रायेण जायते घोरः सर्व नेत्रामयाकरः ॥३॥

वात, पित्त, कफ, अने रक्त-(लोही.) ए चारथी अभिष्यंद चार प्रकारे पाणीनुं झरबुं थाय छे, अने प्रायेकरीने तेथीज

सूत्रम्

॥६५०॥

आचा०

॥६५१॥

आंखना वधा रोगोनो घोर आकर (समूह) थाय छे तथा 'जिमियंति' जाडयता—(चरबीनुं वथवुं; अने लोहीनुं पाणी थवुं.) तेथी शरीरनां वधां अवयवोनुं परवशपणुं (अवशित्व) छे. [जेने लीधे जोइए; तेम, हाली-चाली शकाय के, फरी शकाय नहि] 'कुणियंति' गर्भाधानगा दोषथी एक पग ढुङ्को होय; अथवा, एक हाथ खोडवाळो होय ते कुणिरोग छे. 'खुजियंति' कुबडो. पीठ विगेरेमां कुबडापणुं होय; ते, 'कुबजी छे.' मातपिताना लोही-वीर्यनो दोष होय; तो तेथी, गर्भमां रहेला दोषोथी कुबज—(कुबडो) वामन विगेरेनी खोडो शरीरमां थाय छे; कहुं छे के:—

गर्भे वातप्रकोपेन, दौहृदे वाऽपमानिते ॥ भवेत् कुबजः कुणिः पंगुर्मूको मन्मन एवा वा ॥१॥

गर्भनी अंदर वायुना प्रकोपथी अथवा दोहला न पूरावाथी गर्भमां रहेलो जीव कुबडो कुणिरोगवाळो पांगळो मुँगो के मन्मन रोगवाळो थाय छे, आंमां 'मुँगो' अने मन्मन एकांतरित (पेटना रोग पछीना रोगमां) मुखदोषमां बतावे छे, तथा 'उंदरि च' ति ('च' समुच्चयना अर्थमां छे) वात, पित्त विगेरेना कारणे उत्पन्न थयेला आठ प्रकारना उदर रोग छे, ते रोगवाळो उदरी छे, तेयां जलोदर रोग असाध्य छे, बाकीना तुर्त थएला दवा करतां मटे तेवा छे, तेना आ प्रमाणे भेदो छे.

पृथक् समस्तैरपि चानिलाद्यैः प्लीहोदरं बद्धगुदं तथैव ॥ आगंतुकं सप्तममष्टमं तु जलोदरं चेति भवति तानि ॥१॥

वधा अनिल [वायु] विगेरे एकेकथी के समुदायथी १ वायुनो (वातोदर) २ पित्तनो [पितोदर] ३ कफनो (कफोदर) तथा ४ संनिपात (कष्टोदर) पालीह (बरोळनी गांठ) ५ उदर रोग (काचबी अकृत विगेरे) ६ बद्धगुद [अजीर्णाश] ७ आंगतुक ताव साथे उदर रोग (जीर्णज्वर) ८ जलोदर ए आठ रोग पेटना छे,

सूत्रम्

॥६५१॥

आचा०

॥६५२॥

‘पासमूर्यंति’ हे शिष्य ! तु मुंगा अथवा मन्मन (बोबडु) बोलनाराने जो, ! ते गर्भना दोषथी अथवा पछवाडेथी ६५ प्रकारना मुखनारोगो सात आयतन [स्थान]मां थाय छे, ते आयातन नीचे मुजब छे, १ होठ २ दांतनुं मूळ ३ दांत ४ जीभ ५ ताळवुं ६ कंठ ए वधां मळीने सात छे, तेमां बे होठना आठ रोग छे, दंतमूळमां १५, दांतना आठ छे, जीभना ५ छे, ताळवाना ९ छे, कंठमां १७ अने वधाना साथे मळीने त्रण छे. कुल ६५ छे, ‘सूणियंति’ शून्यपणुं श्वयथु [सोजानो] रोग वात पित्त श्लेष्म संनिपात रक्त अने अभिघात (मार लागवाथी) थी छ प्रकारनो छे, कहुं छे के:—

शोफः स्यात् षड्विधो घोरो, दोषै रुत्षेध लक्षणः यस्तैः समस्तैश्चापीह तथा रक्ताभिघातजः

शोफ नामनो छ प्रकारनो घोर रोग जुदा जुदा के, सामटा दोषथी शरीर फुलेलुं देखाय; ते लोहीना विगाडथी थाय छे. एटले, श्लोक पहेलां बताव्या प्रमाणे वात, पित्त, कफ, अने संनिपात, रक्त, अने अभिघातथी सोजानो रोग थाय छे, तथा “गिलासर्णिति” ते भस्मक नामनो व्याधि छे. ऊष्णता, वात, अने पित्तना ऊत्कटपणाथी, अने कफना न्यूनपणाथी तथा गरमी वधारे थवाथी थाय छे, तथा वेवइंति ते वायुथी उत्पन्न थयेल शरीरनां अवयवो कंपरूप छे. कहुं छे के:—

प्रकामं वेपते यस्तु, कंपमानश्च गच्छति, कलाप खंजं तं विद्या, न्युक्त संधिनिवंधनम् ॥१॥

जे घणो कंपे, तथा कंपतो चाले, तेने संधि निवंधनथी मुकाएलो कलाप खंज (लकवानो रोग) जाणवो. तेज प्रमाणे “पिदसर्प्पि च ति” जीवने गर्भना दोषथी ते पीढ सर्पिषणे उत्पन्न थाय छे, अथवा जन्म्या पछी अशुभ कर्मना दोषथी थाय छे,

सूत्रम्

॥६५२॥

आचारा०
॥६५३॥

आ रोगीने स्पर्श इंद्रियं भान रोगवाळी जग्याएथी नष्ट थाय छे, ते रोगवाळाने हाथमां पकडेलुं लाकहुं खसी जाय छे, अने सूझ घोंचे तो धण असर न थाय तथा 'सीलीवयं त्ति' श्लीपद ते पग विगेरेमां कठण पणुं होय छे, ते आ प्रमाणे-वात, पित्त, कफना प्रकोपथी छातीमां रोग उत्पन्न थइ जंघामां स्थिर थइ धीरे धीरे काङ्गांतरे पगोनो आश्रय करीने सोजो चडावे छे, ते रोगोने श्लीपद कहे छे.

जे देशमां पाणी भराइ रहेलुं होय, अने छए ऋतुमां शीतल (भेज) रहेतो होय, तेवा देशोमां विशेषे करीने श्लीपद रोग थाय छे;

यादयोहस्तयोश्चापि, श्लीपदं जायते नृणां; कर्णोष्टनाशास्वपि च, केचि दिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥

बे पगमां बे हाथमां माणसोने ते रोग थाय छे, पण केटलाक विद्वानोनो एवो भत छे के ते रोग कान होठ अने नाकमा पण थाय छे. तथा 'मधुमेहर्णि' ति मधु मेह ते 'वस्ति रोग' छे ते जेने होय ते मधुमेहि कहेवाय छे, एटले मधना जेवो तेनो पेसाव होय छे, ते प्रमेह, (परमीआ) ना २० भेद छे, ते असाध्य पणे गणाय छे. तेमां वधाए प्रमेहो प्राये वधा दोषोथी थाय छे, तो पण वात विगेरे उत्कट थवाथी २० भेदो थाय छे, तेमां कफथी १० पित्तथी ६ अने वायुथी ४ थाय छे, अने ए वधा असाध्य अवस्थामां मधुमेहपणामां थाय छे. कहुं छे के:—

सर्वएव प्रमेहास्तु, कालेना प्रतिकारिणः मधुमेहत्वामायान्ति, तदाऽसाध्या भवन्ति ते ॥ १ ॥

सूमत्र
॥६५३॥

आचारोऽप्तृ
॥६५४॥

बधा प्रमेहना रोगो योग्य समयमां दत्ता न करवाथी मधुप्रेहपणुं पास्या पछी असाध्य बने छे.

आ प्रमाणे उपर बतावेला सोले रोगोनुं वर्णन अनुक्रमे कर्यु, ('अथ' अने 'ण' जे छे. ते 'अथ' नो अर्थ गुजरातीमां 'पछी' थाय छे. अने 'ण' तो फक्त शोभा माटे छे) उपर बतावेला रोगो संसारी जीवने थाय छे, तथा आतंक एटले शीघ्र जीव लेण रोग जे शूल विगेरे छे, तथा गाढ प्रहार (जोरथी लागेलो मार) विगेरे दुःख देनारा स्पर्शो कां तो अनुक्रमे आवे अथवा साथे पण थाय, एटले कइ निमित्तथी आवे अथवा अनिमित्त आवे, अने ते रोगोथी पीडाय छे. आ रोगोथीज ते मुकातो नथी. बीजुं पण ते संसारी जीवने अधिक दुःख थाय छे, ते बतावे छे, ते कर्म रोगथी भारे थयेला गृहवासमां आसक्त थएला मनवाळा अ समंजस रोगथी पीडा थतां अंते प्रणित्याग थाय छे. ते विचारीने अने पाछो तेमनो उपपात तथा च्यवन (देवता जन्म मरणने बदले उपपात च्यवन कहेवाय छे.) ते कर्मनुं संचित जाणीने एवुं करवुं जोइए के जेथी उपर बतावेल गंड (गुमडां) विगेरे १६ रोग तथा मरणनो तथा उपपातनो संपूर्ण अभाव थाय, वक्ती मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगथी मेल्वेल कर्मनो 'अवाधा' काळनी मुदत पछी उदय थाय छे. त्यारे तेनो परिपाक (अनुभव) थाय छे. तेज शरीर तथा मन संबंधी दुःख उत्पन्न करे छे, ते विचारीने तेने जड मूळथी काढवा प्रयत्न करवो जोइए; ते दुःखीओ दीनस्वरे रडे छे. विगेरे ग्रंथ (सूत्र) वडे ऊपपात. तथा च्यवन सुधी बताव्या छतां पण, तेनुं मोटापणुं बताववा जेनावडे प्राणीओने संसारमां निर्वेद (खेद) उत्पन्न थाय; माटे बीजुं सूत्र कहे छे:—

तंसुणेह जहा तहा संति पाणा अंधा तमसि वियाहिया, तामेव सइं असइं अइअच्च उच्चावय

सूत्रम्

॥६५४॥

आचार्य

॥६५५॥

फासे पडिसंवेष्ट, बुद्धेहिं एयं पवेइयं संति पाणा वासगा रसगा उदए उदएचरा आगास गमिणो
पाणा पाणे किलेसंति, पासलोए महब्भयं (सू० १७७)

(आचार्य शिष्यने कहे छे.) ते यथावस्थित (जेवो छे, तेवा) कर्मविपाकने मारी पासे तमे सांभळो. जेमके—नारकी, तिर्यच, नर, अमर, ए लक्षणवाली चार गतिओ छे. तेमां नरकगतिमां, चारलाख योनियो, तथा २५ लाख कुल कोटिओ छे, अने ३३ सागरोपमनी ऊत्कृष्ट स्थिति छे, त्यां परमाधार्मिक देवतानी करेली वेदना छे, तथा पास्पर त्यां रहेला नारकीना जीवो (कुतरा माफक) एक बीजाने दुःख दे छे, तथा स्वभाविक पीडा त्यां जे थाय छे, ते आपणाथी कही शकाय तेम नथी. जो के, थोडामां कहेवानी इच्छाथी कहेवाना विषयने पूरो न कहेवाय; तोपण, त्यांना कर्मविपाक कहेवाथी जेम, प्राणीओने वैराग्य थाय; तेम श्लोकोवडे वर्णन करे छे.

श्रवण लवनं नेत्रोद्धारं करकम पाटनं । हृदय दहनं नासाच्छेदं प्रतिक्षण दारणम् ॥

कट विदहनं तीक्ष्णापात त्रिशूल विभेदनम् । दहववदनैः कैक्योरैः समन्त विभक्षणम् ॥ १ ॥

कानने कापवा; आंखोना ढोला खेंचीकाठवा; हाथपगने छेदवा; छातीने बालवी; नाक छेदीनाखवुं; दरेकक्षणे भयंकर अवाज करवो; कटविदहन, तीक्ष्ण आपात, त्रिशूलथी भेदवुं; बळतां मोढांवाला घोर-कंक पक्षीओथी वारंवार भक्षण करवुं. आवी मोटी वेदनाओ प्रमाधार्मीथी छे.

सूमत्र

॥६५५॥

आचा०
॥६५६॥

तीक्ष्णै रसिभिर्दिप्तैः कुन्तै विष्मैः परश्वधै श्रैकै; परथु त्रिशूलमुदगरतामरे वासी मुषंडीभि ॥ २ ॥
वळी, देदीप्यमान तीक्ष्ण तलवारोथी तथा विषमभाला, परथुअध चक्रोवडे, तथा परथु-त्रिशूल मुदगर, तोमरवासी मुषंडीथी दुःखदेले.
संभिन्नतालु शिरसशिञ्चन्न खुजाशिञ्चन्न कर्णना सौष्ठाः भिन्नहृदयोदरान्त्रा भिन्नासि पुटाः सुदुःखार्ता ॥ ३ ॥
एटले, ताळबुं-माथुं जुदुं पाडे छे, तथा खुजा, कान, अने होठ छेदीनाखे; तथा छाती-पेट, आंतरडां भेदीनाखे; तथा आंखोना
डोला खेंची काढवाथी रांक नारकीना जीवो पीडायला छे.

निपतन्त उत्पतन्तो विचेष्टमाना महीतले दीनाः नेक्षंते त्रातारं नैरयिका कर्म पटलान्थाः ॥ ४ ॥

नीचे पडेला पाछा ऊऱ्हलता जुदी जुदी चेष्टा करता महीतल (पृथ्वी) उपर दीन थइ रहेला कर्मना पडदाथी अंधा बनेला नार-
कीना जीवो कोइ रक्षकने जोइ शकता नथी,

शार्दुल विक्रिडित,

छिन्द्वते कृषणाः कृतान्त परशो स्तीक्षणे न धारासिना; क्रदन्तो विषवीचि (वच्छि) भिः परिवृता संभक्षण व्यापृतैः ॥

पाटयन्ते क्रकचेन दास्वदसिन प्रच्छिन बाहुद्रव्याः कुंभीषु त्रपुषान दग्धतनवो मूषामु चान्तर्गताः ॥ ५ ॥

जमराजा परथुनी तीक्ष्ण तलवार जेवी धारावडे ते रांकडा छेदाय छे, तथा विषना समूहथी भरेला. (हडकायला कूतरा जेवा)
करडवा माटे वीटायला पोकार करता रहे छे, तथा करवतीवडे जेम, लाकडुं चीरे; तेम चीराय छे, तथा तलवारवडे तेना बे बाहु
छेदी नाखे छे. तथा कंभीमां राखीने गरम गरम तरवं पाय छे. तथा मषमां (घालीने जेम सोनी सोनुं पीगळावे; तेम) घालीने

सूत्रम्

॥६५६॥

आचार
॥६५७॥

शरीरमां बळता राखेला छे.

भृज्ज्यन्तेज्वलदम्बरीषहुतभुग् ज्वालाभिराराविणो, दीपां गारनिभेषु वज्र भवनेष्वं गारके शूतिताः ॥

दद्यन्ते विकृतोर्ध्वं बाहुवदनाः क्रदन्त आर्तस्वनाः पश्यन्तः कृपणा दिशो विशरणा स्नाणायको नो भवेत् ॥ ६ ॥

बळी, ते नारकीना जीवो बळता अंबरीय अग्निनी ज्वालावडे पोकार कराता भुंजाय छे, तथा बळता अंगारावाळा वज्रभवन माफक अंगारामां ऊभा थयेला रांकडा मोंवाळा ऊंचा हाथ करीने खोखरा अवाजवाळा रडता बळे छे. अने ते विचारा नारकीना जीवो शरणरहित थइने वधी दिशामां (आश्रय) आपनारने देखे छे, पण तेमने बचाववा कोइ समर्थ नथी; विगेरे, नारकीनां दुःख छे. तथा तिर्यग्गतिमां पृथ्वीकायनी ७ लाख योनि छे, तथा बार लाख कुल कोटि छे. तेमने नीचली (पीडाओ) छे.

स्वकाय-प्रकायनां शस्त्रोथी पीडा छे, तथा शीत-ऊष्णनी पीडा छे. तेज प्रमाणे अप्काय (पाणी) ना जीवोनी ७लाख योनि, तथा कुल कोटि, तथा जुदी जुदी जातिनो वेदनाओ छे. अग्निकायनी ७ लाख योनि, तथा ३ लाख कुल कोटि, अने पूर्व माफक वेदना छे. वायुनी पण ७ लाख योनि, तथा ७ लाख कुल कोटि, अने ठंड-ऊष्णतानी जुदा जुदा प्रकारनी वेदना छे. प्रत्येक वनस्पतिनी दशलाख योनि, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख योनि, अने बंनेनी २८ लाख कुल कोटि छे. तेमां गयलो जीव अनंतकाळ सुधी पण छेदन-भेदन मोटन विगेरेनी जुदी जुदी वेदनाने अनुभवे छे.

विकल्पिंद्रिय, बैंद्रिय, तीनिंद्रिय, चारिंद्रियनी बबे लाख योनि, तथा कुल कोटि ७-८-९ लाख अनुक्रमे छे, अने ते दरेकने भूख तरस, ठंड-ताप, विगेरेथी थतुं दुःख आपणे प्रत्यक्ष जोडिए छीए. तीर्यच-पंचेन्द्रियनी चारलाख योनि छे, अने जळचरनी कुल

सूत्रम्

॥६५७॥

आचारा०
॥६५८॥

कोटि १२॥ लाख छे, पश्चीओनी कुल कोटि १२ लाख, अने चोपगांनी १० लाख, ऊर परि सर्वनी १० लाख, खुज-परिसर्पनी ९ लाख छे, अने जुदी जुदी वेदना तिर्यचानी जे छे, ते प्रत्यक्षज छे. कहुं छे के:—

क्षुत्तृद् हिमात्युण्ण भयार्दितानां, पराभि योगव्यसना तुराणां अहो ! तिरथामति दुःखिताना, सुखानु षंगः किलबार्तमेतद् ॥१॥

भूख तरस, ठंड ताप तथा भयथी दुःखी थपला तथा पारकाना कवजामां रहेवाना दुःखथी सदा पीडायेला एवा तिर्यचो जे अति दुःखी छे, तेमनामां सुखनो अनुसंग शोधवो ते तो निश्चे एक वार्ता मात्र छे! (अर्थात् सुखतो लेश पण नथी) विगेरे छे.

मनुष्य गतिमां पण १४ लाख योनि तथा १२ लाख कुल कोटि अने आवी रीतनी वेदनाओ ले.

दुःखं स्त्री कुक्षिमध्ये प्रथममिह भवे गर्भवासे नराणां बालत्वेचापि दुःखं मललुलिततनुः स्त्रीपयः पानमिश्रं ॥

तारुण्येचापि दुःखं भवति विरहजं वृद्धभावोप्यसारः संसारे रे मनुष्या वदत यदिसुखं स्वल्पमप्यस्ति किञ्चित् ॥ १ ॥

प्रथम मातानी कुखमां आ भवमां पहेलुं दुःख मनुष्योने गर्भवासमां रहेवानुं छे, अने जन्म्या पछी बालपणामां मलथी खर-डायलुं शरीर संबंधी तथा मानुं दृध पीवानुं दुःख छे, जुवानीमां पण (स्त्री पुरुष तथा दीक्षिका दीकरी मावाप सगांना) विरहनुं दुःख छे, अने वृद्धावस्था तो असारज छे, (माटे डाढ्हो माणस मुग्ध जीवने पूछे छे के) हे मनुष्यो! जो तमने कयांय पण संसारमां थोडुं पण सुख देखातुं होय तो बोलो! (अर्थात् संसार दुःख सागरज छे)

बाल्यात् प्रभृति चरोगै, दृष्टो भिभवश्च यावहिह मृत्युः शोक वियोगायांगै, दुर्गत दोषैश्च नैकविधैः ॥ २ ॥

बालपणमांथीज रोगोवडे डंखायलो, अने मृत्यु सुधी (मर्ण पर्यंत) शोक वियोग तथा कुयोग वडे तथा अनेक प्रकारना गरी-

सूत्रम्

॥६५८॥

आचारा०
॥६५९॥

बीना दोषो वडे पराभव रहेल छे.

क्षुत्रहृद हिमोष्णानिल शीतदाह दारिद्र्य शोकप्रिय विप्रयोगैः दौर्भाग्य मौर्धर्णन भिजात्यदास्य वैरूप्य रोगादि भिर स्वतंत्रः ॥३॥

भूख तरस ठंड ताप, पवन तथा ठंडो दाह तथा दरिद्रता शोक वहालांना वियोगथी, तथा दुर्भागीपणुं, मूर्खता, नीचजाति, तथा दासपणुं, कुरुप, तथा रोगोथी, आ यनुष्यदेह सदा परतंत्र छे.

देवगतिमां पण चारलाख, योनि, २६ लाख कुल कोटि छे, तेमां पण अदेखाइ, विषाद; मत्सर च्यवनभय, शल्य विगेरेथी पीडायला मनवाळाने दुःखनोज प्रसंग छे. सुखनुं अभिमान तो, आभास, मात्र छे. कहुं छे के:—

देवेषु च्यवन वियोगदुःखितेषु क्रोधेष्या मदमदनाति तापितेषु आर्या! नस्त दिह विचार्य सं गिरन्तु यत्सौख्यं किमपि निवेदनीयमस्ति

देवो, च्यवन, तथा वहालांना वियोगथी दुःखी छे, क्रोध, इष्या, अहंकार, कामदेवथी अति पीडायला छे. तेथी हे आर्य ! (उत्तम) पुरुषो ! अहीं कंइपण सुख वर्णववायोग्य होय; ते विचारीने कहो; (विगेरे समजवुं.)

तेथी, आ प्रमाणे चार गतिमां पडेला संसारी जीवो जुदा जुदा रुपे कर्मविपाकने भोगवे छे, तेज सूत्रकार बतावे छे. ‘संति’ प्राणीओ विद्यमान छे, तेओ चक्षुइंद्रियथी विकल्प ते द्रव्यअंधा छे, अने सारा-माठा चिवेकथी रहित भावअंध पण छे. तेओ नरक-गति विगेरेना द्रव्यअंधकारमां तथा मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, विगेरेना कर्मविपाकथी मळेला भावअंधकारमां पण रहेला (शाखकारे) वर्णन्या छे. ‘किं च’ वळी, तेवी, कुष्ट (कोढ) विगेरेनी अधम अवस्थामां, अथवा एकेंद्रियनी, अथवा अपर्याप्ति अवस्थाने एकवार अनुभवीने पाढुं कर्म ऊदय आवतां तेमज, अवस्थाने वारंवार अनुभवीने ऊंच-नीच तीव्रमंद दुःख विशेषना स्पर्शेने

सूत्रम्

॥६५९॥

आचा०

॥६६०॥

जीव अनुभवे छे. आ बधुं तीर्थकरे कहेलुं छे. ते कहे छे.— आ बधुं तीर्थकरे प्रकर्षथी अथवा प्रथमथी कहेलुं छे, माटे प्रवेदित छे. तथा हवे पछी, कहेवातुं पण तेमनुं कहेलुं छे. ‘संति’ जीवो विद्यमान छे. एटले, (वास धातुनो अर्थ शब्द, तथा कुत्साना अर्थमां छे. माटे,) जेओ वास करे छे, ते वास ना (बोलनारा) भाषा लब्धि पापेला बेइद्रिय विगेरे जीवो पण छे. तेज प्रमाणे रसने अनुसारे जनारा ते कडवो—तीखो कषायलो विगेरे रसने जाणनारा एटले, मनवाळा संझी—जीवो पण छे. (आ प्रमाणे संसारी जीवोनो कर्मविपाक विचारीने महाभय जाणवो;) तेमज ऊदक-(पाणी) रूप—एकेद्रिय जीवो छे. पर्याप्त—अपर्याप्त अवस्थामां, तथा ऊदकमां चरनारा ते पोरा, छेदनक, लोहुणक विगेरे त्रस जीवो छे, तथा माछलां, काचवा विगेरे पण छे. तेमज, स्थळ उपर जन्मनारा, अने केटलाक जळने आश्रये रहेला महोरग तथा पक्षीओमांना केटलाक, ते पाणीमां पोतानुं जीवन गुजारनारा जाणवा; अने बीजां पक्षीओ आकाशगामी छे. आ प्रमाणे बधां प्राणीओ (पोतानाथी बीजां नबळां) प्राणीने आहार विगेरे माटे, अथवा मत्सर विगेरे माटे दुःख आपे छे. तेथी शुं समजवुं? ते कहे छेः—(हे शिष्य!) तुं अवधार! के, आ चौद रज्जुप्रमाण-लोकमां कर्मविपाकना कारणे जुदी जुदी गतिमां दुःख तथा कळेशनां फळरूप—महाभय छे. (पण तेमां सुख तो, कहेवामात्र छे.) शामाटे कर्मविपाकथी महाभय छे? ते कहे छेः—

बहुदुक्खा हु जन्तवो, सत्ता कामेसु माणवा, अबलेणा वह गच्छति सरीरेण पभंगुरेण अहे से बहुदुक्खे इइ बाले पकुच्चइ एए रोगा बहू नच्चा आउरा परियावए नालं पास, अलं तवेएहिं एयं

सूत्रम्

॥६६०॥

आचार्य

॥६६१॥

पास मुणी ! महबमयं नाइ वाइज्ज कंचणं (सू० १७८)

(गुरु कहे छे हे शिष्यो !) कर्मना विपाकथी आवेलां वहु दुःखो जे जीवोने छे, जेथी ते जाणीने तमारे तेहां अप्रमादवाळा थवुं. प्र० वारंवार आवो उपदेश केम करो छो ? उ—कारण के अनादि भवना अभ्यासथी न गणाय, तेटला उत्तर परिणामवाळा इच्छामदन विषयोमां गृद्ध थयेला पुरुषो छे, तेथी पुनरुक्ति दोष लागतो नथी, हवे काम (कुचेष्टा) मां जे जीवो आसक्त छे, ते शुं मेलवे छे, ते कहे छे—बलरहित (निःसार) तुष (डांगरनां फोतरां) नी मुट्ठी समान औदारिक शरीर जे पोतानी मेले भंग नाश ना स्वभाववाळुं छे, तेना वडे सुख मेलववा कर्मनो उपचय करीने अनेकवार वध (मरण घात) ने मेलवे छे;

प—कयो माणस आवा कडवा विपाकवाळी संसारी वासनामां रति (आनंद) माने ? ते कहे छे—

जे मोहना उदयथी आर्त थयेल छे, अने कार्य अकार्यना विवेकने गणतो नथी, ते प्राणी जेना वडे वहु दुःख पमाय तेवा काम विषयोमां गृद्ध थाय छे, अथवा प्राणीओने कलेशरूप कृत्यने पोते रागद्वेषथी आकुल बनेल बालजीव प्रकर्षथी करे छे. अने तेवां पाप करवाथी तेना कर्मना फलरूप विपाकथी अनेकवार पोने वध पामे छे, (बुरे हाले मरे छे) अथवा पूर्वे बतावेला रोगो आवतां हवे पछी कहेवातां अकृत्यने बाल (मूर्ख) जीव करे छे, ते बतावे छे—गंडमाळा कोढ क्षय विगेरे रोग आवतां ते रोगोनी वेदनाथी गभराइने तेने दूर करवा माटे बीजा प्राणीओने संतापे छे, लावक विगेरे पश्चीनुं मांस खातां क्षय रोग मटशे, आवा कुचाक्योने सांभलीने जीववानी पोते आशाए प्राणीओने महा दुखरूप अकार्यमां पण वर्ते छे, पण आम विचारता नथी, के पोतानां करेलां पापोनां फल ऊदयमां आव्या विना रहे नहि, माटे उदयमां आवेल छे, तथा कर्म शांत थतां ते उपशम (शांत) थाय छे,

सूत्रम्

॥६६१॥

आचार्य

॥६६२॥

पण प्राणीओने दुःखरूप चिकित्सा (उपाय) करवाथी फक्त नवां पापोज बंधाय छे, ते कहे छे, के हे शिष्यो! विमल विवेकरूप ज्ञान चक्षुवडे धारीने जुओ! के ते रोगोने दूर करवा चिकित्सा विधिओ समर्थ नथी।

प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ?

उ—‘अलं’ हे शिष्य तुं! सारा नरसानो विवेकवाळो छे, माटे तारे एवी पाप चिकित्सानी जरूर नथी! किंच-वली प्राणीने दुःख देवारूप कृत्य बहु भयरूप होवाथी महा भय तरीके हे मुनि! तुं तेने जाण—(त्रण जगतना स्वभावने जाणे, माने ते मुनि छे) प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ? उ—कोइ पण प्राणीने तुं हणतो नहिं, कारण के एक पण प्राणीने हणतां आठे प्रकारनां कर्मो बंधाय छे, अने तेनो क्षय न कराय तो संसार भ्रमण करावे छे. माटे महाभय छे, अथवा उपर कहेला रोगो बहु प्रकारे जाणीने कुवासना ने आश्रयी ते जाणवा, अर्थात् कामो (कुचेष्टाओ) पोतेज रोगरूप छे, एवुं अतिशे जाणीने जेम आतुर बनेला कामचेष्टामां अंधा थएला जीवो बीजा प्राणीओने दुःख दे छे, (तेम तमारे न देवुं) ए प्रमाणे रोग अने काम चेष्टामां आकुळ थयेला सावद्य अनुष्टानमां प्रवर्त्तेलाने उपदेश आपवारूप महा भयरूप जीव हिंसा बतावीने तेवी हिंसा न करनारा गुणवान् (मुनिराजो) ना स्वरूपने बतावा प्रस्ताव रचीने बतावे छे:—

आयाण भो सुस्सूस ! भो धूयवायं पवेयइस्सामि इह खलु अतत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं आभसेषण
अभिसंभूया अभिसंजाया । अभिनिवुडा अभिसंवुद्धा अभिनिकंता अणुपुव्वेण

सूत्रम्

॥६६२॥

आचार
॥६६३॥

महामुणी (सू० १७९)

हे शिष्य ! [भो अव्यय आमंत्रणना अर्थमां छे] हुं तमने हवे पछी जे कहीश, ते वरोबर जाणो, अने सांभल्वानी आकांक्षा राखो ! (बीजी वार भो शब्द आ विषय महत्वनो छे एम बतावे छे) के तमारे अहिं प्रमाद न करवो, हुं धूतवादने कहु छुं आठ प्रकारना कर्मने धोइ नांखवा, ते धूत छे अथवा ज्ञाति [सगांना मोह]नो त्याग करवो, ते धूत छे. तेनो वाद (कथन) कहीश, ते तमारे एक चिंचे सांभल्वो आना संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे के, (धूतोववायं पवेयंति) एटले आठ प्रकारना कर्मने अथवा पोताने धोवानो उपाय तीर्थकर विगेरे कहे छे, ते उपाय क्यो छे ? ते कहे छे (इह) आ संसारमां [खलु वाक्यनी शोभा माटे छे] आत्मानो भाव ते आत्मता [आत्मपणु] ते जीवनुं अस्तित्व छे, अथवा पोतानां करेला कर्मनी परिणति छे, तेना वडे आ जीव समूह छे, पण अन्य लोकना मानवा प्रमाणे पृथ्वी विगेरे भूतोना कायाकारे परिणमवाथी जीवो बन्या नथी, अथवा प्रजापति (ब्रह्मा) ए बनावेल नथी एटले तेवा तेवा ऊँच नीच कुळमां पोताना पूर्वना कर्म संचयथी मेलवेला शुक्रशोणीत [वीर्य लोही माताना उदरमां] एकत्र यवाथी अनुक्रमे मनुष्यनी उत्पति छे, तेनो आ प्रमाणे क्रम छे.—

सप्ताहं कललं विन्द्या, त्ततः सप्ताहमर्बुदम् अर्बुदाज्ञायते पेशी, पेशीतोऽपि घनं भवेत् ॥ १ ॥

ते वीर्य लोहीनुं सात दिवसे कलल थाय, पछी अर्बुद थाय छे, पछी पेशी थाय, त्यार पछी घन थाय छे. तेमां ज्यांसुधी कलल थाय त्यांसुधी अभिसंभूत कहेवाय छे, पेशी थतां सुधी अभिसंजात कहेवाय छे, त्यार पछी सांगोपांग स्नायु शिर रोम विगेरे अनुक्रमे थतां अभिनिवृत्त छे, त्यारथी प्रसूत थतां अभिसंबृद्ध छे, अने धर्म श्रवणनी अवस्थामां आवतां धर्मकथा विगेरे निमित्त

सूत्रम्
॥६६३॥

आचारो
॥६६४॥

मेलवीने मेलवेल पुण्य पापपणाथी अभिसंबुद्ध जाणवा, त्यार पडी सत् असरुनो विवेक जाणनारा होय ते अभिनिष्क्रांत छे, त्यार पछी आचारांग सूत्र भणेला तथा तेनो अर्थ समजीने चारित्र पाळनारा अनुक्रमे प्रथम शिक्षक (शिष्य) गीतार्थ पछी क्षपक (तपस्त्री) पछी परिहारविशुद्धि चारित्रवालो तथा एकलविहारी जिन कल्पिक सुधी ऊंचे चढनारा मुनिओ वने छे. अने कोइ अभिसंबुद्ध पुरुष दीक्षा लेवा तैयार थ्यो होय तो तेन पोतानां सगां जे करे ते कहे छे.

तं परिक्रमंतं परिदेवमाणा मा चयाहि इय ते वयंति! छंदोवणीया अज्ञोववन्ना अकंदकारी जण-
गा रुयंति, अतारिसे मुणि [णय] ओहं तरए जणगा जेण विष्पजढा, सरणं तत्थ नो समेझ, कहं नु
नाम से तत्थ रमझ ?, एयं नागं सया समणुवासिज्ञासि तिवेमि(सू० १८०) धृताध्ययनोदेशकः ६-१

जे तत्व स्वरूप जाणीने गृहवासथी पराङ्मुख वनीने महा पुरुषोए आचरेला मार्गे जवा (दीक्षा लेवा) तैयार थ्यो होय तेने माता पिता पुत्र कलत्र विगेरे मळतां ते सगां तेने रोझने कहे छे, के अमने तुं न त्यज, एम दया उपजावतां बोले छे, तथा बीजुं शुं बोले छे, ते कहे छे, ताराछंद (अभिप्राय) ने अमे अनुकूल छीए, तारा उपर अमारो पूर्ण विश्वास छे, तेथी अमने न छोड, एम आक्रंद करीने ते सगां रडे छे, वळी आ प्रमाणे बोले छे, के “तेवो मुनि संसार तरी शकतो नथी के जे पाखंड (मुनिना बोध) थी ठगाइने मावापने त्यजीने दीक्षा ले.” आम कहे, तो पण जेणे संसारनुं तत्व जाण्यु छे, तेवो जे करे, ते कहे छे, जो के आ सगां मारा उपर पूर्ण प्रेमी छे, छतां पण ते स्वरे वस्ते शरण आपतां नथी, अर्थात् तेमनुं शरण स्वीकारतो नथी, शा माटे आ शरण नथी ? ते कहे छे, ते गृहवास बधा तिरस्कारने योग्य नरकना प्रतिनिधि समान अने शुभद्वारने परिघ समान छे, तेमां काण

सूत्रम
॥६६४॥

आचारा०
॥६६५॥

दाखो माणस रमणता करे? वळी गृहवास बधा द्वंद्व (रागद्वेष विगेरेनां जोडलां) रूप छे, तेमां जेनुं मोह 'कपाट' घटी [ओळुं थइ] गयेल छे, ते रति करे? [अर्थात् तेमनो मोह न करे] आ बधानो उपसंहार करे छे, के पूर्वे कहेलुं ज्ञान हंमेशां आत्मानी अंदर स्थापी राखजो, एवुं सुधर्मास्वामी शिष्यने कहे छे. धूतअध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

प्रथम उद्देशो कद्यो, हवे, बीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशापां सगांनो मोह छोडवा सूचव्युं. ते जो, कर्मनुं विधुनन थाय; तो, सफल थयुं कहेवाय; माटे कर्मनुं विधुनन करवा आ उद्देशो कहेवाय छे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

**आउरं लोगमायाए चइत्ता पुढवसंजोगं हिच्चा उवसमं वसित्ता बभच्चेरंसि वसु वा अणुवसु वा
जाणित्तु धम्मं अहा तहा अहेगे तमचाइ कुसीला (सू० १८१)**

लोक ते, मातापिता, पुत्र, कलत्र विगेरे स्नेहना संबधथी वियोग थतां पीडाय छे, अथवा तेमनुं बगडतां पीडाय छे, अथवा संसारी-जीवोनो समूह कामरागमां पीडातो होय; तेने ज्ञानचडे ग्रहणकरीने (समजीने) तथा पोतानां मातापिता विगेरेनो संबंध छोडीने तथा, उपशमं मेलबीने ब्रह्मचर्यमां वसीने उत्तम साधु केवो होय? ते कहे छे:—वसु ते, द्रव्य छे. ते द्रव्यवाळो अर्थात् कषायरूप-काळाश विगेरे मळने दूर करी पोते वीतराग बने छे, अने तेथी उलटो, अनुवसु सराग छे. अथवा वसु ते, साधु छे.

सूत्रम्
॥६६५॥

आचार
॥६६६॥

अने अनुवसु ते, श्रावक छे. तेमज, कहुं छे के:—

बीतरागो वसुर्ज्ञयो, जिनो वा संयतोऽथवा; सरागो हृत्तु वसुः प्रोक्तः, स्थविरः श्रावकोऽपिवा;
बीतराग ते वसु जाणवो, पछी ते जिन होय अथवा संयत [साधु] होय, अने सराग होय, ते अनुवसु कहो छे, अथवा
बुद्धो अथवा श्रावक पण होय छे.

तथा श्रुतचारित्ररूप-धर्म जाणीने पछी यथायोग्यपणे स्वीकारीने पण पछी केटलाक जीवो प्रबळ मोहना उदयथी तेवी भवि-
तव्यताना योगे तेवा उत्तम धर्मने पाळवा शक्तिवान थता नथी, ते केवा छे? उत्तर-कुशीला एटले खराब शील (आचार) वाला
छे, एटले जेओ धर्म पाळवायां अशक्त छे, तेर्थीज तेओ कुशीलवाला छे, एवा बनीने शुं करे छे? ते कहे छे:—

वत्थं पदिग्गंहं कंबलं पायपुण्ड्रणं विउसिज्जा, अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुराहियासए
कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्तेण वा अपरिमाणाए भेए, एवं से अंतराएहिं कामेहिं आके-
वलिएहिं अवइन्ना चेए (सू० १८२)

करोडो भवे पण दुःखेथी मेळवाय, तेवो मनुष्य जन्म पामीने पूर्वे कदीपण न मेळवेल एवी संसार समुद्रथी पार उतरवा
समर्थ नाव समान बोधि (सम्यक्त्व) मेळवीने मोक्ष वृक्षना बीज समान सर्व विरति लक्षणवालुं चारित्र स्वीकारीने पाढा कामदेवनो
मार दुःखेथी निवारण थाय तेवो होवाथी, मन ढीलुं थवाथी, इंद्रियोनो समृह लालचु थवाथी अनेक भवना अभ्यासथी मेळवेली

सूत्रम्
॥६६६॥

आचार
॥६६७॥

विषयनी मधुरताथी प्रबळ मोहनीय कर्मना उदयथी, अशुभ वेदनीयनो भाव एकदम प्रकट थवाथी, अयशःकीर्ति उत्कटपणे थवाथी, आयति (भविष्यनुं हित) ने तरछोडीने कार्य अकार्यने विचार्या विना महादुःखनो सागर स्वीकारीने वर्तमान सुखने देखनारा कुलमां वर्तातो आचार नीचे नांखीने (उत्तम रत्नरूप) चारित्रने त्यजे छे !!! अने तेनो त्याग धर्मेपकरण त्यागवाथी थाय छे, ते बतावे छे. वस्त्र ए शब्दथी क्षौमिक [मूत्रनां] कल्प (वस्त्र) लीधो छे, तथा पात्रां अने उननी कांबळ अथवा पात्रांनो नियोग तथा रजोहरण ए धर्मेपकरणोने बेदरकारीथी त्यजीने कोइ साधु फरीथी देशविरति [श्रावकनां व्रत] स्वीकारे छे, कोइ तो फक्त सम्यक्दर्शनज राखे छे, कोइ तो तेनाथी पण भ्रष्ट थइ जाय छे, (वटली जाय छे.)

प्र० आवुं दुर्लभ चारित्र पामीने पाढुं केम तजी दे छे !

उ—परीषहो दुःखे करीने सहन थाय छे, तेथी क्रमेकरीने अथवा सामटा परिषहो आवतां सहन न करी शकवाथी परिषहथी भागेला मोहना परवशपणीथी दुर्गतिने आगळ करीने मोक्षमार्ग (उत्तम चारित्र) ने त्यजे छे !!! ते रांकडाओ भोगो भोगवता माटे त्यजे छे, छतां पापना उदयथी शुं थाय ? ते कहे छे.—

विरुप कामोने पोताने वहाला मानी स्वीकारतो भोगना अध्यवसायवाळो बनवा छतां, पोतानां अंतरायकर्मना उदयथी तेज क्षणे प्रवर्ज्या मुक्या पछी अथवा भोगो प्राप्त थया पछी, अंतर्मुहूर्तमां, अथवा कंडरीक राजर्षिनी माफक चारित्र मुक्या पछी एक रात दिवसमां अपरिमाण (वधारे खावाने) लीधे शरीर भेदाय छे, आ प्रमाणे दुराचारना अध्यवसायथी, अथवा कुर्कम सेवीने शीघ्र मरण पामताने पोताना आत्मा साथे चारित्र पाळवारूप धर्म देहनो भेद यतां तेबुं शरीर अने पचेन्द्रियपणुं अनंताकाळे पण

सूत्रम्
॥६६७॥

आचा०

॥६६८॥

मळतुं नथी, (अर्थात् निगोदमां अनंतकाल ध्रमण करे छे.) एज विषयनो उपसंहार करवा कहे छे. ‘एवं’ ए प्रमाणे भोगनो अभिलाषी अंतरायवाळा काम भोगो जेमां अनेक प्रकारनां विघ्नो रहेलां छे, तेने चाहे छे, ते भोगो (न केवळ ते अकेवळ तेमांथी याय ते.) अकेवळीक, (द्वंद्व-जोडकांवाळो) छे. जेमनो प्रतिपक्ष पण छे, अथवा असंपूर्ण भोगो छे. जेने मेलववा पाढा संसारमां पडे छे, अथवा (कामभोगने बीजीना बदले त्रीजीनो अर्थ लइए; तो,) ते कामभोगोवडे भोगना अभिलाषीओ अतृप्त बनीनेज (वधारे भोगसुख लेवा जतां) शरीरनो नाश करे छे ज्यारे, ते रांको आम मरण पामे छे त्यारे, बीजा उत्तम साधुओ जेमनो मोक्षसमीप छे, तेवा क्यांय पण, कोइपण रीते कोइपण वखत चरणनो परिणाम आवतां लघुकर्मनां कारणथी दरेकक्षणे चढताभाववाळा बने छे, ते बतावे छे.

अहेगे धम्ममायाय आयाणप्पभिइसु पणिहिए चरे, अप्पलीयमाणे दढे सब्बं गिर्दि परिन्नाय, एस पणए महामुणी, अइअच्च सब्बओ संगं न महं अतिथित्ति इय एगो अहं, अस्सिं जयमाणे इत्थ विरए अणगारे सब्बओ मुंडे रीयंते, जे अचेले परिवुसिए संचिकखइ ओमोयरियाए, से आकुट्टे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकत्थ अदुवा पकत्थ अतहेहिं सदफासेहिं इय संखाए एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणे परिव्वए जे य हिरी जेय अहिरीमाणा (सू० १८३)

सूत्रम्

॥६६८॥

आचारा०
॥६६९॥

उपर बतावेला चडता परिणामवाळा साधुए चारित्र लीधापळी विशुद्ध परिणामथी तेमनो मोक्ष जलदी थवानो होवाथी श्रुत-चारित्ररूप-धर्म पामीने वस्त्र-पात्र विगेरे धर्मोपकरण स्वीकारीने धर्मकरणमां समाधिवाळा बनी परिषह सहन करीने सर्वज्ञ-प्रभुए कहेला धर्मने पाळे छे, अने पूर्वे बतावेलां प्रमादनां सूत्रो अप्रमादना अभिप्राय प्रमाणे कहेवां(अर्थात् ते दरेक प्रकारे चारित्र निर्मल पाळी ज्ञान भणीने सम्यक्त्वमां दृढ थड अशुभकर्मने क्षय करी नाखे छे.) कहुं छे के:—

यत्र प्रमादेन तिरोऽप्रमादः, स्याद्वाऽपि यत्नेन पुनः प्रमादः । विपर्ययेणापि पठंति तत्र, सूत्राण्यधीकारवशाद् विधिज्ञाः ॥ १ ॥

ज्यां प्रमादवडे सूत्र कहेवायां होय; त्यां विरोधि अप्रमाद होवाथी अप्रमादना वर्णननां सूत्रो अधिकारना वशथी विधिने जाणनारा विपर्ययवडे भणे छे (कहे छे.) अथवा, अप्रमादनां कही ते यत्नवडे पाळां प्रमादनां (सूत्रो) कहे छे:—ते उत्तम साधुओ वक्ती केवा थइने धर्म आचरे छे? ते कहे छे:—कामभोगोमां अथवा मातपिता विगेरे लोकमां मोह न करनारा, अने धर्मचारित्रमां एटले तपसंयम विगेरेमां दृढता राखनारा धर्म आचरे छे. वक्ती, वधा प्रकारनी भोगाकांक्षाने इ—परिज्ञावडे दुःखरूप जाणीने प्रत्याख्यान-परिज्ञावडे त्यागे छे, ते भोगाकांक्षा त्यागवाथी जे गुणो थाय; ते कहे छे:—‘एष’ ए काम पिपासानो त्यागनारो प्रकर्षथी नमेलो ‘प्रह’ प्रणमेलो संयममां, अथवा कर्म धोवामां (लीन थयेलो) महामुनि बने छे, पण तेवा गुणथी रहित होय; ते महामुनि बनतो नथी, ‘किंच’ वक्ती, सर्वे प्रकारे पुत्रकलत्रादिनो संबंध, अथवा विषयाभिलाषनो मोह उल्लंघी (त्यागीने) शुं भावना भावे? ते कहे छे:—‘आ संसारमां पडतां माहं अवलंबन (आधारभूत) थाय तेबुं कंइपण नथी; अने तेना अभावथी उपर प्रमाणे हुं संसार-उद-

सूत्रम्
॥६६९॥

आचा०

॥६७०॥

रमां एकलोज छुं. तेम, हुं पण कोइनो नथी. आ भावना भावनारो जे करे; ते कहे छे. ‘अत्र’ आ मौर्निंद्र (जिनेश्वरना) प्रवचनमां सावद्य-अनुष्ठान त्यागीने दश प्रकारनी साधु-समाचारी पालवामां यतनावाळो थाय. ‘कोऽसौ?’ कोण थाय? ते कहे छे. अनगार-प्रविज्जित [दीक्षा लीधेलो] होय; ते एकत्वभावना भावतो रहे. [ते पछीना मूत्रमां कहे छे. एटले, आ क्रिया जोडला मूत्रमां पण लेवी.] ‘किंच’ वळी, ते सर्वे प्रकारे द्रव्यथी अने भावथी मुंड बनीने ‘रीयमाणः’ संयमअनुष्ठानमां वर्ते छे.
प्रः—केवो बनेलो?

उः—जे अचेल ते अल्प वस्त्रवाळो अथवा जिनकलिक संयममां रही योग्य विहार करनारो अंतप्रांत आहार खानारो बने छे, ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते कहे छे, अवमोदरी (ओळुं भोजन) करे, अने उनोदरी तप करतां कदाच प्रत्यनीक [जैनधर्मना विरोधीओ जेओ ग्राम कंटक छे तेमनाथी पीडाय, ते बतावे छे, ‘स’ ते मुनि कुवचनोथी आक्रोश करायलो, दंडा विगेरेथी मरातो, वाळ खेंची काढवाथी लुंचित करेलो (दुःखी थया छतां) पोते पोताना पूर्वकर्मथीज आ उदयमां आव्युं छे, एम मानतो सम्यक् प्रकारे सहन करतो विहार करे; तथा आवी भावना भावे,

“ पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माणं पुञ्चिदुच्चिन्नाणं दुष्पिकंताणं वेदयित्ता मुक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता ”
पोते पूर्वे दुष्ट रीते जे कृत्यो आचर्या होय, अने दुष्ट कृत्य कर्यापछी तेने आलोचना के तपश्चर्याथी खेरव्यां न होय, ते दुष्ट पापो कांतो भोगवतां छुटे, अथवा तपश्चर्या करवाथी दर थाय छे.

सूत्रम्

॥६७०॥

आचा०

॥६७१॥

प्र०—वचनो वडे केवी रीते आक्रोश करे छे ?

उ—‘पलियं’ ति ते साधुए पोते गृहस्थावस्थामां वणकर विगेरेनुं नीच कृत्य (धंधो) कर्या होय तो ते याद करीने तेनी निंदा करे छे, ते आ प्रमाणे-कोलिक ! हे साधु बनेला ! तुं पण मारी सामे बोले छे ! अथवा जकार चकार विगेरे शब्दोथी बीजी रीते बोलीने निंदे छे ! ते हवे बतावे छे.—‘अतथ्यैः’ तहन जुठां कलंकना शब्दोवडे तिरस्कार करे जेमके “तुं चोर छे ! तुं परदार लंपट छे, आवां असत्य आळो जे साधुने करवा योग्य नथी तेनो कानमां स्पर्श थतां (साधुने क्रोध चढे) तथा कलंक चडाववा साथे हाथ पग छेदवा विगेरेथी [दुख थाय तेवा समये] आ मारा पोताना करेला दुष्ट कृत्योनुं फळ छे एम चिंतवीने विगेरे अथवा आवुं चिंतवे.

पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उप्पन्ने उवसग्गे सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ, तंजहा-जकखाइटे अयं पुरिसे १, उम्मायपत्ते अयं पुरिसे २, दित्तचित्ते अयं पुरिसे ३, मम च णं तब्भवेअणीयाणि कम्माणि उदिन्नाणि भवंति जन्नं एस पुरिसे आउसइ वंधइ तिष्पइ पिट्टइ परितावेइ ४, ममं च णं सम्म सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स एगं तसो कम्मणिज्जग हवइ ५, पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहे उवसग्गे जाव अहियासेज्जा, जाव ममं च णं अहियासेमाणस्स बहवे छउमत्था समणा निगंथा उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहिस्सति जाव अहियामिस्संति इत्यादि ॥

पांच स्थानमां छद्मस्थ साधुओ उपसर्गेने सहन करे क्षमा राखे क्रोध न करे हृदयमां शांति राखे, तेओ विचारे के आ अपमान करनारो पुरुष यक्षथी वेरायलो छे, आ पुरुष उन्माद पामेलो छे. आ पुरुष अहंकारी छे, मारे ते भवमां वेदवानां कर्म

सूत्रम्

॥६७१॥

आचारो
॥६७२॥

उदीरणामां आववानां छे तेथी आ पुरुष मने आक्रोश करे छे, वांधे छे तपे छे पीटे छे, संतापे छे, पण मने सारी रीते सहन करवाथी एकांतथी सकाम निर्जरा थाय छे, केवली भगवान तेज पांच स्थानमां आवेला परीसह उपसर्ग सहन करे तेओ जाणे छे. के, केवली ज्यारे आवां दुःख सहन करे छे, त्यारे घणा छद्मस्थ साधुओ निर्ग्रथो आवेला परीसह उपसर्गेने तेमना दृष्टांतथी सारी रीते सहन करशे अने आत्मामां शांति राखशे आ उपरथी साधुए सार ए लेचो के कोइ गांडो थयेलो बीजाने मारे तो तेना उपर दया आवे छे. तेज प्रमाणे साधुने दुःख देनार उपर साधुने दया लाववी जोइए, आ प्रमाणे जे परीसहो आवे ते अनुकूल प्रतिकूल एम बे भेदे छे. ते बन्नेमां रागद्वेष कर्या विना शांति राखीने विचरे, अथवा बीजी रीते परीसह बे प्रकारना बतावे छे. जे सत्कार अने पुरस्कार साधुने आनंदकारी छे अने प्रतिकूल मनने अनिष्ट छे, अथवा लज्जारूप याचना करवी अने अचेल विगेरे छे, अने लज्जा विनाना ठंड ताप विगेरे छे, ए प्रमाणे बन्ने प्रकारना परीसहोने सम्यक् प्रकारे सहन करतो विचरे, वळी

चिच्छा सबं विसुक्तियं फासे समियदंसणे, एए भो णगिणा वुत्ता जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो आणाए मामगं धम्मं एस उत्तरवाए इह माणवाणं वियाहिए, इत्थोवरए तं झोसमाणे आयाणिं जं परिन्नाय यरियाएण विर्गिंचइ, इह एगेसिं एगचरिया होइ तत्थियरा इयरेहिं कुलेहिं सुझेस-णाए सठंवेसणाए से मेहावी परिव्विए सुबिंभ अदुवा दुबिंभ अदुवा तत्थ भेरवा पाणा पाणे किले-

सूत्रम्

॥६७२॥

आचा० ६७३॥

संति ते फासे पुढो धीरे अहियासिज्जासि त्तिवेमि (सू० १८४) धृताध्ययने द्वितीयोद्देशकः ॥ ६-२ ॥

बधा परिसहोनी थती वेदनाने सहन करी दुःखने अनुभवतो छतां चित्तमां शांति राखे. प्रश्न. केवो वनीने ? उ० सम्यकप्रकारे दर्शन पामेलो ते समित दर्शनवाळो अर्थात् सम्यगृष्ट्यी बने. ते परिसहोने सहन करनार साधुओ केवा होय ते कहे छे, ते निष्किञ्चन निर्ग्रीथ (भावनग्र) जीनेश्वरे बतावेला छे. आ मनुष्य लोकमां आगमन धर्मरहित छे. अर्थात् घर छोडीने दीक्षा लीधा पछी पाढा वेर जवानो इच्छा करता नथी, पण पोतानी दीक्षामां लीधेली प्रतिज्ञा पूरीपाळी पंच महाव्रतनो भार वहन करे छे, वळी जेनावडे आज्ञा कराय ते जिनेश्वरनुं वचन तेज मारो धर्म छे. तेथी तेने वरोवर पाले. अथवा धर्मनुं अनुष्ठान पूरेपुरुं करे, अने विचारे के धर्म तेज मारे सार छे, बाकी बधुं पारकुं [असार] छे, एथी हुं तीर्थकरना उपदेश वडे विधि अनुसारे वरोवर क्रिया करुं प्र-धर्म केवीरीते आज्ञाथी पळाय ? ते कहे छे, 'एष.' आ बतावेलो उत्तर (उल्कष्ट) वाद अहिं मनुष्योने कहेलो छे. 'किंच' वळी आ कर्म दूर करवाना उपायरूप संयममां समीप (अंदर) रत (लीन) थइने आठ प्रकारना कर्मने झोपतो [दूर करतो] धर्मने पाले वळी बीजुं शुं करे ? ते कहे छे.—

जेनावडे ग्रहण कराय ते आदानीय (कर्म) छे. तेने जाणीने मूळ उत्तर प्रकृतिनुं विवेचन करे, अर्थात् साधुपणुं निर्मल पाळीने क्षय करे, अहीं संपूर्ण कर्म दूर करवामां असमर्थ जे बाह्यतप छे, तेने आश्रयी कहे छे, आ जैनसिद्धांतमां केटलाक शिशील [ओछां] कर्मवाळाने एकचर्या एटले एकल विहारनी प्रतिमा अंगीकार करेली होय छे, तेमां जुदी जुदी जातीना अभिग्रहो तप तथा चारित्र

सूत्रम्
॥६७३॥

आचार

॥६७४॥

संबंधी धारण करेला होय छे. तथी प्राभृतिकाने आश्रयी कहे छे, ते एकाकी विहारमां बीजा सामान्य साधुथी विशेष प्रकारे अंत-प्रांत कुलोमां दश प्रकारनी एषणा दोपरहित आहार विगेरेनी शुद्ध एषणावडे तथा सर्व एषणा ते वधी एषणा. आहार विगेरे संबंधी उद्गम उत्पाद तथा ग्रास एषणा संबंधी परिशुद्ध विधिए संयममां वर्ते छे, वहुपणामां एक देशपणाने कहे छे, ते मर्यादामां रहेलो मेधावी साधु संयममां वर्ते वळी ते तेवां बीजां फुलोमां आहार सुगंधवाळो के दुर्गंधवाळो होय, त्यां रागद्वेष न करे वळी त्यां एकलविहार करतां मसाणमां प्रतिमा ए रहेतां यातुधान (राक्षस) विगेरेण करेला शब्दो भयकारक लागे; अथवा बीभत्स प्राणीओ दीप जीभवाळां [वाघ विगेरे] बीजा जीवोने पीडे; संतापे छे अने तेने पण संतापे तो, तुं तेवा विषय-दुःखना स्पर्शेने सम्यकप्रकारे धैर्य राखीने सहन कर; एवं सुधर्मास्वामि जंबूस्वामिने कहे छे:—

बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजो उद्देशो कही त्रीजो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. बीजामां कर्मधोवानुं बताव्युं; अने ते उपकरण शरीरना विधूनन विना न थाय. माटे हवे, उपकरण विगेरेनुं विधूनन कहे छे. आवा संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

एयं खु मुणी आयाणं सया सुयक्खायधम्मे विहूयकप्पे निज्ज्ञोसहता, जे अचेले परिवुस्तिए तस्स
णं भिक्खुस्स नो एवं भवह-परिज्ञणे मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि सुत्तं जाइस्सामि सूइं जाइस्सामि

सूत्रम्

॥६७४॥

आचार
॥६७५॥

संधिस्सामि सीविस्सामि उक्तिस्सामि वुक्तिस्सामि परिहिस्सामि पाउणिस्सामि, अदुवा तत्थ परिक्रमंतं भुजो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति दंसमसग फासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरूबरूवे फासे अहियासेइ अचेले लाघवं आगममाणे, तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा सब्ब ओ सववत्ताए समत्तमेव स-मभिजाणिज्जा, एवं तेसिं महावीराणं चिररायं पुद्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाण पास अहिय-सियं (सू० १८५)

आ उपर बतावेलुं अथवा हवे पळी, कहेवातुं (जे ग्रहण कराय ते आदान.) ते कर्मनुं उपादान छे, अने ते कर्म उपादान थवानुं कारण साधुने जोइतां धर्मउपकरणथी अधिक प्रमाणमां हवे पळी कहेवातां वस्त्र विगेरे छे, ते वधारानां वस्त्र विगेरेने मुनिए त्याग करी देवा.

प्रः—ते मुनि केवो होय छे.—उः—ते सदाए सारी रीते वर्णवेला धर्मवाळो छे. एटले, तेने संसार-भ्रमणनो डर होवाथी पोताने अर्पण करेलां महाब्रतनो भारवाही छे, तथा विधूत (क्षुणण) एटले, सारी रीते जेणे कल्प—(साधुनो आचार) आत्मामां फरस्यो छे, तेवो मुनि आदान—(कर्मने) खेरवशे.

सूत्रम्
॥६७५॥

॥६७५॥

आचा०

॥६७६॥

प्रः—ते वस्त्र विगेरे आदान केवां होय; के ते दूर करवां पडे?

उः—(अल्प-अर्थमां नकार छे. जेमके—आ साधु अज्ञान छे. एटले, अल्पज्ञानवालो छे, ते प्रमाणे अर्थ लेतां) साधु अचेल एटले, अल्प वस्त्र राखनारो संयममां रहेलो छे, तेवा साधु (भिक्षु) ने आबुं विचारबुं न कल्पे के, मारुं वस्त्र जीर्ण थइ गयुं छे. हुं अचेलक थइश. मने शरीरनुं रक्षक वस्त्र नथी; तेथी, ठंड विगेरेथी मारुं रक्षण केम थशे? तेथी हुं विना वस्त्रनो थयो हुं. तेथी कोइ श्रावकने त्यां जइ वस्त्र याचीलाबुं; अथवा ते जीर्णवस्त्रने सांधवाने सोय-दोरो याचीश; अथवा ज्यारे सोय-दोरो मळशे; त्यारे, जीर्णवस्त्रनां काणांने सांधीश; फाटेलांने सीवीश; अथवा ढुकां वस्त्रने जोडी मोडुं बनावीश; अयवा, लांवानो ढुकडो फाडी सरखुं अथवा, नानुं बनावीश.

एम योग्य बनावीने हु पहेरीश; तथा, शरीर ढांकोश. विगेरे, आर्त्तध्यानथी हणायलो अंतःकरणनी वृत्ति धर्ममां एकचित्त राखनार आत्मार्थी साधुने वस्त्र जीर्ण थवा छतां, अथवा होय नहीं; तोपण भविष्य संबंधी (चिंता) न थाय.

अथवा आ सूत्र जिनकल्पीओने आश्रयी कहेलुं छे. एम व्याख्या करवी कारण के ते मुनिओ अचेल (वस्त्र रहित) होय छे. तथा तेमना हाथमांथी तेमनी तपोबळनी लब्धिने लोधे पाणीनुं बिंदु पण न गळतुं होवार्थी तेओ पागिपात्र कहेवाय छे.

पाणि एटले, हाथ, अने हाथमांज भोजन लइने करे छे. तेमने पात्रां विगेरेनो सात प्रकारनो नियोग होतो नथी; [कारण के तेवो तेमनो अभिग्रह छे.] तथा, कल्पत्रय पण त्यागेल छे. फक्त, तेमने रजोहरण, तथा मुखवस्त्रिका (ओघो, अने मुहुपत्ति) मात्र होय छे तेवा अचेल जिन-कल्पीमुनिने उपर कहेल आर्त्तध्यान वस्त्र फाटवा-सांधवा विगेरे संबंधी न होय. (कारण के, धर्मविस्त्र

सूत्रम्

॥६७६॥

आचा०

॥६७७॥

तेना अभावथी धर्म-फाटवुं विगेरेनो अभाव छे. ज्यारे, धर्मी होय; त्यारे, धर्म शोधबो; ए न्यायनो उत्तम मार्ग छे. तथा जिन-कल्पी मुनिने आवुं पण न होय. के हुं बीजुं नवुं वस्त्र याचीश; ए वधुं पूर्वमाफक जाणवुं.

वक्ती, जेने जिन-कल्पी जेवी लब्धि न होय; तेवो स्थविर कल्पि-साधु हाथमांथी पाणी विगेरेनुं बिंदु नीचे पडे छे. तेथी, तेओ पात्रना नियोगयुक्त होय छे, अने वस्त्रनां कल्प प्रमाणे त्रणमांथी कोइपण एक वस्त्र होय; तेवो मुनि पण वस्त्र विगेरे जीर्ण थवाथी के, नाश थवाथी नवुं न मळे; त्यां सुधी आर्तध्यान न करे; तथा, जे अल्पपरिकर्मी (निस्पृही) होय; तेवाने सोय-दोरो फाटेलाने सांधवा माटे पण शोधवानुं न होय, (जेने उपदेश माटे परोपकारनी विशेष लागणी करतां आत्मार्थ साधवा माटे एकां-तवास होय; तेवाने फाटेलुं के, वस्त्र न होय; तेनी थुं परवाह छे? जेमके:—

धैयै यस्य पिता क्षमा च जननी शांतिश्चिरंगेहिनी । सत्यं सूनुरयं दया च भगीनी भ्राता मनः संयमः ॥

शश्या भूमितलं दिशोपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं । एते यस्य कुटुंबिनो वद सखे कस्माद्यं योगिनां ॥ १ ॥

धैयै पिता, क्षमा माता, धणा काळनी शांति वहु, सत्य पुत्र, दया बेन, मन संयम भाइ छे, पथारी जमीनमां छे, दिशा वस्त्रो छे. ज्ञानअमृत भोजन छे, तेवा कुटुंबवाला योगीने कोनो भय छे? एवुं एक मित्र बीजा मित्रने पूछे छे.

अचेल अथवा वस्त्रवालाने तृण (डाभना कांटा) वीगेरे लागतां थुं करे ते कहे छे. तेवो अचेलपणे रहेतां जीर्णवस्त्र आर्त-रौद्र [अप]ध्यान न थाय; अथवा आ थाय. ते अचेलपणे वर्ततां; ते साधुने अचेलपणाना कारणथी कोइ गामडां विगेरेमां शरीरना रक्षणना अभावथी घासना संथारे सुतां घासना कांटानो कडबो अनुभव दुःख देनारो थाय; अथवा घास पोते खुंचे तेबुं होय; तो,

सूत्रम्

॥६७७॥

आचार्य
॥६७८॥

शरीरमां दुःख दे, तेवा समये साधु दीनतारहित मन राखीने तेने सहे.

तेज प्रमाणे शियाळामां टंडा देशमां वस्त्रविना ठंड सहेवी पडे; तथा, गग्म देशमां उनाळामां वस्त्रविना तडको सहेवो पडे; तथा डांस-मच्छरोना डंख लागे. आ बधा परिसहो एकसाथे डांस-मच्छर, तथा घासना कडवा फरसनां दुःख साथे आवे छे. अथवा ठंड-ताप विगेरे परस्पर विरुद्ध दुःख छे. तेमांथी कोइएक अनुक्रमे आवे. (बहुवचननो मूत्रमां प्रयोग छे, तेथी जाणबुं के, ते दरेक तीव्रमंद के, मध्यम अवस्थावालो फरस छे.) ते हवे बतावे छे.

निरूप [बीभत्स] ते, मनने दुःख देनार, अथवा जुदी जुदी जातना मंद विगेरे भेदना स्वरूपवाला विरुपस्प जे फरसो छे, तेनाथी थतां दुःखो पडे; अथवा, ते दुःख आपनार घास विगेरेना स्पर्शी हाँय; ते बधांने चित्त स्थिर करीने दुर्धर्यान छोडीने सहन करे.

प्रः—कोण सहन करे.—उः—उपर बतावेल वस्त्ररहित अल्प-वस्त्रवालो, अथवा अचलन-स्वरूपवालो (प्रतिमाधारी) सम्यक्पकारे सहे.

प्रः—शुं विचारीने सहे? उ० जे लघु गुण छे तेनो भाव लघुता छे. ते द्रव्यथी अने भावथी वे प्रकारे लाघवपणुं छे. तेने जाणनारो समताथी परिसहो तथा उपसर्गीने सहे छे. आ संवंधे नागार्जुनीया कहे छे.

“ एवं खलु से उवगरणलाघवियं तवं कम्मकखय कारणं करेऽ ॥ ”

ए प्रमाणे उपकरणना लाघवपणाथी कर्मने क्षय करनारो तप निश्चयथी उत्तम साधु करे छे.

ए प्रमाणे कहेला कर्म वडे भाव लाघव माटे उपकरण लाघवनो तप करे छे, ए कहेवानो सार छे.

सूत्रम्

॥६७८॥

आचारा०
॥६७९॥

वल्ली ते उपकरणना लाघवथी कर्म ओळां थाय छे, अने कर्म ओळां थवाथी उपकरण लाघव मैलवतां तुण विगेरेना स्पर्शो
सहेतां काय कलेशरूप बाहू तप पण थाय छे. तेथी ते साधु सारी रीते सहे छे. आ मारुं कहेलुं नथी, एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे.
के जे में कहुं अने हवे पछी कहीश. ते बधुं भगवान महावीरे पोते प्रकर्षथी अथवा शरुआतमां कहेलुं छे. प्र—जो भगवान महा-
वीरे कहुं छे, तेथी शुं समजबुं? उ—उपकरण लाघव अथवा आहार लाघव तपरूप छे. एवुं जाणीने शुं करबुं ते कहे छे. द्रव्यथी
क्षेत्रथी काळथी अने भावथी तेमां लघुता राखवी जेमके द्रव्यथी आहार उपकरणमां लाघवपणुं राखबुं (एटले जरुर जेटलांज
राखवां) क्षेत्रथी बधां गाम विगेरेमां बोजारूप न थवुं. काळथी दीवस अथवा रातमां अथवा दुकाळ विगेरे खराव वरवतमां शांति
राखनी तथा भावथी कुत्रिम अने मलिन विगेरे कुभाव त्यागवा (अर्थात् पोते कष्ट सहन करीने मनमां कुभाव न करतां चारित्र
निर्मळ पाळबुं. तथा गृहस्थोने के बीजा जीवोने कोइपण रीते पीडाकारक न थवुं.)

सम्यक्त्व एटले प्रशस्त अथवा शोभन तत्व अथवा एक संगतवाळुं(जेनाथी एकांत हित थाय तेवुं)तत्व ते सम्यक्त्व छे. कहुं छे के:-

“ प्रशस्तः शोभनश्चैव, एकः सङ्गत एव च । इत्येतौरूप सृष्टस्तु, भावः सम्यक्त्वमुच्यते ” ॥ १ ॥

प्रशस्त शोभन एक संगतवाळो जे भाव थाय ते सम्यक्त्व छे (भावार्थ उपर आवेल छे.)

आवुं सम्यक्त्वज अथवा समत्वज सारी रीते समजे विचारे, के पोते अचेल होय अने बीजो एक वस्त्र विगेरे राखनारो होय,
तेने पोते निंदे नहिं. कहुं छे के:-

“ जोऽवि दुव्यतिक्त्वथो एगेण अचेलगो व संथरइ । ण हु ते हीलंति परं सब्बेऽवि य ते जिणाणाए ” ॥ १ ॥

सूत्रम्
॥६७९॥

आचा०

॥६८०॥

जे वे वस्त्र धारण करे, त्रण वस्त्र धारण करे, अथवा एक वस्त्र रखे, अथवा अचेलक फरे, पण ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञामां वर्ते छे, तेथी एक बीजाने निंदे नहीं.

“ जे खलु विसरसकष्ठा संघयणधियादिकारणं पत्प । णऽत्रमन्नइ ण य हीणं अप्पाणं मन्नइ तेहिं ॥ २ ॥

जेओ जुदा जुदा कल्पवाळा छे, तेओ शरीर संघयण तथा ओछी वधती धैर्यताने लीधे छे तेथी एक बीजाने अपमान न करे, तेम ओछापण न माने, (एटले पोतानी शक्ति वधारे होय तो ओछां वस्त्रथी निभाव करे, पण वधारे राखनारने निंदे नहीं, तेम कारण पडतां वधारे वस्त्र राखवां पडे तो पोते दीनता न लावे के हुं पतित लुं. पण जस्त जेटली वारज मंदवाड विगेरेमां वधारे वस्त्र वापरे.)

सब्बेवि जिणाणाए, जहाविहिं कम्मखवणट्टाए; चिहरंति उज्जया खलु, सम्म अभिजाणइ एवं ॥ ३ ॥

ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञामां कर्मक्षय करवाने यथाविधि रहेला छे, पण तेओ योग्य विहार करता विचरे छे, एवुं निश्चयथी पोते मनमां उत्तम साधु जाणे छे.

अथवा तेज लाघवपणाने समजीने सर्वे प्रकारे द्रव्यक्षेत्र काळ भाव विचारीने आत्मावडे सर्वथा नाम विगेरे (चार-निक्षेपार्थी) सम्यक्त्वनेज सारी रीते जाणे. अर्थात् तीर्थकर गणधरोना उपदेशथी दरेक क्रिया बरोबर करे. आ वधां अनुष्ठानो जेम तावने दुर करवा माटे तक्षक नागनां माथा उपर रहेल मणीरत्न लाववा रूप अशक्य उपदेश नथी; पण बीजा घणा उत्तम साधुए घणो काळ सुधी एवुं उत्तम संयम पाल्युं छे. ते बतावे छे के आ प्रमाणे ओछां वस्त्र अथवा बीलकुल वस्त्र विना रहीने घास

सूत्रम्

॥६८०॥

आचा०

॥६८१॥

विगेरेना कठोर फरसोनां दुःखोने सहन करनार महावीर (बलवान योद्धा) पुरुषोए बधा लोकने चमत्कार पमाडनारा घणो काळ आखी जींदगी सुधी अनुष्टान कर्यु छे. तेज विशेषथी कहेछे. (चोराशी लाख, ने चोराशी लाखे गुणतां जे संख्या थाय; तेटलां वरसोनुं पूर्व थाय छे.) तेवां घणां पूर्व सुधी संयम—अनुष्टान पाल्ता मुनिओ विचर्या छे. पूर्वनी संख्या ७०, ५६०००-०००००००० वर्षनी छे. आ वात रिखबदेव भगवानना वखतथी ते दशमा शीतलनाथ सुधी पूर्वेनां आउखा हतां; तेने आश्रयी छे.

(आठ वर्ष उपरनी उमरना शिष्यने दीक्षा अपाय; अने तेनुं लांबु आयुष्य होय तेने आश्रयो छे.) त्यारपछी, श्रेयांसनाथ भगवानथी वर्षनी संख्यानी प्रवृत्ति जाणवी; तथा भव्य जीवो जे मुक्ति जवाने योग्य छे, तेमने तुं जो, अने जे घासना कठोर फरसो विगेरे उपर बताव्या; ते तभारे सारी रीते सहेवां. जेम तेमणे सहा; तेम, बीजा उत्तम साधुओ सहन करे छे. आ प्रमाणे जे उत्तम साधु सहन करे; तेने शु लाभ थाय ते कहे छे:—

**आगयपन्नाणाणं किसा बाह्वो भवंति पयणुए य मंससोणिए विस्सेणि कटु परिन्नाय, एस तिणो
मुत्ते विरए वियाहिए त्तिबेमि (सू० १८६)**

आगत ते मेलवेलुं छे. प्रज्ञान जेमणे तेवा गीतार्थ साधुओ तप करीने तथा परीसहो सहीने कुश (पातली) बाहु वाला बने छे, अथवा महान् उपसर्ग तथा परीसह विगेरेमां तेओ ज्ञान मेलवेला होवाथी तेमने पीडा ओछी होय छे. कारण के कर्म खणनवा तैयार थयेल साधुने शरीर मात्रने पीडा करनारा परीसह उपसर्गी मने सहाय करनारा छे. एवं मानवाथी तेने मननी पीडा नथी

सूत्रम्

॥६८१॥

आचा० ॥६८२॥

थती. तेज कहुं छे के:—

“णिम्माणेइ परो चिय अप्पाण उ ण वेयणं सरीराणं । अप्पाणो चिअ हिअयस्सण उण दुक्खं परो देइ ॥ १ ॥
बीजो माणस आत्माने पीडा नर्थीज आपतो पण शरीरने दुःख आपे छे, पण आत्माना हृदयनुं दुःख पोतानुं मानेलुं छे, पण
पारको ते दुःख आपतो नथी.

शरीरनी पीडा तो थाय छेज ते बतावे छे. ज्यारे शरीर सुकाय अने पातङ्गुं थाय, त्यारे मांसने लोही सुकाय, तेवा उच्चम
साधुने लुखो तथा अल्प आहार होवाथी प्राये खलपणे परिणमे छे. पण रस पणे नहीं. कारणना अभावथीज थोडुंज लोही अने
तेज शरीरपणे होवाथी मांस पण थोडुंज होय छे, तेज प्रमाणे मेद विगेरे पण ओछां होय छे. अथवा रुक्ष [लुखुं] होय ते प्राये
वातल (वायु करनार) होय छे. अने वायु प्रधान थवाथी मांस अने लोहीनुं प्रमाण ओढुंज होय छे. तथा अचेलपणुं होवाथी शरी-
रने घासना कठोर फरस विगेरे थतां शरीरमां दुःख थवाथी पण मांस अने लोही ओछां थाय छे.

संसारश्रेणी जे रागद्वेषरूप कषायनी संतति छे, तेने क्षांति विगेरे गुणो धारीने विश्रेणी [नष्ट] करीने तथा समत्व भावपणुं
जाणीने ते प्रमाणे वर्ते जेमके जिनकल्पी कोइ एक कल्प [वस्त्र] धारी कोइ बे, अने कोइ त्रण पण धारण करे छे, अथवा स्थविर
कल्पी मुनि मास क्षपण होय, कोइ पंदर दिवसना उपवास करनारो होय, तथा कोइ विकृष्ट अने कोइ अविकृष्ट तप करनारो होय,
अथवा कोइ क्रूरगदु जेवो रोजनो पण खानारो होय, तो ते बधाए तीर्थकरना वचन अनुसारे वर्ते छे, अने परस्पर निंदा करनारा
न होवाथी समत्वदर्शी छे, कहुं छे के:—

सूत्रम्

॥६८२॥

आचा०

॥६८३॥

जोवि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलगो व संथरइ; नहुनेहिलेति, परं सव्वेवि हु ते जिणाणाए; ॥ १ ॥
जे बे, ब्रण, एक अथवा वस्त्र रहित निभाव करे, ते वधा जिनेश्वरनी आज्ञामां होवाथी परस्पर निंदा करता नथी;
तथा जिनकलिपक, अथवा प्रतिमा धारण करेल, कोइ मुनि कदाचित् छ महिना सुधी पण पोताना कल्पमां भिक्षा न मेळवे,
तेवो उत्कृष्ट तप करवा छतां पोते रोज खानार क्रूरगडु जेवा मुनिने एम न कहे के हे भात खावा माटे दीक्षा लेनारा मुंड! तेवो
खावा माटेज मात्र दीक्षा लीधी छे ! [एबुं कहीने अपमान न करे.]

तेथी आ प्रमाणे समत्व दृष्टिनी प्रज्ञावडे संसार भ्रमण रूप कषायने दूर करी समता धारण करीने ते मुनि संसार सागर तरेलो
छे नेज सर्व संगथी मुक्त छे, तेज सर्व सावद्य अनुष्ठानथी छुटेल जिनेश्वरे वर्णव्यो छे, पण बीजो नहिं. एबुं सुधर्मास्त्रामी कहे छे.
प्र०—हवे ते प्रमाणे जे संसार श्रेणीने त्यागी संसारसागर तरेलो मुक्त वरणव्यो तेवा उत्तम साधुने अरति पराभव करे के नहि?

उ—कर्मना अचित्य (विचित्र) सामर्थ्यथी परिभवे पण खरी ! तेज कहे छे.—

विरयं भिक्खुं रायंतं चिरराश्रोसियं अरई तत्थ किं विधारए?, संधेमाणे समुद्धिए, जहा से दावे
असंदोण एवं से धम्मे आरियपदेसिए, ते अणवकंखभाणा पाणे अणइवाएमाणा जड्या मेहा-
विणो पंडिया, एवं तेसि भगवओ अणुद्वाणे जहा से दिया पोए एवंते सिस्सा दिया य राओ य
अणुपुव्वेण वाइय त्तिबेमि (सू० १८७) धूताध्ययने तृतीयोदेशकः ॥ ६-३ ॥

सूत्रम्

॥६८३॥

आचारो
॥६८४॥

असंयमथी बचेल पिक्षाथी निर्वाह करनार तथा अप्रशस्त स्थान रूप असंयमथी नीकली गुणोने उत्कृष्टपणे प्राप्त करवाथी उपर उपरना प्रशस्त गुण स्थान रूप संयममां वर्तता साधुने शुं स्खलायमान करे? अर्थात् तेवा उत्तम साधुने अरति मोक्षमां जतां जतां अटकावी शके के? उ. ह। दुर्वल अने अविनय वाळी ईंद्रियो छे. तेने अचित्य मोह शक्ति अने विचित्र कर्म परिणति शुं न करे? (अर्थात् कुमार्गे लड़ जायज) कहुं छे के:—

“ कम्माणि णूणं घणचिकणाइ गरुयाइ वइरसाराइ । णाणट्टिअंपि पुरिसं पंथाओ उप्पहं णिंति ” ॥ १ ॥

निश्चे कर्म घणां चीकणां वधारे प्रमाणमां वज्रसार जेवां भारे होय; तो, ज्ञानथी भूषित होय; तेवा पुरुषने पण सारा मार्गथी कुमार्गे लड़ जाय छे.

अथवा आक्षेपमां आ ‘किम्’ शब्द छे तेनो परमार्थ आ छे के, अरति तेवा उत्तम साधुने धारी शके के? उ. नज धारी शके? कारण के, आ उत्तम साधु क्षणे क्षणे वधारे वधारे निर्मल चारित्रना परिणामथी मोहना उदयने रोकेलो होवाथी लघुकर्मवाळो छे, तेथी तेने अरति कुमार्गे न दोरी शके; ते बतावे छे. क्षणे क्षणे विनाविलंबे संयमस्थानना चडता चडता कंडकने धारण करतो सम्यग्प्रकारे चारित्र पाल्तो रह्यो छे. अथवा, चडता चडता गुणस्थानने पहांचतो यथारूपात—चारित्रना संमुख जतो होवाथी तेने अरति केवी रीते अटकावी शके? (न अटकावे.)

अने आवो साधु पोताना आत्मानोज अरतिथी रक्षण करनार छे. एम नहीं पण, बीजाओनी पण अरति दूर करनार होवाथी रक्षक छे, ते बतावे छे. बन्ने बाजुए जेमां पाणी छे ते द्वीप छे; ते द्रव्य, अने भाव एम बे भेदे छे ते द्रव्यद्वीपमां आश्वास

सूत्रम्

॥६८४॥

आचार्य
॥६८५॥

(विश्रांति) ले छे. तेथी ते आश्वास लेवाने माटे जे द्वीप होय; ते आश्वासद्वीप छे, ते नदी समुद्रना घणा मध्यभागमां [नदीनी पहोळाइ विशेष होय तेमां बन्ने बाजुए पाणी वहेतुं होय अने वचमां खाली जग्या होय; तो, बेट कहेवाय छे. तेज प्रमाणे समुद्रमां जग्या उपसेली होय तो वरसाद लीधे ते उपसेली जग्याना मेदानमां फलद्रुप जग्या थाय छे, त्यां] वहाण कोइ पण कारणे नदी समुद्रमां भांगी जतां डूबतां माणसो आश्रय ले छे. आ बेट पण वे प्रकारे छे. जे पखवाडीए अथवा महीने पाणीथी भराइ जाय ते संदीन कहेवाय, अने तेवो बेट जो भरतीना पाणीथी भराइ न जाय तो असंदीन कहेवाय. जेमके सिंहलद्वीप विगेरे छे. अने बहाणवाळा ते द्वीपनो आश्रय ले छे. अने पाणी विगेरेनो उपयोग करे छे. अने ते बेटथी तेमने आश्रय मळे छे. तेवीज रीते उत्तम रीते वर्तता साधुने जोइने भव्य जीवो तेनो आश्रय ले छे.

अथवा द्वीपने बदले दीप [दीवो] प्रकाश आपनार लइए तो ते प्रकाशने माटे होवाथी प्रकाश द्वीप छे. अने ते सूर्य चंद्रमणि विगेरे असंदीन छे. अने बीजो विजळी उल्कापात विगेरेनो संदीन छे. [सूर्य चंद्र प्रकाश आपे पण ते प्रकाश स्थायी अने उपकारक होवाथी लोको आश्रय ले छे. पण तेवा गुणथी रहित विजळीनो प्रकाश नकामो छे अथवा दुःखदायी छे. तेवीज रीते कुसाधु अस्थिर चारित्रवाळो लोकोने धर्मथी भ्रष्ट बनावे छे.] अथवा घणां लाकडां एकडां करी सलगाव्याथी इच्छित रसोइ विगेरे बनाववामां उपयोगी होवाथी असंदीन छे. अने घासना भडका जेवो अग्निनो प्रकाश संदीन छे. [तेज प्रमाणे सुसाधु अने कुसाधुना दृष्टांत समजवां.] जेम आ स्थपुट विगेरेना बताववाथी हेय उपादेयने छोडयुं, गृहण करवुं, एवा विवेकने वांच्छनारा भव्य जीवोने खुल्लु बताववाथी ते उत्तम साधु उपयोगी छे. ते प्रमाणे कोइ समुद्रना अंदर रहेला प्राणीओने विश्रांति आपनार छे. तेज

सूत्रम्
॥६८५॥

आचार्य

॥६८६॥

प्रमाणे ज्ञान मेलवता उद्यत थयेलो परीसह उपसर्गमां दीनता न लाववार्थी असंदीन छे. ते साधु विशेष प्रकारे उत्तम बोध आपवाना कारणे बीजा जीवोने पण उपकार माटे थाय छे.

बीजा आचार्या भावद्वीप अथवा भावदीपने बीजी रीने वर्णने छे; ते आ प्रमाणे भावद्वीप ते सम्यक्त्व छे. अने ते पालुं जवानुं बताववार्थी औपशमिक अने क्षायोपशमिक संदीन भावद्वीप छे, अने क्षायिक सम्यक्त्वने मेलवीने संसार भ्रमणनी हद आवी जवार्थी प्राणोओने धैर्य आवे छे (के हवे आ दुःख अमुक काळ सुधीनुं ज छे.)

पण संदीन भाव दीप तो श्रुतज्ञान छे, अने असंदीन ते केवलज्ञान छे, तेने मेलवीने प्राणीओ अवश्ये धैर्य मेलवे छे, अथवा धर्मने सारी रीते धारण करी चारित्र पालतो छतो अरतिना वशग्राम ते साधु जतो नथी एवुं वर्णन करतां कोइ वादी पूछे के— केवो आ धर्म छे के जेना संधानने माटे आ साधु उठ्यो छे? तेनो उत्तर जैनाचार्य आपे छे.

जेम आ असंदीन द्वीप पाणीथी न भींजायलो भागेलां वहाणना माणसो तथा बीजा घणा जीवोने शरण आपवार्थी विश्रांति आपवा योग्य छे, तेम आ जिनेश्वरे कहेलो धर्म कष ताप छेद निर्धन्ति एम चार प्रकारे परीक्षा करतां असंदीन द्वीप समान आश्रय आपनार छे, [सोनानी परीक्षा कष लेवार्थी सारो कष आपे, तापमां नाखवार्थी कालुं न पडे, पण विशेष चलकाट आपे, छीणीथी कपातां अंदरथी पण उत्तम जाति ओलखावे, तथा घडवार्थी भांगी न जतां चीकणाश्वार्थी हथोडीना घा पडवा छतां विशाळ थतुं चाले. तेम जैन धर्मी जीवने कोइ तिरस्कार करे, संतापे, हाथ पग छेदे, घाणीमां घालीने पीले, अथवा अणघटतो अतिशय मार मारे, प्राण ले, तोपण उत्तम साधु पोताना आत्मधर्मथी विमुख थतो नथी.]

सूत्रम्

॥६८६॥

आचारो
॥६८७॥

अयवा कुतर्कवडे पोर्टे गभरातो नथी. पण योग्य उंतर आपवाथी प्राणीओने रक्षण माटे आश्वास भूमि छे.
 प०—ते धर्म आर्य पुरुषोए कहेलो होवाथी ते प्रमाणे वर्तनारा शुं वरोबर अनुष्ठान करनारा छे? उ—हा, अमे कहीए छीए,
 प०—जो ने हाय तो ते केवा छे? उ.—ते साधुओ निर्मल भाव चालु राखवा संयममां अरतिना प्रणोदक (दूर करनार) छे.
 मोक्षनी समीपमां रही भोगनी इच्छा छोडीने धर्ममां सारी रीते उत्थम करे छे.

आ प्रभाणे वधे समजबुं. के तेओ प्राणीओने दणता नथी. तेम बीजां महाव्रत पाळनारा जाणवा. तथा कुशल अनुष्ठान कर-
 वाथी सर्वे लोकोना दयित (रक्षका) छे. तथा मेधावी एटले साधुनी मर्यादामां रहेला छे, पापना कारणोने छोडवाथी सम्यग् रीते
 पदार्थने जाणनारा पंडित साधुओ धर्म चारित्र पाळवा माटे उठेला छे.

पण जेओ तेबुं निर्मल ज्ञान धरावता नथी. तेओ सम्यग् विवेकना अभावथी हजु सुधी पण तेओ तेबुं चारित्र पाळवा तैयार नथी.
 तेवा ज्ञान रहित साधुओने पूर्वे बतावेला निर्मल बोधवाला आचार्य विगेरेए सुवोध आपीने ज्यांसुधी तेओ ज्ञाने करीने विवेक-
 वाला थाय त्यांसुधी पाळवा जोइए, ते बतावे छे. उपर बतावेली विधिए ओळुं ज्ञान मेलवेला अस्थिर मति वालाने भगवान
 महावीरना धर्ममां सारी रीते तेओ न जोडाया होय; तो, सुवोधनां उपदेश वडे तेमनुं पालन करीने स्थिरमति वाला बनाववा
 अहीं दृष्टांत कहे छ्ये:—

जेमके:—द्विज ते पक्षी छे, तेनुं पोत (बच्चुं) ते द्वीजपोत छे, ते बच्चाने तेनी मा गर्भना प्रसवथी लइने इङ्गुं मुके, त्यार-
 पछी, अनेक अवस्थाओ आवे; ते बधामां ज्यांसुधी ते बच्चुं पुरुं उडवायोग्य मजबुत पांखोवाळुं थाय; त्यांसुधी पाळे छे. तेज प्रमाणे

सूत्रम्
॥६८७॥

आचार्य

॥६८८॥

आचार्य पण नवा चेलाने दीक्षा आपीने तेज दिवसथी साधुनी दश प्रकारनी समाचारीनो उपदेश, तथा अध्यापन (भणाववावडे) ज्यांसुधी ते गीतार्थ थाय; त्यांसुधी पाळे; पण जे चेलो आचार्यना उपदेशने उलंघोने पोतानी इच्छा प्रमाणे स्वतंत्र विचरी कंइण क्रिया करे; तो, ते (लाभ मेळववाने बदले) उज्ज्यन नगरना राजकुमारनी माफक दुःख पामे ते बतावे छे.

उज्ज्यन नामनुं नगर छे. तेमां जीतशत्रु नामनो राजा छे तेने बे पुत्रो छे. मोटा पुत्रे धर्मयोष आचार्य पासे संसारनी असारता समजीने दीक्षा लीधो. अनुक्रमे आचारांग विगोरे शास्त्रो भणीने तेनो परमार्थ समजीने जिनकल्पने स्वीकारवानी इच्छाथी बीजी सत्त्वभावनाने भावे छे, ते भावना पांच प्रकारनी छे. (१) उपाश्रयमां (२) तेनी बहार (३) त्रीजो तथा चोथो शून्यघरमां, तथा पांचमी भावना मसाणमां छे, ते पांचमी भावनाने भावतो हतो.

ते समये मोटाभाइना प्रेमथी नानोभाइ खेचाइने, आचार्य पासे आवीने बोल्यो के:—मारो मोटोभाइ क्यां छे ? साधुए कहुं तारे शुं काम छे? तेणे कहुं के:—मारे दीक्षा लेवी छे. आचार्ये कहुं:—तुं प्रथम दीक्षा ले, पछी तारो भाइ देखीश. तेणे दीक्षा लीधी; अने पूछ्युं. मोटो भाइ क्यां छे ? आचार्ये कहुं:—देखवानी शुं जरुर छे ? कारण के, ते कोइथी बोलतो नथी, अने ते जिनकल्प धारण करवा इच्छे छे.

नानाभाइए कहुं:—तोपण, हुं तेने जोइश, घणो आग्रह करवाथी मोटोभाइ बताव्यो, ते चूप बेठेलो नानाभाइए वांद्यो. पछी, मोटाभाइ उपर घणो प्रेम होवाथी आचार्ये ना पाढी. उपाध्याये रोक्यो; साधुओए पकडी राख्यो; अने ते नानाभाइने बोल्याः—के आ स्मशानमां रहेवानुं, तारे अमुक समय सुधी थोभवानुं छे. कारण के, तारा जेवाने ए कठण अने विचारमां पडवानुं छे.

सूत्रम्

॥६८८॥

आचार्य

॥६८९॥

आबुं समजाव्या छतां पण, तेणे कहुः—हुं पण, तेज वापथी जन्म्यो लुं. (मारामां पण तेटलोज हींमत छे.) एबुं ओढुं लडने मोहथी ते पण, तेमज मसाणमां मोटाभाइ माफक बेठो. मोटाभाइने देवीए वांद्यो, पण नवा साधुने न वांद्यो, तेथी अस्थिर मतिना कारणे ते देवी उपर कोपायमान थयो. देवताए पण तेना अविधिना कृत्यथी कोपायमान थडने लात मारीने तेनी वे आंखोना ढोळा बहार काढी नारुया.

तेथी मोटोभाइ हृदयथीज (प्रेमथी) देवताने कहेवा लाग्यो, के आ अज्ञान छे, तेने शा माटे दुःख दीधुं तेनी आंखो नवी बनाव. देवीए कहुं, जीवना प्रदेशोथी जुदा पडेला आ ढोळा जोडाय तेम नथी, साधुए कहुं नवा बनाव, तेमनुं बचन ओलंघाय तेवुं नथी, एम विचारीने देवीए तेज क्षणे चंडाडे मारेला एल [वकरा]नी आंखोना वे ढोळा लावीने तेनी आंखो नवी बनावी.

आ प्रमाणे उपदेशथी बहार वर्तनारने दुःख थाय छे, तेम विचारीने शिष्ये हंमेशां आचार्यनी आज्ञामां वर्त्तयुं.

आचार्ये पण हंमेशां परोपकारनी वृत्ति राखीने पोताना शिष्यो यथोक्त विधिए पाळवा तेज बतावे छे. के जेम पक्षीना बच्चां-ने मावाप पाळे तेम आचार्ये पण रातदिवस शिष्योने पाळवा अनुक्रमे वाचना आपवी, शिखामण आपवी, बधा कार्यमां धैर्यतावाळा करवा के जेथी तेओ ते प्रमाणे वर्नने संसारथी पार उतरवा समर्थ थाय छे. एबु सुधर्मास्वामि कहे छे.

त्रीजो उद्देशो समाप्त.



सूत्रम्

॥६८९॥

३५

३५

३५

३५

आचार
॥६९०॥

चोथो उद्देशो कहे छे.

ब्रीजो उद्देशो कहा पछी चोथो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां शरीर उपकरणनो ममत्व त्याग बताव्यो अने ने त्रण गौरवने धारण करनारने संपूर्ण न होय, तेथी ते गौरव त्यागवा आ उद्देशो कहे छे. तेना आ संबंधयी आवेला उद्देशानुं पहेलु मूत्र आ छे.

एवं ते मिस्मा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाङ्या तेहिं महावीरेहिं पन्नाणमन्तेहिं तेसिमंतिए पन्नाणमुवलब्भ हिच्चा उवसमं फारुसियं समाइयंति वसिता बंभचेरंसि आणं तं नोत्ति, मन्नमाणा आघायं तु सुच्चा निसम्म, समणुन्ना जीविस्सामो पगे निकखमंते असंभवंता विडज्ञमाणा कामेहिं गिढ्हा अज्ञोववन्ना समाहिमाधायमजोसयंता सत्यारमेव फरुसं वयंति (सू० १८८)

उपर बतावेल पक्षीना बच्चाना वधवाना क्रमथीज ते शिष्यो पोताने हाथे दीक्षा आपेला अथवा वडी दीक्षा आपेला तथा भणवा आवेला साधुओने दीवस अने रात्रे क्रमथीज भणावेला होय.

तेमां कालिक मूत्र दिवसनी पहेली तथा चोथी पोरसीमां भणावाय छे. पण जे उत्कालिक छे ते संध्यासप्तयनी काळ वेळा छोडीने आखो दिवस रात गमे त्यारे भणाय छे. तेनुं अध्यापन आचारांग विगेरे क्रमथी कराय छे, अने आचारांगमूत्र भणाववानुं

सूत्रम
॥६९०॥

आचार्य

॥६९१॥

त्रण वरसना पर्यायवालाने छे. विगेरे क्रमथी भणावेला चारित्र लीधेला साधुओ होय छे, तेमने उपदेश आपेलो छे के, युग मात्र दृष्टिए जबु. काचबा माफक अंगने संकोची राखवां आ प्रमाणे शिखामण आपेला, अने भणावी तैयार करेलां साधुओ होय छे.

प्रः—कोणे भणावेला छे. उः—ने तीर्थकर गणधर—आचार्य विगेरे महावीर पुरुषोए भणाव्या छे.

प्रः—ते भणावनार केवा छे? उः—ज्ञानीओ छे. कारण के, तेमनो कहेलो उपदेशज असर करे छे. (माटे, ज्ञानीनुं विशेषण आपेल छे.) अने ते शिष्यो बन्ने प्रकारे प्रेक्षा पूर्वकारी छे. तेओ आचार्य पासे रहीने (प्रकर्षथी जणाय; ते प्रज्ञान.) श्रुतज्ञान भणे छे. कारण के, ते श्रुतज्ञानना प्रतापथीज नवो नवो बोध थाय छे, तेथी ते वहु श्रुत बनीने प्रबल माहना उदयने लीधे आचार्यना सद्उपदेशने उत्कट मदथी दूर करीने उपशम छोडीने दुःखी थाय छे. ते उपशम द्रव्य, अने भाव एम बे भेदे छे. द्रव्यथी उपशम ते, कतक नामनी बनसपति (एक जातनुं बीज आवे छे. ते) तेने चुरीने जो गारावाला पाणीमां नांखेल होय; तो, पाणी गारो नीचे बेसतां निर्भल थाय छे, भाव उपदम ते, ज्ञान विगेरेथी त्रण प्रकारनुं छे. (१) ज्ञानवडे जे क्रोध न करे; ते ज्ञानउपशम छे. ते आ प्रमाणे आक्षेपणी विगेरे कोइपण प्रकारनी धर्मकथावडे कोइ जीव शांति धारण करे ते, ज्ञानउपशम छे.

(२) शुद्ध शम्यगदर्शनर्था तेवा क्रोधीने शांति पमाडे. जेमके—श्रेणिक राजाए जे देवता अश्रद्धावालो हतो, तेने बोध करीने शांत पमाड्यो. (पोताना वृह सम्यक्त्वथी ते देवता अश्रद्धावालो थयो;) अथवा आठ दर्शनप्रभावकोथी कोइ जीव संपत्ती विगेरेथी शांत पामे छे, अने चारित्र—उपशम तो, क्रोध विगेरेनो उपशम छे, तेनामां चिनयथी नम्रता होय छे.

तेमां केटलाक शुद्ध साधुओ ज्ञानसमुद्रमां अंदरनुं रहस्य न जाणवाथी समुद्रना उपरज दुबकी मारनारा होय छे. तेओ उपर

सूत्रम्

॥६९१॥

आचारा०
॥६९२॥

कहेल उपशम छोडीने ते ज्ञाननो लेश हाथमां आवतां अहंकारी बनीने कठोरता ग्रहण करे छे (अहंकारी बने छे,) ते बतावे छे. परस्पर मूत्र तथा गाथा गणतां; अथवा अर्थ विचारतां एक बीजाने कहे छे. “ जे तें कहुं, ते अर्थ आ शब्दनो नथी. तेथी तुं जाणतो नथी वली. बोले छे के—मारा जेवा शब्दना अर्थनो निर्णय करवामां समर्थ कोइकज होय छे, पण बथा नहीं,

“ पृष्ठा गुरवः स्वयमपि परीक्षितं निश्चितं पुनरिदम् नः ॥ वादिनि च मल्लमुख्ये च माहगेवान्तरं गच्छेत् ॥ १ ॥

गुरुओने पूछेल, अने पोते पण आ निश्चय करेलो छे एवुं अमारुं आ कथन छे. तथा वादिओमां पिदान्, अने सुभटमां महारा जेवो कोइकज बीजो हशे. बीजो साधु कहे छे के, खरेखर, हशे (पण) अमारा आचार्य तो, आ प्रमाणे कहे छे. तेथी ते फरीथी बोले छे के, ते आचार्य बोलवामां कुंठ [बुठा] जेवो बुद्धिहीण शुं जाणे ? तुं पण, पोपटनी माफक भणावेलो विचार कर्या विनानो छे, आ प्रमाणे बीजा केटलांक वाक्यो ते दुष्ट बुद्धिए ग्रहण करेल थोडा अक्षरनुं ज्ञान धरावनार साधु बोले छे, तेथी एम जाणवुं के, महान् उपशमनुं कारण जे ज्ञान छे, तेने विपरीतपणे परिणामतां ते आवुं बोले छे. कहुं छे के:—

“ अन्यैः स्वेच्छारवित्तानर्थविशेषान् श्रमेण विज्ञाय । कुत्स्त्र वाङ्मयमित इति खादत्यज्ञानि दर्षेण ” ॥ १ ॥

बीजाओए इच्छानुसार रचेला कोइपण अर्थने श्रमथी जाणीने पोते जाणे के, संपूर्ण मिदांतनो पारंगामि होय; तेम, अहं-कारवडे अंगोने खाय छे. [बीजानुं अपमान करे छे.]

“ क्रीडनकमीश्वराणां कुकुटलावकसमानवाल्लभ्यः । शास्त्राण्यपि हास्यकथां लघुतां वा क्षुद्रको नयति ” ॥ २ ॥

श्रीमंतोनी क्रीडा समान वस्तुने कुकडाना लावक समान जेवो बनीने पवित्र शस्त्रोने पण, हास्य कथा जेवी लघुताने क्षुद्र साधु

सूत्रम्

॥६९२॥

आचारा०
॥६९३॥

पमाडे छे. (उत्तम जातीनुं मोती जे श्रीमंतोनुं मन रीझावे; तेवा मोतीने न समजनार कुकडानुं बच्चुं जुवारनो दाणो समजी लेवा जतां; कदर न थवाथी फेकी दे छे. तेज प्रमाणे क्षुद्र साधु गंभीर सूत्रना परमार्थने न समजवाथी हांसीना वाक्य तरीके मानी ले छे.) विगेरे. अथवा बीजी प्रतिमा ‘हेच्चा उवसमं अहगे पास्सियं समाख्यंति’ पाठ छे, तेनो अर्थ आ छे के—उपशम छोडीने बहु श्रुत बनेला केटलाक (बधा नहीं) कठोरताने स्वीकारे छे, तेथी, तेमने बोलावतो, अथवा पूछ्वा जतां कां तो, चुप रहे छे. अ-थवा हुंकार शब्द बोलीने माथु विगेरे हलावीने जवाब आपे छे.

वली, केटलाक ब्रह्मचर्य जे संयम रूप छे, तेमां रहीने; अथवा, आचारांगसूत्र भणीने तेनो अर्थ ब्रह्मचर्य छे, तेमां रहीने आ-चारांगना विषयने अनुसार अनुष्ठान करवा छतां पण तेनो तिरस्कार करीने तीर्थकरना उपदेश रूप आज्ञाने कंइक माने कंइक न माने; परंतु, सातागैरवनां बाहुल्यपणाथी तीर्थकरनां वचनने बहु मान आपता नथी; पण शरीरनी बकुशपणाने अवलंबे छे. (शरी-रनी शोभा करवामां वीतरागनी आज्ञा उल्लंघे छे.)

अथवा, अपवादने आंलंबीने वर्ततां उत्सर्ग मार्गनो उपदेश आपतां तेओ एकांत पकडे छे के, ‘ते उत्सर्ग मार्ग जिनेवरनो कहेलो नथी.’ हवे, समजवा माटे अपवाद बतावे छे.

कुज्जा भिक्खु गिलाणस्स, अगिलाए समाहियं;

निरोगी भिक्षु (साधु) मांदा साधुनी समाधि माटे योग्य रीते वेयावच्च करे. जे कारणे (रोगे) साधु मांदो होय; ते रोग दूर करवा आधाकर्मी आहार विगेरे पण लावी आपे.

सूत्रम्
॥६९३॥

आचार्य
॥६९४॥

प्र०—ठीक तेम हशे; पण कुशील साधुओ जेओ तीर्थकरना वचननी आशातना करे तेमने दीर्घ संसार थाय छे, तेमने थवानां भविष्यना दुःखो केम बताव्यां नथी ? उ०—एज अमे बताव्युं, के जे शरीर शोभा विगेरे माटे कुशीलता सेवे छे, तेमने थवाना कडवा विपाक विगेरे सूचव्या तेबुं हितशिक्षानुं वचन गुरु पासे सांभळीने ते कुशीलीया साधुओ ते गुरुनेज कडवां वचन संभळावे छे. प्र०—त्यारे कुशीलीआ साधु शा माटे गुरु पासे सिद्धांत सांभळता हशे ?

उ०—समनोङ्ग (लोकमां संमत) बनीने मान मेलवी अमे जोवन गुजारीथुं, आवा हेतुथी सिद्धांतना गुढ रहस्यना प्रश्नोना खुलासा माटेज शब्द शास्त्रादि (व्याकरण विगेरे) शास्त्रो भणे छे.

अथवा आ उपायवडे लोकमां मानीता थइने अमे जीवीथुं, एटला माटेज केटलाक दीक्षा लइने, पछवाडे कुशीलीया बने छे.

अथवा समनोङ्ग ते प्रथम दीक्षा लेतां विचारे के अमे उद्युक्त विहारी बनीने संयम जीवितवडे जीवीथुं, अने दीक्षा लइ पाढ़ल्थी मोहना उदयथी चारित्र बरोबर न पाळे, तेओ गौरवत्रिक (कँडि रस साता) ना कारण अथवा तेमांथी कोइपण एकना कारण ज्ञानादिक मोक्षमार्गमां सारी रीते वर्तता नथी, तेम गुरुना उपदेशमां वर्तता नथी, अने जुदी जुदी जातनी इच्छाओथी गृद्ध थइने चित्तमां बल्ता गौरवत्रिकमां ध्यान राखीने विषयोमां रक्त बनी इन्द्रियोने स्थिर करवा रूप जे तीर्थकर विगेरेए पांच यमो [महाब्रतो] बतावेला छे तेने बरोबर न पाळीने पोतानी मेले पंडित मानी बनीने आचार्य विगेरेए वीतरागना शास्त्र प्रमाणे प्रेरणा कर्या छतां ते कुसाधुओ ते गुरुने कडवां वचन संभळावे छे. अने बोले छे के ‘आ विषयमां तमे थुं जाणो’

कारण के जेवीरीते सूत्रना अर्थने व्याकरणने गणितने अथवा निमित्तने हुं जाणुं छुं. तेवी रीते बीजो कोण जाणे छे? आ

सूत्रम्

॥६९४॥

आचार्य
॥६९५॥

प्रमाणे आचार्य विगेरेने कुसाधु कडवां वचन कहे छे.

अथवा धर्मोपदेशक तीर्थकर विगेरे छे. तेमने पण कडवां वचन कहे छे. ते बतावे छे. कोइ वखत ते साधु भूल करे, त्यारे आचार्य ठपको आपे त्यारे कुसाधु कहे, के तीर्थङ्कर अमारुं गङ्गुं कापवाथी वधारे बीजुं शुं कहेनार छे? विगेरे अनुचित वचन बोले छे. अने विद्याना खोटा मदना अबलेपर्थी मदांध वनीने शास्त्र रचनार गणधर भगवंतोने पण दूषण आपे छे. वक्ती, आचार्योने दूषण आपे छे, एटलुंज नहि; पण, बीजा साधुओने पण कडवां म्हेणां संभलावे छे.

सीलमंता उवसंता संखाए रोयमाणा असीला अणुवयमाणस्स विह्वया मंदस्स बालया (सू० १८९)

शील ते अद्वार हजार भेदवाळुं छे, अथवा महाव्रतो पाळवानुं छे, तथा पांच इन्द्रियोनो जय करवानुं छे. कषायनो निग्रह छे, त्रण गुसि पाळवानी छे. एवुं निर्मल शील पाळे ते शीलवंत छे, तथा कषायने शांत करवाथी उपशांत छे.

शंका—शीलवान ग्रहण करवाथी उपशांत तेमां समाइ गया. त्यारे फरी केम कहुं?

उत्तर—कषायना निग्रहनुं प्रथानपणुं बताववा माटे, सम्यकरीते जेनावडे कहेवाय; ते संरूया अथवा प्रज्ञा छे, तेना वडे संयम अनुष्टानमां पराक्रम करनारा आचार्यो होय; छतां, कोइ साधुना नवळा भाग्यथी सदाचार रहित ए आचार्यो छे. एवी निंदा करनारा, अथवा पछवाडे निंदा करनारा, अथवा मिथ्या दृष्टि विगेरे बोले के तेओ कुशील छे, एवुं कहेतां पासत्या विगेरेनी आचार्यने खोटां वचन कहेवा रूप आ बीजी मूर्खता छे.

एटले, कुसाधु प्रथम तो, पोते सारा चारित्रिथी रहित छे, अने पोते सारा चारित्र पाळनार उद्युक्त विहारी उत्तम साधुने निंदे

सूत्रम्

॥६९५॥

आचार

॥६९६॥

छे. आ तेमनी बीजी मूर्खता छे. अथवा, जे शीलवन्तो छे ते उपशांत छे. एबुं बीजाए कहे छते, ते कुसाधु बोले के “ए घणो उपकार करनारा आचार्य विगेरेमां तमारा कहेवा मुजब क्यां शील अने उपशांतता छे ?” आ प्रमाणे बोलता दुराचारी साधुनी बीजी मूर्खता थाय छे. पण, बीजा केटलाक साधुओं बीर्यातराय कर्मना उदयथी जो के, पोते पुरुं चारित्र न पालता होय; छतां पण. बीजा उत्तम साधुओंनी प्रशंसा करता रहीने पोते पण बीजाने सारा आचार बतावे छे. ते कहे छे:—
नियट्टमाणा वेगे आथारगोयर माइक्खंति, नाणडभट्टा दसणलूसिणो (सू० १९०)

अशुभ कर्मना उदयथी सयमथी दूर थाय, अथवा लिंग मुकी दे, अर्थात् केटलाक साधुओं मोहना उदयथी चारित्र न पाळी शके, त्यारे कोइ साधुनो वेष मुकी दे, अथवा वेष राखे तो पण पोते साधुनो जेवो आचार होय, तेवो लोकोने बतावे छे. अने पोतानी निंदा करता कहे छे, के तेवो उत्तम आचार पालवाने अमे समर्थ नथी, आ कारणथी चारित्र न पाल्युं, तेज तेमनी मूर्खता छे. पण वचन साचुं बोलवार्थी बीजी मूर्खता थती नथी, तेओं एबुं खोदुं नथी बोलता, “ के अमे जे करीए छीए तेवोज अपारे आचार छे. ” (पोतानी भूल कबुल करे छे.) वळी आम न बोले के ‘ हवे आ दुःखम काळना अनुभावथी वळ विगेरे ओहुं थवाथी मध्यम वर्तन एज कल्याणनुं कारण छे. हमणा उत्सर्गनो अवसर नथी (आबुं खोदुं न बोले) कहुं छे के:—

“ नात्यायतं न शिथिलं, यथा युज्जीत सारथिः । तथा भद्रं वहन्त्यश्वा, योगः सर्वत्र पूजितः ॥१॥ ”

न जोरथी, न धीरे, एम सारो हाकनार घोडा विगेरेने हाके ते हाकनारो डाहो गणाय, तथा घोडा पण ते प्रमाणे मध्यम चाले तो ते योग बधे माननीय थाय छे. वळी:—

सूत्रम्

॥६९६॥

आचार्य
॥६९७॥

जो जत्थ होइ भग्गो, ओवासं सी परं अविंदंतो । गंतुं तत्थऽचयंतो, इम पहाणंति घोसेति
जे ज्यां भाँग्यो होय तो ते धीजा अवकाशने न जाणतो अने त्यां जवाने असमर्थ होवाथी पोते पोतानी कुटेवने पण प्रधान
बतावे छे. (आवुं कुसाधुनुं वर्तन छे, ते तेनी बेवडी मूर्खता छे.)

प०—तेओ शामाटे आवा कुशीक्कनुं समर्थन करता हशे ? उ०—सारा माडाना विवेकनुं जे ज्ञान छे, तेनाथी तेओ भ्रष्ट
थयेल छे, तथा सम्यक्दर्शनथी दूर रही असत् (खोदुं) अनुष्ठान करवा वडे पोते नाश पामेला छे, अने शंका उत्पन्न करावीने तेओ
धीजाने सारा मार्गथी भ्रष्ट करे छे. वली धीजा केटलाक पोते बाष्प क्रिया करवा छतां पण (अंदरनी श्रद्धा विना) पोताना आत्मानुं
अहित करे छे, ते बतावे छे.

नममाणा वेगे जीवियं विष्परिणामंति पुट्टा वेगे नियट्टंति जीवियस्सेव कारणा, निक्खंतंपि
तेसिं दुन्निक्खंतं भवइ, बालवयणिजा हु ते नरा पुणो पुणो जाइं पकपिंपति अहे संभवंता
विद्वायमाणा अहमंसीति विउक्कसे उदासीणे फरुसं वयंति पलियं पकथे अदुवा पकथे अ-
तहेहिं तं वा मेहावी जाणिजा धम्मं (सू० १११)

ते कुसाधुओ आचार्य विगेरेने श्रुत ज्ञान मेलववा माटे द्रव्यथी देखवा मात्र ज्ञान विगेरेना भाव विनय शिवाय नमवा छतां
पण, तेओमाना केटलाक अशुभ कर्मना उदयथी संयय जीवितने विराधे छे. अर्थात् उत्तम चारित्रथी आत्माने दूर राखे छे. वली

सूत्रम्
॥६९७॥

आचार्या०

॥६९८॥

बीजुं शुं छे ? ते कहे ह्ये :—चारित्रमां अस्थिर मतिवाळा त्रण गौरवना बन्धायला बनी परीषहोथी फरसातां संयम अथवा साधु वेषथी तेओ दुर थाय छे. प्र०—शा माटे ?

उ०—असंयम नामना जीवितना निमित्तर्थाज अर्थात् हवे, अमे सुखेथी संसारमां जीवीशुं, एम वीचारीने सावद्य अनुष्ठान करीने संयमथी दुर थाय छे, तेवा जीवोनुं शुं थाय छे ? ते कहे छे. ते कुसाधुओ घरवासथी नीकल्या छतां ज्ञान दर्शन चारित्रना मूळ उत्तर गुणमां कंद पण खामी आववाथी तेने दीक्षा पाल्ची मुश्केल थाय छे, तेवा भ्रष्ट साधुओनुं जे थाय; ते कहे छे (हु अब्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी असम्यग्अनुष्ठानथी दीक्षा छेडेला साधु बाल बुद्धिवाळा जे सामान्य पुरुषो छे, तेमनाथी पण निंदाय छे. (ज्यां होय; त्यां तिरस्कार पामे छे.)

वळी, तेओ संयम मुकवाथी कुवाना अरहट्टना न्याये वारंवार नवी जाति [जन्म] मेल्वे छे.

प्र०—तेओ केवा छे ? उ०—अधःसंयम स्थानमां वखते रहेला होय; अथवा अविद्याथी नीचे [कुमारे] वर्तला होय; छतां पोते पोताने विद्वान मानता लघुताथी आत्माने उंचे चडावे छे. (पोताने हाथे पोतानी स्तुति करे छे.) वळी, पोते थोडुं भणेलो होय; तोपण, मानथी उंचो बनीने रस अने साता गौरवनी बहुलताथी माने छे. के, हुं बहुश्रुत छुं, अने आचार्य जे जाणे छे ते में तत्वने थोडाज काळमां जाणी लीधुं छे. एवुं मानीने आत्माने अहंकारी बनावे छे.

ते आत्मश्लाघाथीज संतोष पापतो नथी; पण, बीजा उत्तम साधुओनी निंदा करे छे ते बतावे छे.

उदासीन ते रागद्वेष रहित मध्यस्थ साधुओ घणुं भणेला होवाथी शांत होय छे, तेवा आचार्य विगेरे ज्यारे ते साधुनी भूल

सूत्रम्

॥६९८॥

आचारो
॥६९९॥

पडे, त्यारे कहे तो, तेमनी पण निंदा करे छे अने बोले छे के, तमे तो, प्रथम कृत्य अकृत्यने जाणो; अने पछी बीजाने उपदेश आपजो. वळी ते कडवुं बोले छे ते सूत्र बडे बतावे छे. ‘पलियं’ अनुष्ठान छे तेन। बडे तृण हार विगेरेथी बोले, (तुं आ तणखला जेवो छे.) अथवा कुंट, मंट, विगेरे गुणोथी अथवा मुखना विकार वगेरेथी कुचेष्टा करीने गुरुनुं अपमान करे, तथा खोटां आळ चडावीने गुरुनो तिरस्कार करे. हवे समाप्त करतां कहे छे, ते वाच्य अवाच्य अथवा श्रुत चारित्र नामनो धर्म उत्तम साधु जे गुरु आज्ञामां रहेल होय ते सारी रीते जाणे.

अने जे असभ्यवादमां बाळ साधु वर्ततो होय तो गुरु विगेरे ए तेने शिखामण आपवो ते बतावे छे.
अहम्मट्टी तुमंसि नाम बाले आरंभट्टी अणुवयमाणे हण पाणे घायमाणे हणओ यावि समणुजायमाणे,
घोरे धम्मे, उदीरिए उवेहइ णं अणाणाए, एस विसन्ने वियदे वियाहिए तिबेमि (सू० १९२)

अर्थ जेने होय, ते अर्थी अने ते अधर्मनो अर्थी ते अधर्मार्थी छे, एवा अधर्मार्थीने पण शीखामण देवाय छे,
प्र०—ते अधर्मार्थी केवी रीते छे, ? उ०—ते बाल छे. प्र०—शा माटे बाल छे ? उ०—सावद्य आरंभमां वर्ते छे.
प्र०—केवी रीते आरंभमां वर्ते छे ? उ०—प्राणीओने दुःख देवारूप वादोने बोलतो आ प्रमाणे कहे छे.

“जीवो ने हणो” ए प्रमाणे बीजा पासे हणावी अने हणताने अनुमोदतो त्रण गौरवथी बन्धायलो रांधवा रंधाववानी क्रियामां प्रवर्तेला गृहस्थीओ आगल तेमना पिंडनो वांछक बनीने आ प्रमाणे कहे छे.

सुत्रम्

॥६९९॥

आचार्य

॥७००॥

‘आमां शुं दोष छे! कारणके शरीर विना धर्म बनी शके नहीं; माटे धर्मना आधाररूप शरीरने यत्नाथी पाल्वुं जोइए’ कहुं छे के।
शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः । शरीराज्ञायते धर्मी, यथा वीजात्सद्कुरः ॥ १ ॥

धर्मथी जोडायलुं शरीर प्रयत्नथी बचावलुं, कारणके जेम बीज होय, तो सारो अंकुरो थाय, तेम शरीर (सारं) होय, तो धर्म थाय छे, (त्यारे आचार्य तेने शीखामण आपे के हे भव्य !) तुं शा माटे एवुं बोले छे ?

सांभळ ! धर्म छे, ते घोर भयानक छे, कारण के वधा आश्रवोनो तेमां निरोध छे, अने तेथी ते दुरनुचर छे, एवुं तीर्थकर विग्रेए उदीरित (कहेलुं) छे, तेवा अध्यवसायवालो तुं बन, अने एवा उत्तम संयम अनुष्ठाननी अवगणना जे करे छे (णं वाक्यनी चोभा माटे छे) अने सावद्य अनुष्ठान करे, ते तीर्थकर गणधरना उपदेशथी बहार जइ स्वेच्छाथी वर्ते छे.

प्र०—कोण एवो होय ? उ०—उपर बतावेलो अधर्मार्थी बाल आरंभनो अर्थी बनीने प्राणीओनो घात करे, करावे हणनारने अनुमोदनारो धर्मनी अवगणना करनारो, तथा काम भोगमां खेद पामेलो (कामांध) विविध प्रकारे तर्द (हिंसा) करनारो (तर्द धातुनो अर्थ हिंसा छे) अथवा संयममां प्रतिकूल ते वितर्द छे. एवा स्वरूपवालो बाल साधु जिनेश्वरे कहेलो छे. एवुं सुधर्मास्वामी पोताना शिष्योने कहे छे. के तुं मेधावी छे. माटे धर्मने जाण, वली हवे पछीतुं पण हुं कहुं ल्हुं; ते बतावे छे.

किमणेण भो ! जणेण करिस्सामिति मन्नमाणे एवं एगे वडता मायरं पियरं हिच्चा नायओ
यपरिगग्हं वीरायमाणा समुद्वाए अविहिंसा सब्बया दंता पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे

सूत्रम्

॥७००॥

आचारा०
॥७०१॥

वसद्वा कायरा जणा लूसगा भवंति अहमेगेसिं सिलोए पावए भवइ, से समणो भवित्ता
विभभते २ पासहेगे समन्नागणहिं सह असमन्नागण नममाणेहिं अनममाणे विरणहिं अवि-
रए दविएहिं अदविए अभिसमिच्छा पंडिए मेहावी निष्ट्रियहु वीरे आगमेण् सया परिक्रमि-
जासि त्तिवेमि (सु० १९३) इति धूताध्ययने चतुर्थ उद्देशकः ॥ ६-४ ॥

केटलाक साधुओ तत्व समजीने सम्यग् उत्थानथी तैयार थइ वीर माफक वर्तता पाढ़लथी प्राणीनी हिंसा करनारा थाय छे.
प्र०—ते केवी रीते तैयार थयेल हता ? उ०—ते विचारे छे के हे भाइ ! मारे आ स्वार्थमां तत्पर एवा माता पिता पुत्र कलत्र
(ह्यी) विगेरे जेओ परमार्थ द्रष्टिए जोतां अनर्थ रूप छे. तेमनी जोडे हुं शुं करीश ? कारण के तेओ मारुं कांझण कार्य करवुं के
रोग दूर करवामां समर्थ नथी, तेथी तेनावडे हुं शुं करीश ? एम जाणीने दीक्षा ले छे. अथवा कोइ दीक्षा लेनारने कोइए कह्यु. के
हे भाइ ! रेतीना कोळीआ खावाजेवी निःसार दीक्षा लेवा वडे शुं करीश ? पण पूर्वना भाग्ये मळेलुं भोजन विगेरे (सुखेथी) भोगव
एम कहेतां ते दीक्षा लेनार बैराग्यथी रंगायलो होवाथी बोले, के हे बन्धो ! हुं आ भोजन विगेरेथी हवे शुं करीश ? में आ सं-
सारमां भमतां अनेकवार भोगव्यु, तो पण त्रुमि न थइ, तो हमणां आ भवमां शुं थवानुं छे ? ए प्रमाणे विचारता केटलाक पुरुषो
संसार स्वभावने जाणनारा दीक्षा लेवा तैयार थइने मावाप तथा वीजां सगांने तथा धन धान्य हिरण्य वे पगवाळां दास दासी तथा
चार पगवाळां पशु विगेरेने छोडवामां (सिंह माफक) वीर माफक आचरण करनारा बनीने योग्य रीते संयम अनुष्ठानमां तत्पर

सूत्रम्
॥७०१॥

आचा०

॥७०२॥

थयेला होय छे, अने हिंसा त्यागी विहिस [दयालु] तथा शोभन व्रत धारण करीने सुव्रत बनेला छे, तथा इन्द्रियो दमीने दांत छे, आबुं निर्मळ वर्तन करनारा छे. आना संबन्धमां नागार्जुनीया कहे छेः—

समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपमूया अविहिंसगा मुब्बया दंता परदत्तभोइणो पांवं कम्मं न करेस्सामो समुद्घाए ॥

अमे आगार (घर) रहित अणगार थइथुं; तेम, अकिंचन अपुत्र अप्रमूत (स्त्री विनाना) दयालु सारा व्रतवाला, इन्द्र दमन करनारा गोचरीथी निर्वाह करनारा बनीने पाप कर्म नहीं करथुं. एम जाणीने दीक्षा ले छे. [सुगम सूत्र होवाथी टीका नथी.] आ प्रमाणे प्रथम सिंह जेवा बनी दीक्षा ले छे, अने पछी दीन (रांक) शीयाळीया जेवा विहार करवामां ढीला बनीने त्यागेला भोगोने पाला ग्रहण करी पतित थयेलाने तुं जो. प्रथम तेओ दीक्षा ले छे, अने पछी पापना उदयथी दीक्षा मुकी दे छे. [गुरुए पोताना शिष्यने स्थिर करवा शिथिक्तानो आवो दृष्टांत आपेल छे.]

प०—तेओ शा माटे दीन थाय छे ? उ०—तेओ इन्द्रियोना विषयो तथा कषायोथी परवश थवाथी वशार्त छे, तेवा शिधिलने कर्मनो बन्ध थाय छे. ते कहे छेः—

सोइंदियवसटैणं भंते ! कइ कम्म पगडीओ बन्धइ? गोयमा ! आउअवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ जाव अणुपरिअद्वै, कोह वसटैणं भंते ! जीवे एवं तं चेव ॥

गौतमनो पश्च—हे भगवन् ! कानने वश थइने जीव केटली कर्म प्रकृतिओ बांधे ? उ०—आयु छोडीने सात. प०—क्रोधने वश थइने केटली ? उ०—एज प्रमाणे. आ प्रमाणे मान विगेरेमां पण समजबुं, वळी ते ढीला साधुओ परीसह उपर्सग आवतां

सूत्रम्

॥७०२॥

आचारा०
॥७०३॥

कातर बने छे, अथवा विषयना रसीआ कातर (बीकण) बने छे.

प्र०—तेओ कोण छे ? अने शुं करे छे ? उ०—तेओ हीला मनवाला बनीने व्रतोना विध्वंसक बने छे, आवुं अहार हजार शीलांगवाळुं ब्रह्मचर्य कोण धारी शके ! आवुं विचारीने द्रव्य लिंग अथवा भावलिंग त्यजीने जीवोना विराधक बने छे, ते लिंग त्यजेलानुं पछी शुं थाय छे ते कहे छे. (अथनो अर्थ पछी छे) केटलाक व्रत लङ्ने भांगी नांखे छे, तेमने (पापना उदयथी) राखते अंतर्मुहुर्तमांज मरण आवे छे, केटलाकनी पापरूप निंदा थाय छे, पोताना साधु के बीजा साधुओमां तेनी अपकीर्ति थाय छे, ते कहे छे. ते आ पतित साधु मसाणना लाकडा जेवो भोगनो अभिलाषी दीक्षा ले छे, अने मुकी दे छे माटे तेनो विश्वास न करवो कारणके तेने अकर्त्तव्यनुं भान नथी ? कहुं छे के :—

परलोक विरुद्धानि, कुर्वाणं दूरतस्त्यजेत् ॥ आत्मानं यो न सधते, सोऽन्यस्मै स्यात् कथं हितः ॥१॥

जे परलोक विरुद्ध अकृत्य करे छे, तेने दूरथी त्यजवो, जे आत्माने चारित्रमां स्थिर नथी राखतो, ते बीजाने हितकारक केवी रीते थाय ? विगेरे समजबु.

अथवा सूत्र वडेज तेनी अश्लाघा बताववा कहे छे, ते आ साधु बनीने विविध रीते भयतो साधुपणाथी भ्रष्ट थयेलो छे. वीप्सा वडे अत्यंत जुगुप्सा (निंदा) बतावे छे. बली, (गुरु शिष्यने कहे छे.) तमे जुओ. कर्मनी प्रवलता केवी छे ? के, जेमनुं नशीब फुटेलुं छे, तेवा उद्युतविहारी (उत्तम साधु) साथे रहेवा छतां पण, हजु तेओ शिथिळ विहार बनी रह्या छे, तथा संयम अनुष्ठान वडे विनयशील बनेला साथे रहीने तेओ निर्दय बनेला पाप अनुष्ठान करनारा छे, तथा विरत साथे अविरत,, द्रव्य, भूत साथे

सूत्रम्
॥७०३॥

आचारो
॥७०४॥

अद्वय भूत पापनां कलंकथी अंकित थवाथी एवा उत्तम साधुओ साथे वसतां पण सुधरता नथी. (अर्थात् जगत्मां सारा साधुओ नजरे जोवा छतां पण, ढीला साधु सुधरता नथी) आवा ढीला साधुने जाणीने शुं करवुं ? ते कहे छेः—हे साधु ! तुं पंडित छे. ज्ञाता ज्ञेय छे, मर्यादामां रहेल मेधावी छे, विषय मुखनी तृष्णा तें दूर करी छे, तथा तुं वीर होवाथी कर्म विदारण करवामां शक्ति-वान् छे, तेथी सर्वज्ञप्रणीत उपदेशना अनुसारे सर्वदा संयम अनुष्ठानमां वर्तजे. आ प्रमाणे सुधर्पास्वामि कहे छेः—

भूत अध्ययननो चोथो उद्देशो समाप्त.



भूत अध्ययन पंचम उद्देशो.

चोथो कहीने पांचमो कहे छे. तेनो आ संबंध छे. गया उद्देशामां कर्म दूर करवा त्रण गौरव छोडवानुं बताव्युं; अने ते कर्म विधूनन उपसर्ग विधूनन विना संपूर्ण भावने अनुभवतुं नथी, तथा सत्कार पुरस्काररूप सन्मानना विधूनन विना गौरव त्रिकनी विधूनना संपूर्णताने न पामे; एथी उपसर्ग सन्मानने विधूनन करवा आ उद्देशो कहे छे. आ संबन्धे—आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे. अस्त्रवलितादि गुण युक्त उच्चारवुं ते कहे छेः—

से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसु वा नगरंतरेसु वा जणवयेसु
वा जणवयंतरेसु वा गामनयरंतरे वा गामजणवयंतरे वा नगरञ्जणवयंतरे वा संतेगङ्गया

सूत्रम्

॥७०४॥

आचार
॥७०५॥

जणा लूसगा भवंति अदुवा फासा फुसंति ते फासे पुट्टे वीरो अहियासए, ओए समिय-
दंसणे, दयं लोगस्स जाणित्ता पाईं पडीण दाहिण उदीण आइकर्खे, विभए किट्टे वेयवी, से
उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु वा सुस्सूममाणंस् पवेयए संति विरङ्गं उवसमं निवाणं सोयं अज-
वियं महवियं लाघवियं अणइवत्तियं सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूयाणं सवेसिं सत्ताणं सवंसिं
जोवाणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइविखजा (सू० १९४)

ते पंडित मेधावी निष्ठित अर्थवाको वीर साधु सदा सर्वज्ञ प्रणीत उपदेश प्रमाणे वर्तनारां गौरवत्रिकथी अप्रतिबद्ध निर्मम नि-
ष्क्रिचन निराश एकाकी विहारपणे [जीनकल्पी जेवो] गाम गाम विचरतो भुद्र तीर्यंच नर, देवे करेला उपसर्ग परिसहोथी दुःखना
स्पर्शो भोगवतो छतां निर्जरानो अर्थी बनीने सारी रीते सहन करे.

प०—कइ जग्याए तेने तेवा परिसह उपसर्गे दुःख दे ? ते कहे छे. आहार विगेरे माटे घरमां जतां (उंच नीच मध्यम जा-
तिनां घरो होय माटे बहु वचन मूत्रमां छे) तथा घरोना वचमां जतां तथा (बुद्धि विगेरे गुणोने खाइ जाय ते गाम) गाममां गामां-
तरमां तथा कर विनानां नगरोमां अथवा अंतराके जतां थाय छे, तथा ज्यां लोकोने रहेवानां स्थान ते जनपद छे, ते अवति

सूत्रम्
॥७०५॥

आचारा०
॥७०६॥

(माळवो) विगेरे छे, ते देशो साधुने विहार योग्य २५ देश छे (ते आर्य देश छे बाकीना ३१९७४ अनार्य छे.) नीचे टीप-
णमां बीजा सूत्रनो* पाठ मुक्यो छे.

ते समये साधुओने विचरवा योग्य क्षेत्रनी बन्धायली हद नीचे प्रमाणे हती.

पूर्व दिशामां साधु साध्वीने मगध देश सुधी विचरवुं कल्पे, दक्षिणमां कोशंबी, पश्चिममां थुणा देश सुधी अने उत्तरमां जाव कुणाला देश सुधी आर्य क्षेत्र छे, तेनी बहार जवुं साधु साध्वीने न कल्पे, उपर बतावेल हदमां आर्य भूमिमां २५॥ देश छे, ते जिनेश्वरे धर्म क्षेत्र तरिके वर्णव्या छे.

ते देशोनी वचमांना भागमां साधु विचरे, अथवा गाम नगरना अंतराले अथवा गाम देशना वचमां तेज प्रमाणे नगर देशना वचमां अथवा उद्यानमां अथवा तेना आंतरे विचरतां अथवा जतां आवतां अथवा ते भिक्षुने गाम विगेरेमां रहेतां कायोत्सर्ग विगेरे करतां केटलाक पापरूप काळाश्थी मलिन अंतःकरणवाला जे माणसो लूषक (हिंसक) होय; ते साधुने दुःख दे छे. (चार गतिमां भमता जीवोमां) साधुने नारकी दुःख देवाने अशक्त छे. तिर्यच अने देवतानो उपसर्ग कोइकज वार थाय; तेथी मनुष्योथीज प्राये साधुने उपसर्ग थाय छे. माटे, जन [माणस] शब्द लीधो छे. अथवा, जेओ जन्मे; ते जन छे, अने तेथी जन शब्दनो अर्थ ति-

*'पुरच्छिभेणं कप्पइ निगंथाण वा निगंथीण वा जाव मगहाओ एत्तष, दक्षिखणेणं कप्पइ निगंथीण वा निगंथीण वा जाव कोसंबीओ एत्तष, पच्छिभेणं जाव थूणाविसओ, उत्तरेणं जाव कुणालाविसओ, ताव आरिष खिते, नो कप्पइ इत्तो बहिंति अस्यां च आर्यभूमिकायां साध्यपञ्चविंशतिर्जनपदा धर्मक्षेत्राण्यहंदिभरुक्तानि ॥

सूत्रम्
॥७०६॥

आचार
॥७०७॥

तिर्यंच नर, अने अमर लीधो छे. एटले, साधुओने विहार विगेरेमां आ त्रणे अनुकूल तथा प्रतिकूल एक अथवा बन्ने प्रकारे उपसर्ग करे छे, तेमां देवताना उपसर्ग चार प्रकारना छे. (१) हास्यथी. (२) द्वेषथी. (३) विमर्शथी. (४) प्रथक् विमात्रथी छे. तेमां प्रथमनो क्रीडामां तत्पर कोइ व्यंतर देव हास्यथीज विविध उपसर्गेने करे. जेमके—मिक्षा माटे आवेला नाना साधुओए मिक्षाना लाभने माटे पलल विकट तर्पण विगेरेथी याचता व्यंतरने मळ्या. पछी, मिक्षा प्राप्त थया पछी तेणे ते चीजो मागी; तेथी, ते व्यंतरने सुशी करवा क्यांयथी ते चीज लावीने तेमणे आपी ते व्यंतरे पण क्रीडामांज ते नाना साधुओ क्षीबा। माफक बनव्या.

[२] द्वेषथी भगवान महावीरने महा महिनामां खरी ठंडमां तापसीनुं रूप धारीने व्यंतरीए पोताना चोटलामां झाडनी छालनुं वस्त्र पाणीथी भींजावीने तेना बडे पाणीनो ठंडो छंटकाव कर्या. [३] विमर्शथी आ साधु धर्ममां दृढ छे के नहि ? ते जोवा अनुकूल प्रतिकूल उपसर्गेथी परीक्षा करे ते बतावे छे. जेमके—संविग्रह साधुनी भक्त बनेली कोइ व्यंतरीए स्त्रीनो वेष धारीने उज्जड देवलमां बेठेला साधुने अनुकूल उपसर्गेथी चलायमान करवा धार्यु पण ते चलायमान न थवाथी आ दृढ धर्यी छे. एम जाणीने भक्तिथी वांशा. (४) जुदी जुदी रीते हास्यथी, द्वेषथी के, विमर्शथी कोइपण एकथी परिक्षा करे. जेमके—भगवान महावीरने संगम नामना एकज देवताए विमर्शथी शरु कर्या, अने द्वेषथी परिषह पुरा कर्या. एटले, आ उपसर्गमां प्रारंभ अने अंत जुदी जुदी रीते थाय छे.

माणसथी पण साधुने चार प्रकारे उपसर्ग थाय छे. [१] हास्यथी (२) द्वेषथी, [३] विमर्शथी, (४) कुशीक्षताना सेवन माटे. तेमां हास्यथी देवसेनागणीकाये नाना युवक साधुने कुमार्गे दोरवा सताव्यो; त्यारे साधुए दांडाथी ताढना करी, वेश्याए राजा पासे फरीयादी करी. नाना साधुने राजाए बोलाव्यो. युवके श्रीगृहनां दृष्टांतथी समजाव्यो. के हे राजन ! तारो खजानो लुंटे तो तुं

सूत्रम्
॥७०७॥

आचारा०

॥७०८॥

शुं करे ? उत्तर—शिक्षा करुं. साधुए कहुं केः—तेवी रीते में घणी समजावी के, साधुओनुं धन निर्मल शीळ छे. माटे, तुं दूर था. पण, तेणे कोइ रीते न मान्युं. माटे, जरा शिक्षा करवी पडि छे. (२) द्रेषथी सोमभूति ससराए गजसुकुमारने माथा उपर बळता अंगारा भर्या. [३] विमर्शथी चाणाक्य मंत्रीनी प्रेरणाथी चंद्रगुप्त राजाए धर्मनी परीक्षा करवा पोतानी राणीओ पासे धर्म संभलावता साधुने उपसर्ग कराव्यो. साधुए पण बीजो कोइ उपाय छेवट मुधी न जोवाथी थोडी ताडनाथी दूर करी, राणीओए फरीयाद करी. साधुए राजना भंडारनो दाखलो आपी राजाने प्रतिबोध्यां. [४] कोइ दुराचार माटे प्रार्थना करे. जेमके—इर्ष्याल्लु शेठना घरमां धणीना अभावमां कोइ पण संजोगोथी त्यां एक साधु रात रह्या. तेमने चार जुवान स्त्रीओए धणीना अभावे वाराफरती तेमने आखी रात पजव्या; पण दरेक पहोरमां ते न लोभातां मेरु पर्वत माफक निश्चल रह्यां तिर्यचना पण भय, द्वेष, आहार अने बाळक रक्षणना माटे चार प्रकारेज उपसर्ग छे. (१) भयथी साप विगेरे चमकीने करडे छे. द्रवेशथी भगवान् महावीरने चंडकोशीए उपसर्ग कर्या. आहारमाटे सिंह वाघ विगेरे मारे छे. अने अपत्य रक्षण माटे काकी [] विगेरे पीडे छे.

उपर बताव्या प्रमाणे उपसर्ग करवाथी (उपर बतावेला अर्थ प्रमाणे जनो साधुओना लूळक (दुःख देनारा) छे.

अथवा तेवा तेवा गाम विगेरे स्थानमां जतां दुःखना स्पर्शी आत्माने पीडनारा थाय छे. ते चार प्रकारना छे. जेमके आंखमां कणु विगेरे पडवाथी घट्टनता थाय छे. अने भमेलनी मूर्छा विगेरेथी पतनता [पडबुं] थाय छे. वायु विगेरेथी स्तंभनता (रोकाण) थाय छे अने ताळवा विगेरेमां अंगुली विगेरे घालवाथी इलेषणता () थाय छे.

अथवा वात पित्तइलेष्य विगेरेना क्षोभथी कडवा स्पर्शी थाय छे. अथवा निष्किञ्चनपणाथी तुण स्पर्श डांस मच्छर तथा दंड

सूत्रम्

॥७०८॥

आचारा०

॥७०९।:

ताप विगेरेना पीडारूप स्पर्शो कोइ वखत थाय छे.

तेवा कोइ पण परीसहो आवे तो तेना दुःखना स्पर्शोथी साधु पोते धीर बनीने सहन करे, मनमां चितवे, के आथी पण वधारे दुःखो नारकी विगेरेमां कर्मना अबंध्यपणाथी बांधेलां उदयमां आवतां पछी पण भोगवतानां रहेशे, माटे इमणांज भोगवतां ठीक छे, एम विचारी सहे.

केवो मुनि सहन करे ? उ०—कहे छे. अथवा उपर बतावेल साधु पोताना उत्तम गुणोथी परीसहो सहीने पोतानोज रक्षक छे. एम नहीं पण सुबोध बडे बीजाओनो पण रक्षक छे. ते बतावे छे. 'ओजः' एकलो राग विगेरेथी रहित सारी रीते दर्शनने पामेलो ते समित दर्शन छे अथवा सम्यग्दृष्टि छे, अथवा उपशमने पामेला दर्शनवालो, अर्थात् दृष्टि ते ज्ञान छे. ते समित दर्शन छे. एउले उपशांत अध्यवसायवालो जाणवो.

अथवा समताने पामेला दर्शनवालो अर्थ दृष्टि लेतां समदृष्टि जाणवो एउले एवा उत्तम गुणोने धारण करनार साधु परीसहोने सहे अथवा (पछीना क्रीयापद साथे संबन्ध लेतां) ते धर्मने कहे.

प्र०—शुं आलंबन लइने ? उ०—कहे छे, ते जंतुलोक (जीवमात्र) उपर द्रव्यथी दया जाणीने धर्म कहे. [के ए जीवो कोइ-पण रीते तरो] क्षेत्रथी पूर्ब, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर तथा बीजी पण दीशाना विभागोमां (वधी जग्याए) जोइने सर्वत्र दया करतो ते साधु धर्म उपदेश करे छे. काळथी आखी जींदगी सुधी दया पाले छे. भावथी रागद्वेष त्यागीने मध्यस्थ पणे धर्म कहे छे.

प्र०—केवी दीते कहे ? उ०—वधा जीवो दुःखना द्वेषी सुखना चाहनार पोताना आत्मानी माफक सदा जाणी लेवा कर्णु छे के.

सूत्रम्

॥७०९॥

आचार
॥७१०॥

न तत्परस्य संदध्यात्, प्रतिकूलं यदात्मनः ॥ एष सङ्ग्राहिको धर्मः, कामादन्यः प्रवर्तते ॥१॥

जे पोताने गमतुं नथी, तेवुं बीजाने न करवुं. एज संग्राहिक (सार रूप) धर्म छे ते काम (इच्छाओ)थी जुदो प्रवर्ते छे. (पोते दुःख भोगबीने पण बोजाने मुख आपवुं) विगेरे छे, ते प्रमाणे धर्मने कहेतां पोते पण द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावना भेदांवडे अथवा आक्षेपणी विगेरे चार प्रकारनी कथाओ बडे पोते पण जीव हिंसा जुठ चोरी कुसंग परग्रह अने रात्रि भोजन विगेरे अकार्यथी दूर रही धर्म पाले. अथवा आ पुरुष कोण छे ? क्या दृष्टे माने छे ? तेनो अभिप्राय केवा छे ? अथवा अभिप्राय विनानो छे ? एवुं बधुं विचारीने सांभळनारनी योग्यता प्रमाणे व्रतो तथा संयम अनुष्ठाननुं फल बतावे.

प्र०—आवो धर्म कोण कहे ? उ०—वेद [जैन आगम] जाणनारो होय ते. आ संबंधमां नार्गार्जुनीया आ प्रमाणे कहे छे.

जे खलु समणे बहुसुए वज्ञागमे आहरणहेउकुसले धर्मकहालद्विसम्पन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केऽयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसम्पन्नो ? एवं गुणजाइए पभू धर्मस्स आघ वित्तए ॥

जे निश्चये साधु बहुश्रुत आगमनो जाण दृष्टांत हेतु बताववामां कुशल धर्म कथानी लब्धिवालो क्षेत्रकाळ पुरुष ए बधानो विचार करे के आ पुरुष कोण छे. तेनुं मंतव्य शुं छे. ए प्रमाणे गुणोनी जातिए युक्त होय तेज धर्म कहेवाने समर्थ छे.

प्र०—ते केवा निमित्तोमां धर्म कहे ? उ०—ते आगमनो जाण पोताना तथा बीजा मतना सिद्धांतने जाणनारो भावउत्थान बडे उठेला साधुओमां धर्म कहे. (वा शब्दनो संबंध बीजा पक्षनो प्रकाश करे छे.) एटले पार्वनाथ भगवानना मोक्ष गया पछी पण तेमना साधुओ ते समयना रिवाज प्रमाणे चार महाव्रत पालता विचरे, तेमने समय बदलातां महावीर प्रभुना शासनमां रहेल गण-

सूत्रम्

॥७१०॥

आचारा०

॥७११॥

धरो पांच महाव्रतनो धर्म बतावे (जेओ केशी गणधरना शिष्योने गौतमस्वामिना शिष्योनो मेळाप थयो, अने बन्नेमां शंका थतां बन्नेना गुरुओ भेगा थतां गौतमस्वामिए केशीगणधरने पंच महाव्रतनो धर्म समजाव्यो. अने तेमणे स्त्रीकार्यो.)

अथवा पोताना शिष्यो जेओ विनयथी सांभळवा उभा थ्या होय तेमने नवुं तत्व जाणवा माटे धर्म संभळावे, अथवा दीक्षा न लीधेला श्रावक विगेरे जेओ धर्म सांभळवानी इच्छावाळा बनी गुरु विगेरेनी सेवा (वैयावच्य) करता होय; तेमने संसारथी पार उतारवा गुरु धर्म कहे छे. प्रः—केवो धर्म कहे ? उः—शमन [शांति अहिंसा] तेवा जीव दयाना धर्मने कहे; तथा जीव रक्षा करवा विरति समजावे. आ विरतिना सूचनथी जुठ विगेरेनी विरति जाणवी. एटले, पांचे महाव्रत समजावे; तथा उपशम क्रोधना जयनुं स्वरूप बतावे; तेथी उत्तर गुणोनो पण उपदेश करे एम जाणवुं; तथा निर्वृत्ति (निर्वाण) मोक्षनुं स्वरूप बतावे. के, मूळ गुण अने उत्तर गुण बरोबर पालवाथी आ लोकमां बहु मान, अंपूर्व शांति, अने पर भवमां स्वर्गनुं सुख, अने छेवटे मोक्ष मळे छे.

तथा शोच एटले बधी उपाधीथी रहित पवित्र व्रतनुं धारवु, तथा मायानी वक्रता त्यागवाथी आर्जव छे, तथा प्रान स्तव्यपणुं त्यागवाथी कोमळता छे, तथा बाह्य अभ्यंतर ग्रन्थ त्यागवाथी लाघव छे, ते केवी रीते कहे छे. ते बतावे छे यथावस्थित वस्तु जेवी रीते आगममां कही होय तेवी रीते ओलंघ्या विना कहे छे. प्रः—कोने कहे छे ? उः—दश प्रकारना प्राणने धारनारा प्राणीओ ते सामान्यथी संज्ञी पञ्चेन्द्रियोने कहे छे. तथा मुक्ति गमन योग्य जे भव्यपणे भूत [रहेला] छे, तेमने कहे छे. तथा संयम जीवितवडे जीवे छे. अने जीववानी इच्छावाळा जीवो छे. तथा तिर्यच नर, अमर, जेओ संसारमां दुःख पामता रहेला छे. अने दयाने पात्र छे, तेवा बधा सत्वोने धर्म कहे छे. अथवा प्राणी भूत जीव सत्त्व ए चारे एक अर्थवाळा छे. तेवा जीवोने तेमनी योग्यता प्रमाणे

सूत्रम्

॥७११॥

आचार
॥७१२॥

शांति विगेरे दश प्रकारनो धर्म पूर्वे बतावेलो छे, ते कहे छे. अने शांति विगेरे पदोमां बतावेल तत्वने विचारीने स्व अने परना उपकार माटे भिक्षु जे धर्म कथानी लब्धिवालो होय ते कहे छे. अने ते धर्म जेवी रीते कहे छे, ते बतावे छे.

अणुवीइ भिकखू धस्समाइक्खमाणे नो अत्ताणं आसाइज्जा नो परं आसाइज्जा नो अन्नाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाइज्जा, से अणासायए अणासायमाणे वज्ज्ञमाणाणं पाणाणं भूयाणं जोवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणं एवं से भवइ सरणं महामुणी एवं से उट्ठिए ठिथप्पा अणिहे अचले चले अबहिल्लेसे परिव्वए संक्खाय पेसलं धस्मं दिट्टिमं परिनिव्वुडे, तम्हा संगंति पासह गंथेहि गढिया नरा विसन्ना कामकंता तम्हा लूहाओ नो परिवित्तसिज्जा, जस्सिमे आरंभा सब्बओ सब्बप्पयाए सुपरिन्नाया भवंति जेसिमे लूसिणो नो परिवित्तसंति, सेवंता कोहंच माणंय मायं च लोभं च एसतुडे वियाहिए तिबेमि (सू० १९५)

ते मुमुक्षु भिक्षु-धर्मने पूर्वापर विचार करीने, अथवा सांभळनार पुरुषनी पूर्वा पर स्थिति विचारी जेने जेबुं कथन योग्य होय, तेवो धर्म तेने कहे छे. (आ उपसर्ग मर्यादाना अर्थमां छे तेथी,) मर्यादावडे सम्यग् दर्शन विगेरेनुं जेबुं अनुष्ठान होय, तेथी शातना (विरुद्ध) करतां अशातना थाय छे माटे, तेवी अशातनार्थी आत्माने दोषित न करे. अर्थात् जेम आशातना न थाय; तेम

सुत्रम्
॥७१२॥

आचारो
॥७१३॥

धर्म कहे; अथवा आत्मानी आशातना वे प्रकारे हे. द्रव्यथी तथा भावर्थी, द्रव्ययथी जेम, आहार उपकरण विग्रेरे द्रव्यनी काल अति पातादि संबंधी आशातना (बाधा) न थाय; तेम कहे. (लोकोने जमवानो वस्त्र होय; तेढळी मोडी वार सुधी कथा कहे; तो, लोकोमे शरमथी न उठां जमतां अंतराय थाय; अथवा शिष्योने गोचरी लावतां वहेचतां मोडुं थतां, पोताने तथा बाळवृद्ध तपस्वी मांदाने काळ उलुंघतां बाधा थाय) ते आहार विग्रेरे द्रव्यरी बाधायी पोताना शरीरने पण पीडा थाय; तेथी भाव मलिन थतां भावाशातना पण थाय, अथवा कहेतां गात्र भंग रूप भाव आशातना न थाय तेम कहे; तथा सांभळनारनी हीलना (निंदा) न करे; के, सांभळनारने क्रांध चढतां आहार उपकरण अथवा साधुना शरीरनी कोइ पण रीते पीडा करवामां तत्पर थाय तेम कथा न करे, एथीज सांभळनारनी आशातना वर्जीने धर्म कहे, अथवा अन्य प्राणी भूत जीव सत्वोने बाधा न करे, ते मुनि पोतानी मेळे पोतानो रक्षक होवाथी अनाशातक हे. तेम बीजा क्रोधी न बनाववाथी पोते बीजानी आशातना करतो नस्थी. तेम कोइ आशातना करे तो तेनी अनुमोदना न करतो (बीजा) मराता प्राणीओ भूतो जीवो सत्वोने पोताना तरफथी के पारका तरफथी पीडा न थाय तेवो धर्म कहे. जेमके कोइ लौकिक कुप्रावचनीक पासत्था विग्रेरेने दान आपवानी प्रशंसा करे, अथवा कुवा तळाव बनाववानी प्रशंसा करे तो पृथ्वीकाय विग्रेरेने दुःख थाय, तेनो देष साधुने लागे, तथा ते दाननी मिंदा करे तो ते बीजा जीवोने दान न घलवाथी साधुने अंतराय कर्म बन्धावानो विपाक भोगवतो पडे. कल्युं हे के:—

जे उ दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं । जे उ णं पडिसेहिति, वित्तिच्छेऽमं कर्त्तिति ते ॥१॥

जेओ साधु थङ्गे असाधुना दाननी प्रशंसा करे हे, ते सावध होवाथी साधुओने प्राणीओना वधनो दोष लागे हे. अने ते

सूत्रम्
॥७१३॥

आचा०
॥७१४॥

दाननी निदा करे तो दान लेनारनी वृत्तिनो छेद करे छे.

तेथी ते दान तथा कुवा तळाव संबंधी विधि निषेधमां मध्यस्थ भाव राखीने यथावस्थित शुद्ध दाननी प्रस्तुपणा करे, तथा सावद्य अनुष्टाननुं स्वरूप बतावे, (के आ पाप न करवां जांडए.) आ प्रमाणे उपयोग राखी बंलनारो साधु बन्ने दोषने त्यागनारो जीवोने आश्वास भूमि आपनारो थाय छे. आ बाबने दृष्टांतथी समजावे छे. के पूर्वे बतावेल असंदीन द्वीप (भरतीना पाणीथी न डुबतो) शरण रूप थाय छे. तेम आ महामुनी जीवोना रक्षणनो उपाय बताववार्थी मारनारा जीवोना रक्षा करनार तथा मरनार हिंस-कने तेना पापी विचारथी बचाववार्थी विशिष्ट गुण स्थान मेळववार्थी शरण लेवा योग्य थाय छे. ते कहे छे.(पूर्वे कहा प्रमाणे विधिए जे धर्म कथाने कहे, ने केटलाक जीवोने दीक्षा अपावे छे. केटलाकने श्रावको बनावे छे. केटलाकने सम्यग्दर्शनवाळा करे छे, अने केटलाकने मिथ्यात्वथी हठावी भद्र परिणामवाळा बनावे छे.

प०—केवा गुणवाळो आ साधु द्विप माफक शरण योग्य थाय छे ?

उ०—हवे पछी कहेवाता भाव उत्थानवडे संयम अनुष्टान करतो उल्कृष्टथी तैयार होय; तथा ज्ञानादिकरूप मोक्षना मार्गमां स्थित होय तथा स्नेह रहित होय तथा रागद्वेष छोडवार्थी अप्रतिबद्ध होय, तथा परिसह उपसर्गमां चलायमान न थाय, माटे अचल छे. अने एक जग्याए पडी न रहेतां योग्य विहार करवार्थी चल पण छे तथा संयमथी जेनी लेश्या [अध्यवसाय] बहार न होय, ते अबहिलेश्यावाळो कहेवाय. एवो मुनी बड़ी रीते संयम अनुष्टानमां वर्ते. पण कोइ जग्याए फसाय नहि, प्र. ते शा माटे संयम अनु-ष्टानमां वर्ते ‘संरव्याय’ एटले ज्ञोभन धर्मने विचारी अनिपरीत दर्शन [दृष्टि]वाळो थाय अथवा सदनुष्टानरूप दृष्टिवाळो [दृष्टिमान]

सुत्रम्

॥७१४॥

आचा०

॥७१५॥

बने, अने तेनुं कारण तेना कषायो काँसो शांत होय छे, कांतो क्षय होय छे, तेथी पोते परिनिवृत श्रीतीभूत (ठंडा स्वभावनो) छे, पण तेवा गुणवाळो न होय, ते मिथ्यादृष्टि जीव पेशल धर्मने पामतो नथी, ते बतावे छे, (इति अव्यय हेतुना अर्थमां छे) जेर्थी मिथ्या दृष्टिनुं विपरीत दर्शन होवाथी संग (प्रेम) वाळो मोक्षमां न जाय, तेथी तेना माता पिता पुत्र स्त्री संबंधी अथवा धन धान्य विगेरेथी यथा संग विपाक ने तमे जुओ ! विवेकथी हृदयमां विचारो ! मूत्रथीज संग कहे छे, ते संगवाळा नरो बाहु अभ्यंतर ग्रन्थथी गुंथायेला गृद्ध थयेला ग्रन्थना संगमां इच्छित न यतां खेद पामता छता संग्रह निमग्न इच्छा मद्दन कामथी आकांत (अवष्टव्य, खुंचेला) बनेला मोक्षमां जता नथी.

प्र०—जो एम छे तो शुं करवुं ? उ०—जे कामथी आसक्त (प्रेमी) चित्त थइने सगां तथ धन धान्य विगेरेमां मूऱ्डा पामेला काम संबंधी शरीर मन विगेरेनां दुःखोथी पीडायेला छे, तेनाथी हे शिव्य ! तुं लुखा देखाता संग दूर करवा रूप संयमथी त्रास न पामीश, संयम अनुष्ठानथी कंटाळतो नहि, कारणके संयमना दुःख करतां प्रभूत (अतिशे) दुःख भोगवनारा संसार संगी जीवो छे.

प्र०—क्या साधुने संयमथी न ढरवानो संभव छे ? उ०—जे महामुनिए सारी रीते संसार मोक्षनां पूर्वे कहेलां कारणो जाण्यां छे, तेने आ संग रूप आरंभो अविगान (एक सरखा) पणे बधा माणसे आचरेल छे, अने ते प्रत्यक्ष होवाथी इदम् [आ] शब्दवडे बताव्या छे, ते आरंभो सर्वे प्रकारे जाणीता छे.

प्र०—ते आरंभो केवा छे ? उ०—जेमां ग्रन्थना गुंथायेला विषण्ण चित्तवाळा काम [इच्छा] ओना भारथी फसायेला माणसो हिंसक बनेला अज्ञान मोहना उदयथी पाप करतां त्रास पामता नथी, पण जे उपर बतावेला आरंभोने ज्ञ परिज्ञावडे जाणीने

सूत्रम्

॥७१५॥

आचा०

॥७१६॥

प्रत्याक्ष्यानपरिज्ञावडे त्यागे छे, नेणेज आरंभो सारीरीते जाणेला समजवा.
प०—जे आरंभोनो परिज्ञाता छे, ते बीजुं शुं करे ? ते कहे छे.

ने महा मुनी पूर्वे बतावेला उत्तम गुणवाळो छे, ते क्रोध मान माया लोभने त्यागीने मोहनीय कर्म तोडे; ('त्यागीने' ए अब्यय पथम लेवानुं कारण ए छे के ते क्रोध विगेरे चारे कगायो बधा भेद सहित त्यागताना छे. अने क्रोधने प्रथम लेवानुं कारण तेनो संबन्ध मान साथे छे. एउले मानीने क्रोध थाय छे. तथा लोभने माटे माया थाय, माटे प्रथम माया लीधी छे. अने बधा दोषाना आश्रय तथा सौथी मोटो अने छेवट सुधी रहेतो हांवाथी लोभने छेल्हो लीधो छे.

अथवा क्षपणा ते कर्मनी निर्जरामां ते प्रमाणे क्रम छे. 'चकार' निश्चयथी जुदी जुदी अपेक्षा माटे समुच्च्य अर्थमां छे) तेथी ए प्रमाणे क्रोध विगेरे मोहने त्यागनारो संसार संतति (भवभ्रमण) थी तुट्ठ (छुटेलो) तीर्थकर विगेरेण वर्णव्यो छे. एवुं सुधर्मास्वामि कहे छे. अथवा हवे पछीनुं पण तेओ कहे छे, ते बतावे छे.

**कायस्स वियाघाए एस संगामसीसे वियाहिए सेहु पारंगमे मुणी, अविहम्माणे फलगावयट्टी
कालोवणीए कंखिज्ज कालं जाव सरोरभेउत्तिवेमि धूताध्ययनम् (सू० १९६) ६-५ ॥**

आौदारिक विगेरे त्रण शरीर अथवा चार घाति कर्मनो नाश करवा माटे ते मुनी संग्रामना मथाले उभेलो वर्णव्यो छे. अथवा [चि धातुनो अर्थ एकटुं करवानो छे ते एकटुं थाय छे.] ते कायने आयुष्यना क्षय सुधी घात करनारो बने, [कायानो ममत्व मूकी

सुत्रम्

॥७१६॥

आचारा०

॥७१७॥

कर्म तोडवा जींदगी सुधी प्रयास करे. तेज मुनि पारंगामी जाणवो.]

जेम संग्रामने मोखरे शत्रुना सैन्य सामे तिक्षण तलवारनी प्रभायी उगता सुरजनी माफक विजळीना चमकारा माफक देखाव करी जोनारनी आंखोमां चमत्कार करावनार अने पोतानुं कार्य करवा छतां पण, ते सुभट चित्तनो विकार (कोइ वरवत) करे छे. तेज प्रमाणे मरण समय आवे छते, स्थिर मनवाळो होय; तो पण, कोइ वरवत संजोगोने आधारे तेनो भाव बगडी पण जाय; तेथी कहे छे केः—जे मरण काळे अनेक दुःख आवे छते पण मोह पामतो नथी. तेज मुनि संसारनो पारंगामी अथवा कर्मनो, अथवा पोते लीधेला महाव्रतना भारनो पर्यंत पामी (छेवट सुधी पहोंचनारो विजयी) छे.

बळी, जुदा जुदा परिषह उपसर्गो वडे हण्यलो छतां, कंटाळो न खातां उंचेथी पडीने अथवा गार्दपृष्ठ (आपघात) अथवा बीजी कोइ पण रीते आपघात न करे.

अथवा हणातां पण बाह्य अभ्यंतर तप तथा परिषह उपसर्गो वडे धैर्य राखी पाटीया माफक स्थिर रहे; पण, मरवाना भयर्थी दीनता न लावे. तेज प्रमाणे काळे परवशता पमाडेलो (जीर्ण शरीर थतां) बार वरसनी संलेखना वडे आत्माने दुर्बल करी पहाडनी गुफा विगेरेमां जग्या निरवध जोइने पादपोपगमन इंगित मरण अथवा भक्त परिज्ञा ए त्रणमांथी कोइ पण अवस्थावालुं अणसण करीने मरणनी अवस्था सुधी आयुनो क्षय थाय; अने शरीरथी जीव जुदो पडे; त्यां सुधी स्थिरता राखे आज खरी रीते मृत्युनो समय छे. अथवा शरीरनो भेद छे. आज जीवनो विनाश छे. पण, सर्वथा जीवनो विनाश नथी; एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे.

सूत्रम्

॥७१७॥

आचारा०
॥७१८॥

आ प्रमाणे—पांचमो उद्देशो समाप्त थतां, धूतारुय नामनुं छटुं अध्ययन पण समाप्त थयुं. (शीकाना श्लोक ८३५ छे.)
छटुं अध्ययन समाप्त
छट्टा पछी सातमुं अध्ययन कहेवुं जोइए, पण ते विच्छेद जवाथी आठमुं विमोक्ष नामनुं अध्ययन कहे छे.

अथाष्टमं विमोक्षाध्ययनम्

सातमुं अध्ययन महापरिज्ञा नामनुं हतुं, ते विच्छेद जवाथी तेने मुकी छट्टा साथे आठमानो संबंध कहेवो जोइए, ते आ प्रमाणे छे. छट्टा अध्ययनमां पोतानां कर्म शरीर, उपकरण तथा गौरवात्रिक तथा उपसर्ग सन्मानना विधूनन वडे निःसंगता बतावी, पण जो अंतकाळे सम्यग् निर्याण थाय तोज ते सफळता पामे तेथी सम्यग् निर्याण (समाधि मरण) बताववा माटे आ आरंभ करे छे.

अथवा निःसंग विहारी साधुए अनेक प्रकारना परिसह उपसर्गे सहन करवा, एवुं छट्टामां बताव्युं, तेमां मारणांतिक उपसर्ग आवे छते अदीन मनवाळा बनीने सम्यग् निर्याणज करवुं, ए विषय बताववा आ आठमुं अध्ययन छे; आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोग द्वार थाय छे, तेमां उपक्रम द्वारमां आवेलो अर्थ अधिकार बे प्रकारनो छे, तेमां अध्ययननो पूर्वे कद्दो छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार निर्युक्तिकार कहे छे.

असमणुब्रस्स विमुक्तवो, पढमे विइए अकप्तियविमुक्तवो; पडिसेहणा य रुद्धस्स, चेव सब्भावकहणा य; ॥२५३॥

तइयंभि अंगचिद्वाभासिय आसंकिए य कहणा य; सेसेसु अहीगारो उवगरणसरीरमुक्खेसु ॥२५४॥

सुत्रम्

॥७१८॥

आचारा०
॥७१९॥

उद्देसंभि चउत्थे, वेहाणसगिद्धपिद्धमरणं च । पंचमए गेलन्नं, भत्तपरिज्ञा य बोधव्वा ॥२५५॥
छहुंभि उ एगत्तं, इंगिणिमरणं च होइ बोधव्वं । सत्तमए पडिमाओ, पायवगपणं च नायव्वं ॥२५६॥
अणुपुञ्चिविहारीणं, भत्तपरिज्ञा य इंगिणिमरणं । पायव गमणं च तहा अहिगारो होइ अद्वयए ॥२५७॥

पहेला उद्देशामां आ प्रमाणे अर्थाधिकार छे:—

अ समनुज्ञा (पासत्था) वाळा असमनोङ्ग [स्वच्छंदाचारी] अथवा त्रणसो त्रेसठ अन्यवादीओनो विमोक्ष [परित्याग] करवो, तेज प्रमाणे तेमनो आहार उपधि शश्या तथा तेमनुं मंतव्य त्यागवुं, तेमां प्रथम भगवाननी आज्ञा बहार वर्ते ते पासत्था विगेरे छे, अने असंमनोङ्ग ते चारित्र तप अने विनयमां हीन तथा यथाच्छंद साधु ते ज्ञानविगेरे पांचे आचारमां हीन होय, तेवानी संगति न करवी [त्रणसेलेसठ एकांत वादीनो पण त्याग करवो]

बीजा उद्देशामां अकल्पनीय ते आधाकर्मी विगेरे दोषित वस्तुनो त्याग करवो, अथवा आधाकर्मी आहारवडे कोइ निमंत्रणा करे, तो तेनो निषेध करवो अने तेनो निषेध करतां दान देनारने क्रोध चडे, तो तेने सिद्धांतनुं तत्व समजाववुं के आवा निर्दोष आहारनुं अमने दान आपे तो तने तथा अमने गुणकारी छे.

बीजा उद्देशानो अधिकार

गोचरी गयेला साधुने ठंड विगेरेथी अंग धूजतां गृहस्थने आवी शंका थाय के, इन्द्रियोनी उन्मत्तताथी पीडायेला अने शृंगार भावमां रमेला चित्तवाळा आ साधुने कंपारो थाय छे, आवुं बोले, अथवा तेने शंका पडे, तो ते शंका दूर करवा खरी वात समजा-

सूत्रम्
॥७१९॥

आचारा०

॥७२०॥

वर्वी (अने तेने शांत उरवो)

बीजा पांचमा उद्देशानो अधिकार—उपकरण तथा शरीरनो मोक्ष (त्याग) करवो, ते संक्षेपथी तथा खुलासाथी कहे छे, एटले चोथा उद्देशामां आ अधिकार छे, के वैहानस ते उद्बन्धन (फांसो खावो) गाँड़ पृष्ठ ते बोजाने मांस विगेरेना हृदयना न्यासथी (बीजाने पोतानुं मांस अर्पण करवुं ते) गृद्ध (गीध) विगेरेथी पोतानो नाश कराववो.

ए वे प्रकारना मरण [आपघात] नुं वर्णन—पांचमा उद्देशामां-ग्लानता अने भक्त परिज्ञा समजवी, छठामां एकत्र भावना तथा इंगित मरण जाणवुं. सातमामां मास विगेरेनी भिक्षुकनी प्रतिमाओ बतावी छे तथा पादपोपगमननुं वर्णन छे, आठमामां अनु-पूर्वे विहार करनारा दीर्घ संयम पाळनारा शास्त्रार्थं ग्रहणना स्वीकार पछी तेनाथी निवृत्ति लेवा संयम अध्ययन तथा अध्यापन (शीखववुं) तथा निर्मल क्रिया करनारा साधुओ तैयार थया पछी (उत्कृष्ट तप वडे) कायाने दुर्बल बनावीनी (आचार्य के गच्छनायक) भक्त परिज्ञा, इंगित मरण अथवा पादपउगमन ए त्रणमांथी कोइ पण स्वीकारे तेनुं वर्णन छे.

आ प्रमाणे पांच गाथानो संक्षेपथी अर्थ कहो, अने विस्तारथी तो दरेक उद्देशामां कहेवाशे, निक्षेप त्रण प्रकारे छे, ओघ निष्पन्न नाम निष्पन्न अने सूत्रालापक निष्पन्न छे, ओघमां अध्ययन छे; नाममां विमोक्ष छे, ते विमोक्षना निक्षेपा निर्युक्तिकार कहे छे.

नामंठवणविमुक्त्वो, दब्वे खित्ते य काल भावे य; एसो उ विमुक्त्वसा निक्षेवो छविहो होइ ॥२५८॥

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भाव विमोक्ष एम छ प्रकारे छे, संक्षेपथी कहां, अने विशेषथी कहेवा नाम स्थापना सुग-मने छोडी द्रव्यादि विमोक्ष बताववा कहे छे,

सूत्रम्

॥७२०॥

आचारा०
॥७२१।

दव्वविमुक्खो नियलाइएसु खित्तंमि चारयाईंसु; काले चेइयमहिमाइएसु अणधायमाईओ । २५९॥

द्रव्य विमोक्ष आगम अने नो आगम एम बे भेदे छे, आगमथी ज्ञाता पण तेमां तेनो उपयोग न होय.

नो आगमथी ज्ञ शरीर भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त (जुदो) निगडादिक विषयभूत (बेडीमांथी) जे छुटकारो थाय ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अथवा मागधीमां सातमी विभक्ति छे तेनो अर्थ पांचमी विभक्तिमां लइए तो) बेडी विगेरे द्रव्यथी छुटबु, ते द्रव्य विमोक्ष छे, (अपर कारक वचननो संभवतो अर्थ भणेलाए पोतानी मेळे विचारीने योजवो ते बतावे छे जेमके) द्रव्य बडे, के द्रव्यथी, एटले सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यथी मोक्ष ते द्रव्य विमोक्ष विगेरे सप्तज्वो.

क्षेत्र विमोक्ष ते जे क्षेत्रमां पोते चारक विगेरेथी पकडाएलो होय, तेमांथी छुटकारो थाय, ते क्षेत्र विमोक्ष छे.

अथवा क्षेत्रना दानथी अथवा जे क्षेत्रमां मोक्षनुं वर्णन चाले ते क्षेत्र विमोक्ष छे. अने काळ विमोक्ष चैत्य महिमा विगेरेमां जेटलो काळ अमारी पटह वगडावे. अने आरंभ जीवहिंसा विगेरे बन्ध थाय ते अथवा जे काळे मोक्षनुं वर्णन चाले, तेने आश्रयी काळ मोक्ष छे. आ गाथानो अर्थ छे. हवे भाव विमोक्ष बतावे छे.

दुविहो भावविमुक्खो देसविमुक्खो य सव्वविमुक्खो य । देसविमुक्खा साहू सव्वविमुक्खा भवे सिद्धा ॥२६०॥

भाव विमोक्ष बे प्रकारे छे. आगमथी ज्ञाता अने उपयाग राखनार छे. अने नोआगमथी बे प्रकारे छे. देशथी तथा सर्वथी छे. देशथी अविरत सम्यग् दृष्टि जीवोने अनंतानुबंधीनी चोकडी क्षय उपशम थवाथी तथा देश विरतीने अनंतानुबंधी तथा अप्रत्याख्यानी चोकडीओ क्षय उपशम थवाथी छे. अने साधुओने प्रथमना बार कषायो (संज्वलननी चोकडी सिवाय) क्षय उपशम थवाथी अने

सूत्रम्

॥१२१॥

आचारा०
॥७२२॥

क्षपक श्रेणीमां जेने जेटलो काळ कषायो क्षीण थाय, तेने तेटलानो क्षय थवाथी देश विमुक्ति छे, तेथी साधुओ देश विमुक्त छे. भवस्थ केवली साधुओ पण भव उपग्राहिक कर्मना सज्जावथी देश विमुक्तज छे, अने सर्वथा विमुक्त तो सिद्ध भगवतंज थाय छे. (गाथार्थ)
शंका—मोक्षनो पूर्वे बंधपणुं होय छे, जेमके निगड (हेड) विगेरे बन्ध होय तो तेना मोक्षनो संभव थाय, ते शंका दूर करवा माटे बन्ध अभिधान पूर्वक मोक्ष बतावे छे.

कम्मयदव्वेहिसमं, संजोगो होइ जो उ जीवस्स । सो बन्धो नायब्बो, तस्स विओगो भवे मुक्खो ॥२६१॥

कर्म वर्गणाना द्रव्य (पुद्रलो) साथे जे जीवनो संगोग छे, ते प्रकृति स्थिति अनुभाव अने प्रदेश रूप बद्ध स्पृष्ट निधन निकाचन अवस्थावालो बन्ध जाणबो. कारण के आत्मानो एकेक प्रदेश अनंत=अनंत कर्म पुद्रले. बडे बन्धायले, छे, अने अनंत अनंत नवा बन्धाइज रहा छे, कारणके बाकीना अग्रहण योग्य छे.

प्र०—आठ प्रकारनां कर्म केवी रीते बन्धाय छे ? उ०—मिथ्यात्वना उदयथी—कबुँ छे, के.

“ कहं ण भंते ! जीवा अटु कम्मपगडीओ बंधति ?, गोअमा ? णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दरि-
सणावरणिज्जं कम्मं निअच्छन्ति, दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं णियच्छन्ति, मिच्छत्तेणं उइ-
बेणं एवं खलु जीवे अटु कम्मपगडीओ बन्धइ ” यदि, वा—“ णेहतुप्पिअगत्तस्स; रेणुओ लग्गई जहा
अंगे । तह रागदोसणेहालियस्स कम्मंपि जीवस्स ॥१॥ ”

प्र०—हे भगवन् जीवो आठ प्रकारनं कर्मो केवी रीते बांधे छे ?

सूत्रम्

॥७२२॥

आचा०

॥७२३॥

उ०—हे गैतम ! ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी दर्शनावरणीय कर्म बन्धाय छे, तेथी मिथ्यात्वनो उदय थाय छे अने तेथी आठे कर्म प्रकृति बन्धाय छे. अथवा स्नेह (धी तेल)धी चीकणा बनेला शरीरवाळाने जेम शरीरमां झीणी रेती चोटे छे. तेवी रीते रागद्वेषनी चीकणासथी जीवोने कर्म चोटे छे, ए आठे प्रकारना कर्मना आस्त्रवना निरोधथी अथवा तप वडे अपूर्वकरण क्षपकश्रेणीना अनुक्रमथी अथवा जैलेशी अवस्थामां जे कर्मनो वियोग थाय छे, तेज कर्मक्षय रूप मोक्ष छे. एनुं पुरुषना बधा अर्थोमां प्रधानपणुं होवाथी प्रारंभेल तलवारनी धारा माफक महाव्रतोना अनुष्टाननुं मुख्य फळ होवाथी तथा बीजा मतवाळानी साथे तेनो भेद होवाथी जेबुं मोक्षनुं स्वरूप जिनेभरे साचुं बताव्युं छे. ते कहे छे. अथवा प्रथम कर्मना वियोगना उद्देश वडे मोक्षनुं स्वरूप बताव्युं. हचे जीव वियोगना उद्देश वडे मोक्षनुं स्वरूप बतावे छे.

जीवस्स अत्तजणिएहि चेव कम्मेहिं पुञ्चबद्धस्स । सब्बविवेगो जो तेण तस्स अह इत्तिओ मुक्खो ॥२६२॥

जीव असंख्यात प्रदेशवालो छे. तेने पोतानी मेळे (पोतानुंज) अनंतुंज्ञान स्वभावथीज छे, तेने पोतानो आत्मा जे मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगमां परिणत थवाथी जे कर्मो पोतानाथी बन्धाय छे, ते कर्मने पूर्वे बांधेल होवाथी तेनो प्रवाह अनादि काळनी अपेक्षाथी चालु छे. ते कर्मनो सर्वथा अभाव रूप विवेक करवो, अर्थात् आत्माने तेनाथी निर्लेप करवो, तेज जीवने तेट-लोज मोक्ष छे. पण बीजा निर्वाण प्रदीप (बुझाएला दीवा) माफक कल्पेलो मोक्ष नन्ही, भाव विमोक्ष कह्वो, अने जेने ते मोक्ष थाय छे, तेणे सर्वथा मोक्ष प्राप्त करवा अवश्ये भक्त परिज्ञा विगेरे त्रण मरण (अणसण)मांथी काइपण स्वीकारवुं जोइए. अने कार्यमां कारणनो उपचार करवाथी ते मरणज भावविमोक्ष छे. ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥७२३॥

आचारो
॥७२४॥

भक्त परिज्ञा इंगिणि पायवगमणं च होइ नायव्वं । जो मरइ चरिममरणं भावविमुक्त्वं विद्याणाहि ॥२६६॥

भक्त (भोजन)नी परिज्ञा [पञ्चख्लवाण] अणसण ते भक्त परिज्ञा छे, तेमां त्रण प्रकारनो आहार त्यागीने फक्त अचित्त पाणीनी छुट राखीने अणसण करे, पण ते शरीरनी बैयावच्च करवा दे, अने ते धैर्यता तथा मजबूत संघयणवाळो होय, ते जेम पोताने समाधि रहे तेम अणसण करे.

तथा इंगित प्रदेशमां मरण पामवुं ते इंगित मरण छे. ते चार प्रकारना आहारनी निवृत्ति रूप छे. अने ते जेनुं संघयण मजबूत होय, ते पोतानी मेळेज पासुं फेरववुं विगेरे क्रिया करे, एम जाणवुं. ते प्रमाणे चारे प्रकारनो आहार छोडीने तथा बधी क्रियाओ तथा चेष्टाओ छोडीने एकांतमां शरीरनी बैयावच्च कराव्या विना झाडनी माफक स्थिर शरीर करवुं. ते पादप उपगमन जाणवुं.

पण जे भव सिद्धिक जीव छे. ते छेल्ला अणसणने आश्रयीने मरे छे. अने तेथी उत्तम साधु जे मोक्षनी इच्छावाळो छे ते उपर बतावेला त्रण अणसणमांथी कोइ पण एक स्वीकारे छे, पण ते वैहानस विगेरे बळ मरण (आपघात)थी मरतो नथी अने त्रण अण-सणमां थोडो भेद होवाथी त्रण प्रकारनुं भावमोक्ष एवुं तुं जाण, हवे तेज मरणने सपराक्रम अने अपराक्रम एवा वे भेदे बतावे छे.

सपरिक्षेय अपरिक्षमए य वाघाय आणुपुव्वीए । सुत्तत्थजाणएणं समाहिमरणं तु कायव्वं ॥२६४॥

पराक्रम [सामर्थ्य बळ] जेने होय ते सपराक्रमीं कहेवाय, अने तेवी रीते मरे तो सपराक्रम मरण छे, तेना उलटापणामां अप-राक्रम छे. एटले जंघा बळ क्षीण थतां भक्तपरिज्ञा इंगित मरण अने पादप उपगमन एम त्रण भेदवाळुं अणसण छे. छतां पण ते पराक्रम सहित अने पराक्रम रहित एम दरेक वे प्रकारनुं छे. अने तेदरेक भेद पण व्याघात अने ते रहित छे. तेमां सिंह अने

सूत्रम्

॥७२४॥

आचा०

॥७२५।।

वाघ विगेरेथी जे नाश थाय ते व्याघात छे. अने ते सिवायनो अव्याघात छे. एटले दीक्षा लीधा पछा सूत्र अर्थ ग्रहण करीने अ-
बुक्रमे विपक्षित्रम [मरण न आवेलु] एवी अवस्थाने भोगवतो जे छे. ते अव्याघात छे.

अहींया अनुपूर्वी शब्द छे तेनो परमार्थ बतावतां समाप्त करे छे. व्याघात वडे अनुक्रमे अथवा सपराक्रम अथवा अपराक्रमवाळा साधुने मरण आवे छते सूत्र अर्थना जाणनारे काळ आवेलो जाणीने समाधि मरणे मरुं. भक्त परिज्ञा इङ्गित मरण पादप उपगमन ए त्रणमांथी कोइ पण एक मरण पोताने जेम समाधि रहे तेम करुं. पण वाळ मरण न करुं. (गाथा अर्थ)

तेमां सपराक्रम मरण दृष्टांत वडे बतावे छे.

सपरक्रममाएसो जह मरण होइ अज्जवद्वाराणं पायवगमणं च तहा एयं सपरक्रमं मरणं ॥२६५॥

पराक्रम सहित ते सपराक्रम मरणनो आदेश आचार्यनी परंपरामां संभवातो आवेलो वृद्ध वाद आ प्रमाणे छे. ते कहे छे,
(यथा शब्द उदाहरणना उपन्यास माटे छे) एटले आ प्रमाणे ते आदेश जाणवो. आर्य वज्रस्वामिनुं मरण पादप उपगमन छे अने ते सपराक्रम मरण छे. ते प्रमाणे बीजे पण समजवुं [गाथा अर्थ] तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो, अने ते कथा प्रसिद्धज छे. जेम आर्य वज्रस्वामिए पोते दवा माटे सुंठनो गांगडो कानमां राखेलो, ते वापरवो भूली जवाथी पोते जाण्यु के आवो प्रमाद मने थयो छे. तेथी तेमणे मरण नजीक आवेलुं जाणीने सपराक्रमी बनीने स्थावर्त्त एवं उपर पादप उपगमन अणसण कर्यु. हवे अ-
पराक्रम मरण बतावे छे.

अपरक्रममाएसो जह मरण होइ उदहिनामाणं । पाओवगमेऽवि तहा एयं अपरक्रमं मरणं ॥२६६॥

सूत्रम्

॥७२५॥

आचार्य

॥७२६॥

पराक्रम न होय तो अपराक्रम कहेवाय तेबुं मरण जेने जंघावल सर्वथा क्षीण थयेलुं होय तेवा उदधि [सोगर] नामना ते आर्य समुद्र मुनिनुं मरण थयेलुं छे. तेनो वृद्धवाद आ प्रमाणे छे. ते प्रमाणे पादप उपगमन अणसण वडे तेमनुं मरण थयेल छे. जेवी रीते आर्य समुद्रनुं अपराक्रम मरण छे. तेबुं बीजी जग्याए पण जाणबुं. (गाथा अर्थ)

तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो. आर्य समुद्र नामना आचार्य स्वभावथीज दुर्वल हता, पछीथी जंघा बळे सर्वथा क्षीण थतां शरीरथी बीजो लाभ न जाणीने तेने तजवानी इच्छाथी पोताना गच्छमां रहीने उपाश्रयना एक भागमां आहार रहीत पादप उपगमन अणसण कर्युं, हवे व्याघ्रातवाळुं अणसण कहे छे.

वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज अन्नतरणं । तोसलि महिसीइ हओ, एयं वाघाइयं मरणं ॥२६७॥

विशेषथी आघात ते सिंह विगेरेए करेलो व्याघात छे एटले शरीरनो नाश थाय छे. तेना वडे जे अणसण समाप्त थाय अथवा तेबुं मरण थाय तो ते व्याघातिम अणसण छे. एटले कोइ साधुने सिंह विगेरेए बेयों होय, अने तेनाथी मरण थाय, ते व्याघातिम छे तेना माटे वृद्धवाद आ प्रमाणे छे. के तोसली नामना आचार्यने भेंसोए धेर्यों, अने मरण वखते तेमणे चार प्रकारनो आहार त्यागीने अणसण कर्युं ते व्याघातिम मरण छे. तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो ते कहे छे.

ते देशमां भेंसो घणी थाय छे. तोसली नामना आचार्यने जंगली भेंसोए धेर्यों, तेमणे पीडातां बीजो उपाय न जोइने चार प्रकारना आहार त्यागवानुं अणसण कर्युं हवे अव्याघातिम अणसण बताववा कहे छे.

अणुपुच्चिगमाएसो पञ्चजामुक्त अत्थकरणं च । बीसज्जिओ (य) निन्तो, मुका तिवहस्स नीयस्स ॥२६८॥

सूत्रम्

॥७२६॥

आचार्य
॥७२७॥

अनुपूर्वी (क्रम) ने पामे, ते अनुपूर्वींग छे.

प्र०—ते आ देश क्यो छे ? (आ देशनो अर्थ वृद्धवाद छे.) ते वृद्धवाद आ प्रमाणे छे.

प्रथम आत्मार्थी जीवने दीक्षा आपवी, पछी सूत्र भणाववां छेवटे अर्थ आपवो. ते बन्नेमां प्रविण थयेलो अने गुरुए सुपात्र जोइने सूत्रार्थ भणाव्या पछी तेने आज्ञा आपे तो पोते कोइपण जातनुं अणसण करवा तैयार थइने नीकले. ते प्रथम आहार उपाधि शश्या एम त्रणेनो त्याग करे छे. अने पोते प्रथम रोज भोगवतो तेनाथी पोते मुकाय छे. तेमां जो आचार्य होय तो तेबुं अणसण करवा पहेलां शिष्योने तैयार करीने बीजो आचार्य स्थापीने पोते निवृत थइने बार वरसनी (उत्कृष्ट तपस्या) संलेखना वडे अनुभव करीने पोते गच्छनी अणुज्ञा [संमति] लइने गच्छने छोडीने अथवा पोते नीमेला आचार्येनी समति लइने अणसण करवा बीजा आचार्यनी पासे जाय छे. तेज प्रमाणे उपाध्याय प्रवर्तक स्थविर गणावच्छेदक, अथवा सामान्य साधु हाय ते आचार्यनी रजा ल-इने संलेखना वडे परिकर्म करीने भक्त परिज्ञा विगेरे अणसण न स्वीकारे. तेमां पण, भाव संलेखना करे कारण के द्रव्य संलेखना जो, एकली होय; तो, दोषनो संभव छे. ते कहे छेः—

पडिचोइओ य कुविओ, रणो जह तिकख सीयला आणा । तंबोले य विवेगो घटृणया जा पसाओ य ॥२६९॥

आचार्ये प्रेरणा करेलो के तुं फरी संलेखना कर, एबुं कहेवाथी क्रोधायमान थएला शिष्यने जेम राजानी आज्ञा तीक्ष्ण होय छे. पछी शीतळ थाय छे. तेम आचार्ये पण बीजाओना रक्षण माटे प्रथम त्याग करवो जोइए. वक्ती नागरवेलनुं सडेलुं पान जेम बीजां पान बचाववा माटे दूर करबुं जोइए. तेम कुशिष्यने प्रथम शिक्षा करी पछी ते माफी मागे तो तेना उपर दया लावी राखवो

सूत्रम्

॥७२७॥

आचार्य

॥७२८॥

जोइए. (गाथा अर्थ) भावार्थ कथाथी जाणवो.

एक साधुए बार वरसनी उक्तुष्ट तपस्याथी संलेखना करी, अने आचार्य पासे अगसणनी याचना करी आचार्ये कहुं, तुं हजु पण संलेखना कर, तेथी आ शिष्ये कोपायमान थइने फक्त चामडी अने हाडकुं रहेल एवी मांस लोही विनानी आंगळी भांगीने देखाडी, के हवे शुं अशुद्ध वाकी रहुं छे ? आचार्ये पोताना हृदयनो अभिप्राय प्रगट कर्यो, के तुं क्रोधने लीघे अशुद्ध छे. के वचननी कडवासथी शीघ्र तारी आंगळी तें भांगीने भावनी अशुद्धता देखाडी छे. तेथी तेने बोध करवाने माटे दृष्टांत कहुं, के कोइ राजानी वे आंखो रोज पाणीथी झरती हती, राजाना वैद्योए घणी दवा करी पण सारु न थयुं. एक वस्त कोइ परदेशी वैद्य आव्यो तेणे कहुं, जो तुं एक मुहुर्त सुधी वेदना सहन करे, अने मने न मरावे, तो तने सारो करुं राजाए कबुल कर्यु. अंजन (मुरझो) आंखमां नाख्या पछी उत्पन्न थयेली तीव्र वेदनाथी मारी आंखो गइ, एवी वाणी बोलीने राजाए मारवानी आज्ञा करी; तेथी राजानी आज्ञा तीक्ष्ण थइ; अने पूर्वे न मारवानुं वचन आपवाथी शीतळ आज्ञा करवी पडी; पण ज्यारे मुहुर्त पछी वेदना दूर थतां सारी आंखोवालो थतां तेज राजाए खुश थइ वैद्यनी पूजा करी. ए प्रमाणे आचार्यनी आज्ञा पण तीक्ष्ण छे. एटले, शिष्यनी भूल देखतां बडवां वचननी आज्ञा करे; पण शिष्यनुं अंतरंग तपासी तेनां कार्यथी प्रसन्न थाय; एटले, परिणामे शिष्यने हितकर होवाथी ते आज्ञा शीतळ छे. आवुं समजाव्या छतां पण क्रोधथी शिष्य शांत न थाय; तो, बीजाओना रक्षण माटे सडेला पाननी माफक तेने दूर करवो.

जो, गुरुनी आज्ञा शिष्य माने; तो, गच्छमांज रहेवा दइने दुर्बचनथी तेनो तिरस्कार करी परीक्षा करवी. जो, तेम करतां न

सूत्रम्

॥७२८॥

आचार्य

॥७२९॥

कोपे, तो ने शुद्ध छे, एम जाणीने तेने अणसणनी आङ्ग। आपे; तथा तेने आर्तध्यान विगेरे न थाय; माटे तेनी खबर, राखी गुरु प्रसाद करे. प्र०—आ प्रमाणे केवो, अने केटलो काळ, अने केवी रीते आत्माने संलेखे ? तेथी, हृदयमां विचारने कहे छे:—

निष्फाईया य सीसा सउणी जह अंडगं पयतेणं । बारसंवच्छरियं सो संलेहं अह करेइ ॥२७०॥

चत्तारि विचित्तांइ विगई निज्जहियाइं चत्तारि । संवच्छरे य दुन्हि उ एं तरियं तु आयामं ॥२७१॥

नाइविगिट्टो उ तवो, छम्मासे परिमियं तु आयामं । अन्नेऽवि य छम्मसे होइ विगिट्टं तवो कम्मं ॥२७२॥

वासं कोडीसहियं आयामं काउ आणुपुब्बीए । गिरिकंदरंभि गंतुं, पायवगमणं अह करेइ ॥२७३॥

सूत्र अर्थं तथा बन्ने प्रकारे पोताना शिष्योने तथा भणवा आवेला बीजा साधुने भणावीने जेम शकुनी पक्षी इंडाने सेवीने तैयार करे, तेम प्रयत्नस्थी तैयार करवा जोइए. त्यारपड्डी आचार्य बार वरषनी संलेखना करे ते आ प्रमाणे.

चार वरस सुधी जुदा जुदा तपना अनुष्ठान करे छे. एटले एक बे त्रण चार पांच उपवास विगेरे करीने पारणुं करे छे. पारणामां वखते विगय वापरे. अने नपण वापरे, पांचमा वरसस्थी बीजां चार वरस तेवो तप करीने पारणामां बीगइ न वापरे नवमा दशमा वरसमां उपवासने पारणे आंबेल एम करे अग्यारमां वरसमां पहेला छ महीना सुधी अति विकृष्ट तप न करे अथवा एक बे उपवास करीने परिमित आंबेलस्थी पारणुं करे (उणोदरी तप करे) बीजा छ मासमां विकृष्ट तप अने पारणामां आंबेलमां उणोदरी तप करे बारमा वरसे कोटी सहित आंबेल करे एटले रोज आंबेलस्थी खाय. एटले आंबेलनी कोटी कोटी मळे माटे कोटी सहित कळुं छे चार मास बाकी रहे त्यारे तेलना कोगळा अस्खलित नमस्कार विगेरे शिखवा माटे वायु दूर करीने मुख यंत्रना प्रचार माटे

सूत्रम्

॥७२९॥

आचा०

॥७३०॥

वारंवार करे. आ प्रमाणे बार वरस सुधी अनुक्रमे बधुं करीने सामर्थ्य होय तो गुरुनी आज्ञा लङ्ने पहाडनी गुफामां जइने निर्देष जग्या जोइने पादप उपगमन अणसण करे इङ्गित मरण अथवा भक्त प्रत्याख्यान जेम समाधि रहे तेम करे आ प्रमाणे बार वर-सनी संलेखना कर्म वडे आहार ओछो करतां आहारनी अमिलापानो उच्छेद थाय छे ते बे गाथा वडे बतावे छे.

कह नाम सो त्वोकम्पंडिओ जो निच्चुजुत्पा । लहुवित्तीपरिक्खेवं वच्चइ जे मंतओ चेव ? ॥२७४॥
आहारेण विरहिओ, अप्पाहारो य संवरनिमित्तं । हासंतो हासंतो, एवाहारं निरुभिज्ञा ॥२७५॥

केवी रीते ए साधु तप करवामां पंडित थाय ? जे नित्य उत्युक्त आत्मा बनीने बत्रिस कोळियाना परिणामवाळी वृत्ति न राखे? एटले दिवसे दिवसे लघु वृत्तिनो परीक्षेप न करे; तो, तप कर्ममां पंडित केवी रीते थाय (जो, गोचरीमां लोळुपता राखी वधारे वधारे खाय; तो, ते तप करवामां निपुण न थाय;) तथा आहार वडे बे त्रण दिवस सुधी वियोग करे. अर्थात् बे त्रण पांच छ उपवास करी; पछी पारणुं करे तो, शा माटे अल्पाहारी न थाय ? (थायज)

प्र०—शा माटे तप करे ? उ०—अणसण करवा माटे, आ प्रमाणे उपवास करतो तथा द्रेक पारणामां अल्पआहारने लीघे ओछो ओछो करतां टेव पडतां उपर बतावेली विधिए भक्त पञ्चख्वाणनुं अणसण करे. नाम निक्षेपो कहो. हवे सूत्र अनुगममां अस्वलित विगेरे गुणयुक्त सूत्र कहेबुं. ते कहे छेः—

से बेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असग वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं

सूत्रम्

॥७३०॥

आचा०

॥७३१॥

वा पदिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्चछणं वा नो पादेजा नों निमंतिजा नो कुज्जा वेयावडियं
परं आढायमाणे त्तिबेमि (सू० १९७)

सुधर्मास्वामि कहे छे. जे-में भगवान् पासे सांभव्युं; ते कहुं छुं, अने हवे कहेवातुं पण भगवाननुं वचन छे. एटले समनोङ्ग, अथवा अमनोङ्ग होय; एटले, दृष्टि (सम्यग्दर्शन,) तथा लिंगथी समनोङ्ग एटले उत्तम श्रद्धावाळो होय; पण, भोजन विगेरेमां त्यागी न होय, अने अमनोङ्ग ते बौद्ध मत विगेरेना साधुने चार प्रकारना आहार विगेरेनी निमंत्रणा न करे; ते कहे छे. अशन [भोजन] ते, भात विगेरेनुं छे, अने पाणी ते, द्राख विगेरेनुं छे, अने थोडा टेका रूप नाळीयेर (कोपरं) विगेरे छे, अने स्वाद माटे कपुर, लवंग, विगेरे छे. तेज प्रमाणे वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, आ वधां पोतानां उपकरण कुसाधुने वापरवा न आपे. तेज प्रमाणे तेमनी वैयावच्य न करे; अने घणां आदरवाळो बनीने तेमने तेवी वस्तुनुं आमंत्रण न करे; तेम थोडी घणी वैयावच्य पण न करे. हवे, पछीनुं पण हुं कहुं छुं.

धुवं चेयं जाणिजा असणं वा जाव पायपुञ्चणं वा लभिया नो लभिया भुं-
जिया पंथं विउत्ता विउक्रम्म विभत्तं धम्मं जोसेमाणे समेमाणे चलेमाणे पाइजा वा निमं-
तिज वा कुज्जा वेयावडियं परं अणाढायमाणे त्तिबेमि (सू० १९८)

ते बौद्ध विगेरे मतना कुशीलवाळा साधुओ अशन विगेरे बतावीने एवं बोले के, आ निश्चय जाणो के, अमारा मठमां रोज तमे

सूत्रम्

॥७३१॥

आचारा०

॥७३२॥

भोजन विगेरे मेलवशो एटले बीजी जग्याए मळे न मळे अथवा खाइने अथवा विना खाधे अमारी धीरजने माटे तमारे अवश्य आवबुं, जो न मळे तो लेवा माटे अने मळे तो वधारे खावा माटे वारंवार भोजन माटे न खाधुं होय ते वखते सवारनो नास्तो क रवा अमारी धीरज माटे कोइ वर्खत पण आवबुं अथवा ज्यारे तमने जे कल्पे तेबुं अमे तमने आपशुं वळी अमारो मठ तमारा रस्तामांज छे कदाच तमे बीजे रस्ते जता हो तो थोडो फेरो खाइने पण आडा मार्गे बीजे वेरे जइने पण अमारे त्यां आवबुं आ आगमनमां खेद मानवो नहीं (आ प्रमाणे प्रेम धरावी जैन साधुने बौद्ध विगेरेना साधु आमंत्रण करे.) प्र०—शा माटे आवुं बौद्ध साधु करे छे ? उ०—ते कहे छे विभक्त (जुदा) धर्मने पाळता अने कदाच जैन साधुना उपाश्रयमां आवीने अथवा रस्तामां जतां निमंत्रण करे अथवा पोतानी पासेनुं भोजन विगेरे आपे अथवा भोजन आपवानी निमंत्रणा करे अथवा भक्त माफक वैयावच्च करे आ बधुं जैन साधुने कुशील साधुनुं न कल्पे तेम तेनो परिचय पण न करे केवी रीते जैन साधु रहे ? उ०—ते कुशील साधु वहु मानथी साधु नो आदर करे तोपण पोते तेमां गृद्ध न थाय तोज दर्शनशुद्धि साधुनी रहे छे, (जो तेवा कुशीलनी सोबत करे तो जैन साधुने पोताना कठण संयममां अनादर थाय अने पोते पण तेबुं कुशील आचरे.) अथवा हवे पछीनुं पण सुधर्मास्वामी कहे छे.

इहमेगेसिं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवति ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हण पाणे घायमाणा हणओ यावि समणुजाणमाणा अदुवा अदिन्नमायथंति अदुवा वायाउ विउजंति, तंजहा-अत्थि लोए नत्थि लोए धुवे लोए अधुवे लोए साइए लोए अणाइए लोए सप-

सूत्रम्

॥७३२॥

आचार
॥७३३॥

जवसिए लोए अपजवसिए लोए सुकडेति वा दुक्कडेति वा कल्लाणेति वा पावेति वा साहूति वा असाहूति वा सिद्धिति वा असिद्धिति वा निरएति वा अनिरएति वा, जमिण विष्पदिवन्ना मामगं धम्मं पन्नवेमाणा इत्थवि जाणह अकस्मात् एवं तेसिं नों सुयवखाए धम्मे नो सुपन्नते धम्मे भवइ (सू० १९९)

आ मनुष्य लोकमां केटलाक पूर्वे करेल अशुभ कर्मनो विपाक जेमने छे. तेवा निर्भागी जीवोने पोक्ख माटे जे अनुष्ठान रूप आचार छे, तेसारी रीते हृदयमां ठस्यो नथी, ते अपरिणत आचारवाङ्मा जेवा होय, ते कहे छे:—

ते आचारनुं स्वरूप न जाणनारा गोचरीमां नाहा विना परसेवाना। मेलना परिषहथी कंटाकेला जे साधुओ छे; तेमने सुख विहार करनारा बौद्ध मत विगेरेना साधुओए पोताना जेवा विचारवाङ्मा बनावेला छे. तेथी, जैनसाधुओ पण, तेनी सोबतथी संयमां शिथिल थइ आरंभना अर्थी बने छे, अथवा ते शक्य विगेरेना साधु, अथवा जे कुशील छे, तेओ सावद्य आरंभना अर्थी छे. तेज प्रमाणे मठ, आराम, तळाव. कुवा बनाववा पोताने माटे रांधेलुं खानारा विगेरे साधुओ बोले छे के, प्राणीओने मारो, आ प्रमाणे बीजा पासे मरावता; अने मारनारनी अनुमोदना करता; अथवा बीजानुं द्रव्य लेवाथी कडवुं फळ छे. तेने विसरीने, तथा जेना शुभ अध्यवसायो ढंकाइ गया छे. तेओ चोरीनुं द्रव्य ले छे. वक्ती, पहेला त्रीजा व्रतमां थोडुं कहेवानुं होवाथी तेने प्रथम कहीने बीजा महाव्रतनुं वधारे कहेवानुं होवाथी बीजा व्रतनो उपन्यास हवे करे छे. [अथवा ए अव्यय बीजो पक्ष बतावे छे. ते कहे छे.]

सूत्रम्
॥७३३॥

आचारो
॥७३४॥

एटले, अदत्त ले छे. अथवा, नाना प्रकारनी युक्तिओ योजे छे. ते बतावे छे के, स्थावर जंगम स्वरूपवाळो लोक छे, तेमां नव खंडवाळी पृथ्वी छे अथवा सात द्वीपवाळी पृथ्वी छे. बीजा मतनां माने छे के, ब्रह्माना अंडामां पृथ्वी अंदर रहेली छे. वळी बीजा मतवाळा कहे छे के ब्रह्माना अंडा जेवी पाणीमां रहेली भींजाती एवी सेंकडो पृथ्वीओ पाणीमां रहे छे तथा जेओ पोताना कर्मना फळने भोगवनारा छे परलोक छे वंध मोक्ष छे पांच महाभूत छे (आवा जुदा जुदा अनेक मत छे.)

नास्तीको कहे छे के आ बधो लोक जे देखाय छे ते बधुं माया [जुठ] नी इन्द्र जळ जेवुं तथा स्वप्नमां देख्या जेवुं छे अने अविचारीत रमणीयपणे भूतनो अभ्युगम [स्वीकार] करवा छतां परलोकनो अनुयायी जीव पण नथी, शुभ अशुभ फळ-नथी पण जेम किणु विगेरेमांथी जेम नसो उत्पन्न थाय छे, तेम भूतोमांथी चैतन्य थाय छे. आ बधुं मायाकार गंधर्व नगरना जेवुं छे. कारण के पूर्ण पाप विगेरे युक्तिथी सिद्ध थतां नथी. वळी चार्वाक कहे छे:—

यथा यथाऽर्थाश्चिन्त्यन्ते, विविच्यन्ते तथा तथा । यद्येतस्वयमर्थे भ्यो रोचते तत्र के वयम् । १ ॥

भौतिकानि शरीराणि, विषयाः करणानि च । तथापि मन्दैरन्यस्य, तत्त्वं समुपदिश्यते ॥ २ ॥

जेम जेम अर्थो विचारीए तेनुं विवेचन करीए तेम तेम जे जे अर्थ तरफ रुचे तेमां आपणे कइ गणत्रीमां (जेम जेम विचार करीये तेम तेम आ बधुं विषय तरफ खेचाइ जाय त्यारे आपणे विचार करवानी शुं जरुर.)

आ शरीर तथा विषय अने इन्द्रियो बधुं भूतमांथी बनेलुं छे. तोपण मंद बुद्धिवाळाए बीजा जीवोने फसाववा तत्व तरिके ठसावी दीधुं छे.

वळी सांख्य विगेरे मतवाळा कहे छे, लोक नित्य छे. कारणके प्रकट थवुं, लय थवुं एटलुंज मात्र उत्पात अने विनाशनुं स्वरूप

सूत्रम्

॥७३४॥

आचा०

॥७३५॥

छे. कारण के जे नथी तेनुं उत्पादन नथी. तथा जे छे तेनो नाश नथी. अथवा ध्रुव ते नदी समुद्र पृथ्वी पर्वत आकाश ए बधाँनुं निश्चयपणुं होवथी ते ध्रुव छे (माटे तेमना मत प्रपाणे बधुं नित्य छे)

बौद्ध विगेरे कहे छे लोक अनित्य छे कारण के दरेक क्षणे तेनो स्वभाव क्षय थवारूप छे. विनाशना हेतुना अभावथी अने नित्य नस्तुना अनुक्रमथी के एक साथे अर्थ क्रियामां असामर्थ्यपणुं छे. (आ प्रमाणे तेमनुं मानबुं छे के बधुं अनित्य छे.) अथवा अध्रुव ते चल छे जेमके भूगोल (पृथ्वीनो गोलो) केटलाक न कहेवा प्रमाणे नित्य चलायमान छे. (तेओ माने छे के पृथ्वी फरे छे) अने सूर्य स्थिर छे सेमां सूर्य मंडल दूर होवाथी जेओ पूर्वमांथी जुए छे तेमने सूर्यनो उदय देखाय छे. अने सूर्यना मंडलना निचे रहेलाने मध्यान्ह देखाय छे. अने जेओने सूर्य दूर थवाथी न देखाय तेओने आथमेलो जणाय छे. वळी बीजा मतवाला एवं माने छे के लोकनी आदि छे. तेओ कहे छे.

आसीदिदं तमोभूतमपज्ञातमलक्षणम् । अपतर्यमविज्ञेयं, प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥ १ ॥

आ बधुं पूर्वे अंधारारूप, अजाण्युं, लक्षण रहित विचाराय नहीं तेबुं, न जणाय तेबुं, बधी रीते सूतेला जेबुं हतुं.

तस्मिन्नेकार्णवीभूते, नष्टस्थावरजंगमे । नष्टामरनरे चैव, प्रनष्टोरगराक्षसे ॥ २ ॥

ते एक समुद्ररूप बनेलुं स्थावर जंगमनो तथा देवता मनुष्यनो नाश हतो तेम नाग तथा राक्षसनो पण नाश हतो (त्यारे केबुं हतुं ते कहे छे)

केवलं गहरीभूते, महाभूत विवर्जिते । अचिन्त्यात्मा विभुस्तत्र, शयानस्तप्यते तपः ॥ ३ ॥

तस्य तत्र शयानस्य, नाभेः पद्मं विनिर्गतम् । तरुणरत्निमण्डलनिभं, हृदं काञ्चनकर्णिकम् ॥ ४ ॥

सूत्रम्

॥७३५॥

आचारा०
॥७३६॥

तस्मिन् पदे तु भगवान् दण्डी यज्ञोपवीतसंयुक्तः । ब्रह्मा तत्रोत्पन्नस्तेन जगन्मातरः सृष्टाः ॥ ५ ॥
अदितिः सुरसङ्घानां दितिर सुराणां मनुर्मनुष्याणाम् । विनता विहङ्गमानां माता विश्वपकाराणाम् ॥ ६ ॥
कद्रुः शरीरसृष्टाणां सुलसा मात तु नागजातीनाम् । सुरभिचतुष्पदानामिला पुनः सर्व बीजानाम् ॥ ७ ॥

फक्त गहवर (पोलाण) ना आकारवालुं महाभूतोथी रहित हतुं तेमां अचिन्त्य आत्मा विश्व (इश्वर) पोते सुतेलो तप करे छे. (३)
ते त्यां सुतेला विश्वनी नाभीमांथी एक कमळ उत्पन्न थयुं ते उगता सूर्यना भंडल जेबुं सोनानी कर्णिकावालुं रमणिक हतुं (४)
ते पद्ममांथी भगवान दंड धारण करेल जनोइ पहेरेलो ब्रह्मा उत्पन्न थयो तेणे जगतनी माताओने रची छे. (५)
देवताओना समूहनी माता अदिति छे, अने असूरोनी माता दिति छे. मनुष्यनो मनु छे. पक्षीओनी माता विनता छे. आ प्र-
याणे विश्वना प्रकारोनी माताओ ब्रह्माए बनावी. (६)

सरीसृपनी माता कद्रु छे. अने नागनी जातीओनी माता सुलसा छे. तेम बधां चोपगां प्राणीनी मा सुरभि छे. अने सर्व बी-
जोनी माता इला छे. [आ प्रमाणे पुराणवादीओ बोले छे, तेम बीजा धर्मवाला पण पोतानी बुद्धि प्रमाणे कल्पना करे छे, तेम समजबुं
बीजा मतवाला केटलाक अनादि लोक माननारा छे जेमकेशाक्य मतवाला कहे छे हे भिक्षुओ !

अनव दग्ध [अनादि] आ संसार छे तेनी पूर्व कोटी जणाती नथी, निवारण सत्वोने अविद्या नथी, तेम जीवोनो उत्पाद नथी,
वक्ती अंतवालो आ लोक छे जगतना प्रलयमां बधानो नाश थाय छे, तथा अंत विनानो लोक छे कारण के विद्यमान वस्तुनो
सर्वथा नाशनो असंभव छे. कारण के एबुं नथी [अर्थात् छेज] केटलाक तो बननेने पण माने छे ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥७३६॥

आचा० ॥७३७॥

द्वावेव पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ १ ॥

बेज पुरुषो लोकमां पूर्वे हृता, एक क्षर (नाशवंत) बीजो अक्षर [अनाशवंत] तेमां क्षरमां सर्व भूतो हे. अने अक्षर ते कूटस्थ कहेवाय हे. आ प्रमाणे परमार्थने नहीं जाणनारा लोक हे. विगेरे स्वीकारवा वडे विवाद करता जुदी जुदी वाणी काढे हे तेज प्रमाणे आत्माने पण जुदी जुदी रीते बतावे हे जेमके सारुं कर्युं, ते सुकृत माने अथवा दुष्कृत माने एम क्रियावादीओ माने हे. एटले कोइ बोले के सर्व संगनो त्याग करवाथी महाव्रत ग्रहण कर्युं, ते सारुं कर्युं. तथा बीजा बोले हेके हे भाइ ! आ सरल मृग-लोचनवाळी स्थीने पुत्र उत्पन्न कर्या विना तें त्यागी, ते खोडुं कर्युं. तथा जे दीक्षा लेवा तैयार थयो होय, तेने कहे, के आ कल्याण हे. तेनेज बीजो कहे के आ तो पाखंडीओना जाळमां फसाएलो कलीच हे! गृहाश्रम पाळवाने असमर्थ हे ! विना पुत्रे दीक्षा लीधी तेथी पापरूप हे तथा आ साधु हे, असाधु हे एम पोतानी मतिए कल्पना करी इच्छानुसार बोले हे तथा सिद्धि हे अथवा सिद्धि नथी, अथवा नरक हे अथवा नथी ए प्रमाणे बीजुं पण पोताना आग्रह प्रमाणे पकडी विवाद करे हे ते बतावे हे के आ पूर्वे बनावेलुं लोक विगेरेने आश्रयी जुदुं जुदुं माननारा ते विप्रतिपन्न वादीओ हे ते कहे हे.

इच्छंति कृत्रिम सृष्टि-वादिनः सर्व मेव मितिलङ्घम् । कृत्स्नं लोकं माहेश्वरादयः सादि पर्यन्तम् ॥ १ ॥

सृष्टिना वादीओ माहेश्वर विगेरे बधुंज मितिलिंग अने कृत्रिम माने हे, अने वधा लोकने सादि पर्यंत माने हे.

नारीश्वरजं केचित्, केचित् सोमाग्निसंभवंलोकं । द्रव्यादि षड्विकल्पं, जगदेतत्केचिदिच्छन्ति ॥ २ ॥

नारी तथा इश्वरथी उत्पन्न थएलुं माने हे, केटलाक मतवाळा सोमाग्निथी लोक उत्पन्न थयेलुं माने हे. तथा द्रव्यगुण विगेरे

सूत्रम् ॥७३७॥

आचा०

॥७३८॥

छ विकल्पवालुं जगत् केटलाक माने छे।

ईश्वरप्रेरितं केचित्, केचिद् ब्रह्मकृतं जगत् । अव्यक्तं प्रभवं सर्वं, विश्वमिच्छन्ति कापिलाः ॥ ३ ॥

केटलाक ईश्वरनी प्रेरणाथी थएलुं माने छे, केटलाक ब्रह्माए जगत् करेलुं माने छे, एने कपिल मतवाळा अव्यक्तथी वधुं विश्व थएलुं माने छे।

याद्वच्छिक मिदं सर्वं, केचिद् भूत विकारं । केचिच्चानेकरूपं तु, वहुधा संप्रधाविताः ॥ ४ ॥

केटलाक याद्वच्छिक (स्वभाविक) वधुं माने छे, केटलाक भूतोना विकारथी थएलुं पाने छे, केटलाक मतवाळा अनेक रूपवालुं जगत् माने छे, आ प्रमाणे अनेक प्रकारे मतवादीओ पोताना विचार बताववा दोडेझा छे। आ प्रमाणे जेमणे स्याद्वाद समुद्र अवगाहन कर्यो नथी तेवा एकांश ग्रहण करी मतिना भेदवाळा बनेला परस्पर दोषित बनावे छे, तेज कहु छेः—

लोकक्रियाऽस्त्वत्त्वे, विवदन्ते वादिनो विभिन्नार्थं । अविदित पूर्वं येषां, स्याद्वाद विनिश्चितं तत्त्वं ॥ १ ॥

लोक, क्रिया, आत्मा, तथा तत्त्व संबंधी जुदा जुदा विषयने बताववा तेज वादीओ झगडा करे छे के जेमणे स्याद्वादथी विशेष प्रकारे निश्चय कर्या विन। तत्त्वनुं वर्णन करेलछे; पण जेमणे स्याद्वाद मतनो निश्चय कर्यो छे, तेओने अस्तित्व नास्तित्व विगेरे अर्थनो नयना अभिप्राय प्रमाणे कथंचित् (कोइ अंशे) आश्रय करवाथी तेमने विवादिनो अभावज छे,

ग्रन्थ वधी जवाना भयथी अहीं वहु कहेवानुं छे, छतां कहेता नथी, तथा तेनुं वर्णन सूत्रकृत विगेरे सूत्रमां विस्तारथी कहु छे। ते वधा परस्पर विवाद करता पोताना तत्वनो आग्रह करी तेनुं समर्थन करता पोते नाश पाम्या छे, अने बीजानो नाश करे

सूत्रम्

॥७३८॥

आचार्य
॥७३९॥

छे, ते बतावे छेः—केटलाक सुखथी धर्मने इच्छे छे, बीजा दुःखथी धर्म माने छे, केटलाक स्नानथी धर्म माने छे तथा मारोज धर्म मोक्ष आपनार छे, बीजो बोलवा जेवोज नथी, एम बोलनारा अपुष्ट (तुच्छ) धर्मवाला परमार्थ नहि जाणनारा (भोला जीवो) ने फसावे छे. हवे तेमनो उत्तर जैनाचार्य आपे छे. लोक छे अथवा नथी विग्रेरेमां तमे जाणो.

अकस्मात् (मागध) देशमां आ शब्द गोवाळणी सुधां पण संस्कृतमां बोले छे, तेथी तेजरुपे लीधो छे एटले कस्माद् (ते हेतु छे अने अ साथे लेवाथी अकस्माद् ते अहेतु छे) तेमां ते हेतुना अभावथी बनतुं नथी, एम समजबुं के दरेकमां हेतु रहेल छे, जो तेम न मानीने एकांतथीज “ लोक छे, ” एवं मानीए तो ते अस्ति (छे), शब्द साथे समान अधिकरणपणे थवाथी जगतमां जे जे छे, ते बधुं लोक थशे, अने तेम मानतां तेनो प्रतिपक्ष पण ‘ अलोक ’ अस्ति (छे), तेथी लोकज अले थशे, अने व्याप्यना सद्भावमां व्यापकनो सद्भाव थतां अलोकनो अभाव थशे, अने तेना अभावमां तेना प्रति पक्ष लोकनो प्रथमज अभाव थशे. अथवा लोकनुं सर्व गतपणुं सिद्ध थशे.

अथवा “लोक अस्ति” पण लोक न भवति [नथी] लोक पण नामज छे, अने लोक नथी लोकनो अभाव छे. ए प्रमाणे थशे, आ बधुं अनिष्ट छे, अने अस्तिनुं व्यापकपणुं होवाथी लोक साथे अस्ति एकांत लागवाथी घट पट विग्रेरेमां पण लोकपणानी प्राप्ति थशे कारण के व्याप्यना व्यापकना सद्भाव साथे अंतरपणुं नथी वळी अस्ति लोक आ प्रतिज्ञा पण लोक एम मानवाथी हेतुनुं पण अस्तित्वपणुं छे, तेथी “ प्रतिज्ञा अने हेतु ” बनेमां एकत्व प्राप्ति थशे, अने ते एक थतां हेतुनो अभाव थशे, अने हेतुना अभावमां कोण केनाथी सिद्ध थशे, अथवा एम मानीए के “ अस्तित्वथी अन्य लोक छे, तो प्रथम करेली प्रतिज्ञानी हानि थशे, तेथी ए

सूत्रम्
॥७३९॥

आचारो
॥७४०॥

प्रमाणे एकांतथीज लोक अस्तित्व मानतां हेतुनो अभाव बताव्यो, एज प्रमाणे नास्तित्वनी प्रतिज्ञामां पण समजवुं, ते बतावे छे, कोइ एम कहे के “लोक नथी” आबुं बोलनारने पूछवुं के तमे छो के नहि ? अने जो तमे छो तो लोकमां के लोक बहार जो लोकमां हो, तो लोक नथी एवुं केम बोलो छो ? अने लोक बहार एम बोलशो तो खर, विषाण (गवेडानुं शींगडा) माफक असत्य सिद्ध थया, तेथी मारे कोने उत्तर आपवो ? आ प्रमाणे दरेक विद्वाने पोतानी मेळे विचारीने एकांत वादीओनुं समाधान करवुं.

‘एवं’—जेम अस्तित्व नास्तित्व वाद तेमने मानेलो आकस्मिक निर्युक्तिक (युक्ति विनानो) छे, एज प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरे नादो पण निर्युक्तिज छे, पण अमारा जैन स्याद्वाद वादीना जैनमतमां कथंचित् (कोइ अंशे) ना स्वीकारथी उपर बतावेला दोषनो प्रसंग नथी, कारण के स्वपर सत्ताना उपादान व्युदासथी वस्तुनुं वस्तुपणुं उपाद्य छे, एथी स्व द्रव्य क्षेत्र काळ स्वभावथी वस्तुनुं अस्तिपणुं छे, अने परद्रव्य क्षेत्र काळ स्वभावथी नास्तिपणुं छे, कहुं छे के:—

सदेव सर्वं को नेच्छेत्, स्वरूपादिचतुष्टयात् । अमदेव विपर्यासान् न चेन्न व्यवतिष्ठते ॥ १ ॥

स्वरूप विगेरे चार (द्रव्य क्षेत्र काळ भाव) थी वधा पदार्थोने सत् तरीके कोण न इच्छे ? अने तेथी उलटुं ते बीजाना द्रव्यादि चष्टुयथी पोते असत् छे, जो तेम न मानीए तो वस्तुनी व्यवस्था रहे नहि. विगेरे जाणवुं, कारण के सूत्रना संबंधना लीधे आ प्रयास थोडमां समजाववा माटे कहेल छे, माटे वधारे कहेता नथी, ए प्रमाणे ध्रुव अध्रुव विगेरेमां पण पांच अवयव अथवा दश अवयव अथवा बिजी रीते एकांत पक्ष साथे स्याद्वाद पक्ष सरखावी विचारीने योजवो. (आ पांच अवयव अने दश अवयवनुं स्वरूप दशवैकालिक प्रथम अध्ययनमां हरिभद्रसूरि ग्रहाराजनी टीकमां बतावेल छे.

सूत्रम्

॥७४०॥

आचार्य
॥७४१॥

हवे समाप्त करे छे—ए प्रमाणे उपर बतावेली नीतिए ते बधा एकांत वादीओनो धर्म तेओए योग्य रीते कहो नथी, तेम शास्त्र प्रणयनबडे सारी रीते प्रज्ञापित पण नथी,

प०—पोतानी बुद्धिए तमे आ केम कहो छो ? उ०—नहीं, अथवा वादी पूछे छे के जो ते वादीओनो एकांत पक्ष बरोबर कहेलो नथी, तो केवो धर्म सुप्रज्ञापित थाय छे. तेथी जैनाचार्य (गणधरो) सूत्र कहे छेः—

से जहेयं भगवया पवेइयं आसुपन्नेण जाणया पासया अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्तिवेमि सवत्थ संमयं पावं, तमेव उवाइक्कम्म एस महं विवेगे वियाहिए, गामेव। अदुवा रणे नेव गामे नेव रणे धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मइमया, जामा तिन्नि उदाहिया जेसु इमे आयरिया संबुज्ज्ञ माणा ससुट्टिया, जे णिव्वुया, पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया (सू० २००)

‘वस्तुनुं आ स्याद्वादरूप लक्षण बधा व्यवहारने अनुसरनारुं कोइपण वस्त न हणानारुं (सर्वत्र जय पामेलं) भगवान महावीरे कहेलुं छे अथवा हवे पळीनुं कहेवानुं पण महावीर प्रभुए कह्युं छे.

तेओ केवा छे उ०—केवलज्ञान होवाथी तेओ आशुप्रज्ञावाळा छे अर्थात् तेओ सदा उपयोगवाळा छे. प०—वन्ने उपयोग साथे छे के ? उ०—नहीं. कारण के ज्ञान उपयोगथी जाणता, तथा दर्शन उपयोगथी देखता महावीर प्रभुए कह्या छे. तेवो धर्म एकांतवादीओए कहो नथी. अथवा गुप्ति ते वाचानी छे. एटले भाषा समेति जाणवी ते भगवान महावीरे कब्ब के दरेके भाषा

सूत्रम्

॥७४१॥

आचा०

॥७४२॥

समिति राखवी. (विचारीने बोलवुं) अथवा अस्ति नास्ति ध्रुव अध्रुव विगेरे बोलनारा वादीओ वाद करवाने माटे तैयार थयेला जेओ त्रणसो तेसठनी संख्यावाळा छे. तेवा त्रणसो तेसठनी प्रतिज्ञा हेतु दृष्टांत उपन्यासना द्वारवडे भूलो बतावी तेमनुं गीतार्थ साधुए समाधान करवुं. अथवा वचननी गुस्ति साधुए राखवी तेनुं स्वरूप हुं कहुं छुं. अने हवे पछी कहीश. ते वादीओ जे वाद करवा आवे तेमने आ प्रमाणे कहेवुं. जेम तमारा बधामां पण पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पतिनो आरंभ करवो, कराववो, अनुमोदवो एम संमति आपी छे. एथी बधी जग्याए आ पाप अनुष्ठान छे. एम अमारो मत छे. अर्थात् तमे ते हिंसाने पाप मानता नथी, पण जीवोने दुःखरूप होवाथी अमे तेमने जैनमन प्रमाणे पाप मानीए छीए. ते कहे छे.

‘तदेव’—आ पाप अनुष्ठान छोडीने हुं रहो छुं एज मारो विवेक छे. [जे बीजाने दुःख देवानुं छोडे छे, तेज पोते पापथी बचेलो छे. अने तेज धर्म कहेवाने योग्य छे] तेथी हुं बधाथी अप्रतिसिद्ध आस्त्रवद्वारोवाळा साथे केवी रीते भाषण करुं. (जे जीवोने बचाववा चाहे ते हिंसकोनी साथे केवी रीते वाद करी शके?) तेथी वाद करवो दूर रहो. ए प्रमाणे असमनुज्ञ [असंमति] नो विवेक करे छे. प्र०—अन्य तीर्थिओ पापनी संमतिवाळा अज्ञानी भिथ्या दृष्टि चारित्र रहित अने अतपस्त्री छे तेवुं केवी रीते मानो छो? कारण के तेओ न खेडाएली भूमि उपर जे वन छे तेमां वास करनारा छे. कंदमुळ खानारा छे. अने ज्ञाड विगेरेना आश्रये रहेनारा छे अहीं जैनाचार्य कहे छे.

उ०—अरण्यवासस्थीज धर्म नथी पण जीव अजीवना संपूर्ण ज्ञानथी तथा तेमनी रक्षानां अनुष्ठान करवाथी धर्म छे अने तेवो धर्म तेमनामां नथी, तेथी तेओ असमनोज्ञ छे (उत्तम साधु नथी) वक्ती सारा माडानो विवेक जेमां होय ते धर्म छे अने तेवो धर्म

सूत्रम्

॥७४२॥

आचार्य
॥७४३॥

गाममां पण थाय अने अरण्यमां पण थाय पण धर्मनु निमित्त के धर्मनो आधार गाम के अरण्य नथी, जेथी भगवाने रहेवासने आश्रयी के बीजी रीतनो आश्रय लङ्ने धर्म वताव्यो नथी, तेमनुं कहेवुं ए छे के प्रथम जीवादि तत्त्वनुं ज्ञान मेळवबुं अने सम्यग अनुष्ठान करवां [के सर्व जीवोने अभयदान मक्के ते धर्म छे.] ते धर्मने तमे वरोवर जाणो एवुं भगवान महावीरे कहुं छे. प्र०-भगवान केवा छे ? उ०—मनन ते वधा पदार्थोंनुं परिज्ञान छे तेज मति छे अने ते मतिवाक्या (केवलज्ञानी) भगवाने कहुं छे.

प्र०—केवो धर्म कहो छे ? उ०—याम ते महाव्रतो छे तेमां त्रण वताव्या छे. जीव हिंसा जुठ अने परिग्रह ते त्रणेनो त्याग ते याम छे. ते परिग्रहमां अदत्तादान अने मैथुन समाव्या छे माटे पांचने बदले त्रण संख्या कही छे. अथवा याम ते वय (उमर) नी अवस्था छे. जेमके आठ वरसथी त्रीस अने त्यारथी साठ सुधी बीजी अने त्यारपछी त्रीजी एमां दिक्षा लेवाने अयोग्य एवा तद्दन नाना आठ वरसनी अंदरना अने छेकज बुडानो समावेश न कर्यो. (जुदा काढ्या) अथवा जेनावडे संसार भ्रग्न विगेरे दूर थाय ते याम ते ज्ञानदर्शन चारित्र छे. एम यामनो त्रण प्रकारे त्रणनी संख्यानो अर्थ कर्यो. (एटले महाव्रत पालवां त्रण अवस्थामां धर्म करवो. अने रत्नत्रय ज्ञान विगेरे प्राप्त करवां)

जो आ प्रमाणे छे तो शुं करवुं. ते त्रण अवस्थामां अथवा ज्ञान विगेरेमां आर्य देशमां उत्पन्न थयेला अथवा पाप धर्मो दूर करनारा बोध पामेला चारित्र पालवा तैयार थयेला साधुओ छे. तेओ केवा छे.? ते बतावे छे.

जेओ क्रोध विगेरे दूर करीने शांत थयेला छे अने पाप कर्ममां जेओ वासना राखता नथी तेज उत्तम साधुओ (मोक्षना अधिकारीओ) छे. प्र०—तेओ कइ जग्याए पाप कर्ममां वासना रहित छे.? ते बतावे छे.!

सूत्रम्

॥७४३॥

आचार
॥७४४॥

उद्धुं अहं तिरियं दिसासु सव्वांति चं पाणि यक्षं जीवेहिं कम्मसमारम्भे णं तं
परिन्नाय मेहावी नेव सयं एषहिं काएहिं दंडं समारंभिजा नेवन्ने एषहिं काएहिं दंडं समा-
रभाविजा नेवन्ने एषहिं काएहिं दंडं समारम्भतेऽवि समणुजाणेजा जेवऽन्ने एषहिं काएहिं
दंडं समारम्भति तेसिंषि वय लजामो तं परिन्नाय मेहावी तं वा दंडं अन्नं वा नो दंडंभी
दंडं समारम्भिजासि त्तिवेमि (सू० २०१) विमोक्षाध्ययनोद्देशकः ८-९ ॥

उचे नाचे के तिरछी दिशामां बधा प्रकारे जे जे दिशाओं छे अने च शब्दथी विदिशा [खुण] छे, तेमां एकेन्द्रिय सूक्ष्म बादर
विगेरेमां जे कर्मोनो समारंभ हो. अर्थात् जीवोने दुःख देवा रूप जे क्रियाओनो समारंभ (संसारा कृत्य) हो. ते बधा कर्म समारंभने
ह विन्ना वडे जाणीने प्रत्याख्यान परिन्ना वडे त्याग करवा.

प्र०—कोण त्याग करे. ? उ०—मर्यादामां रहेलो बुद्धिमान साधु. प्र०—केवी रीते त्यागे ?

उ०—पोते पोताना आत्माथीज चौद भूतग्राममां रहेला पृथ्वीकाय विगेरे जीवोने दुःख रूप आरंभ न करे. पण वीजा पासे
पण आरंभ न करावे. तेम आरंभ करनानी अनुमोदना न करे.

(सूत्रमां छट्टी विभक्ति हो. तेनो अर्थ त्रीजीमां लङ्घेतो) ते हिंसाना करनाराओथी अमे शरमाइए छीए. एवो उत्तम विचार
करीने साधु पोते मर्यादामां रहीने तथा कर्मनो समारंभ मोटा अनर्थ माटे हो; एम जाणीने पोते ते कर्म समारंभ छोडे. तथा जुठ

सूत्रम

॥७४४॥

आचारा०
॥७४५॥

विगेरे दंडथी पोते डरे. तेथी दंडभीवाळो साधु जीवोने दुःख रूप दंडनुं कंइ पण कार्य न करे अर्थात् करबुं करावबुं अनुमोदबुं ते ब्रण करण अने मन वचन काया ए ब्रण योग छे. तेना बडे त्यागे. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामि कहे छे.
पहेलो उद्देशो समाप्त.

४—६ बीजो उद्देशो,

पहेलो उद्देशो कहो. हवे बीजो कहे छे तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाप रहित संयम पाळवा माटे कुशीलनो परित्याग बताव्यो आ परित्याग अकल्पनीयना परित्याग विना संपूर्णपणाने न पामे. माटे साधुने अकल्पनीयना परित्यागनो विषय बतावनार आ उद्देशो कहे छे. एवा संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिकखू परिक्कमिज्ज वा चिढ्ठिज्ज वा निसाइज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा सुन्नागारंसि वा गिरिगुहंसि वा रुक्खमूलंसि वा कुमाराययणसि वा हुरत्था वा कहिंचि विहरमाण तं भिकखुं उवसंकमितु गाहावई बूया-आउसंतो समाणा! अहं खलु तव अट्टाए असणं वा पाणं वा खइमं वा सइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा पाणाइं भू-याइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिज्जं अच्छिज्जं अणिसद्दे अभिहडं आ-

सूत्रम्
॥७४५॥

आचा०
॥७४६॥

हट्टु चेष्टमि आवसहं वा समुस्सिणोमि से भुंजह वसह, आउसंतो समणा ! भिक्खू तं
गाहावईं समणसं सवयसं पडियाइकर्वे—आउसंतो ? गाहावईं नो खलु ते वयणं आढामि
नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्टाए असणं वा ४ वत्थं ४ पाणाईं वा ४
सणारम्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिजं अणिसट्टं अभिहडं आहट्टु चेष्टसि आवसहं वा
समुस्सिणासि, से विरओ आउसो गाहावईं ? एयस्स अकरणयाए (सू० २०२)

सामायिक उच्चरेलो ते साधु सावद्य अनुष्ठान छोडवार्थी मंदर [मेरु] पर्वते चडवा समान प्रतिज्ञा करेलो भिक्षाथी जीवन गुजारनार साधु-भिक्षा लेवा के बाजा कार्य माटे पराक्रम (विहार) करे, अथवा ध्यानमां लीन थड्ने उमो रहे, अथवा भणवुं भणाववुं, अथवा सांभळवुं के संभळाववुं होय त्यारे बेसे, तथा कोइ जग्याए मार्गमां थाकतां आडो पडे (सुइ रहे) प्र०—आ वधुं कइ जग्याए करे ? ते बतावे छे—मशाण एट्ले ज्यां मुडदां दाटे बाळे ते स्थान, (जेनुं बीजुं नाम पितृवन) छे तेमां मुवानुं संभवे नहि, माटे यथायोग्य ज्यां घटे, ते लेवुं, ते विचारतां गच्छ वासीओने ते मशाण विगेरे स्थान कल्पतां नथी, कारण के तेवा स्थानमां रही प्रमाद थतां व्यंतर विगेरेनो उपद्रव थाय छे, तथा जिनकल्पी मुनि थवानी सत्व भावनाने भावगार स्थविर कल्पी मुनिने पण मशाणमां निवास करवानी संभति आपी नथी, पण प्रतिमाधारी मुनिने तो ज्यां सूर्य आथमे त्यांज रहेवानुं छे, तेवाने आश्रयी अथवा जिनकल्पी मुनिने आश्रयी मसाणनुं स्थान सूत्र प्रमाणे समजवुं, ए प्रमाणे ज्यां जेनो संभव थाय. त्यां ते योजवुं. शून्यगार

सूत्रम्
॥७४६॥

आचारा०

॥७४७॥

(उज्जड घरमां) रहे; अथवा, पर्वतनी गुफामां अथवा झाड नीचे अथवा, कुंभारनां स्थानमां अथवा, गामनी बहार कोइ पण जग्याए ते साधु कोइ वस्त विहार करे; तेने घरनो मालिक आवीने साधुनी जग्यामां जइने बोले. जे बोले ते बतावे छे.

मसाण विगेरे स्थानमां परिक्रमण निगेरे क्रियाने करता साधु पासे कोइ त्यां पहेलां उभो रहेल कोइ माणस स्वभावथी भद्रक जीव अथवा समकीत वारी श्रावक गृहस्थ होय, ते साधुना आचारमां अजाण होय; ते साधुने उद्देशीने कहे. आ आपेलो आहार खानारा छे. आरंभ छोडेला छे. अनुकंपा लाववा योग्य छे अने एटलुं छतां, तेओ सत्य शुचिवाळा (स्नान रहित) छे. माटे, एमने आपेलुं अक्षय फळ आपनार छे माटे, हुं तेमने दान आपीश. एम विचारीने साधु पासे आवे अने बोले. हे अयुष्मन् ! हे साधु ! हुं संसारसमुद्र तरवानी इच्छावाळो तपारे माटे भोजन, पाणी स्वादिम, तथा स्वादिम वस्तु लावुं; अथवा वस्त्र, पात्रां, कांबळ, रजाहरण, विगेरे बनावीने लावुं, अर्थात् आम कहीने ते गृहस्थ शुं करे ? ते कहे छे. पंचेन्द्रिय जेओ श्वाम ले छे, ते प्राणीओ छे. तथा त्रणे काळमां थया, थाय छे अने थशे. ते भूत छे, तथा जीवता हता, जीवे छे, अने जीवशे; ते जीवो छे. तथा सुख दुःखमां सक्त छे ते सत्त्वो छे, तेमनो आरंभ करीने लावे; तेमां भोजन विगेरेना आरंभमां प्राणीनुं उपर्यदेन अवश्य थवानुं छे. आ गृहस्थोनुं कहेलुं बधुं अथवा थोडुं, कोइ साधु स्वीकारी ले. माटे सुलासो करे छे. आ अविशुद्धि कोटि लीधी छे ते बतावे छे.

आहा कम्मुद्देसिअ मीसज्जा बायरा य पाहुडिआ । पूऱ्य अज्ञायरगो उगग्रकोडी अ छब्येआ ॥ १ ॥

आधाकर्मी उद्देशीक मिश, अने बादर प्राभृतिक पूति अने अध्व पूरक, उमद्वकोटी आ छ भेदो ते, अविशुद्धि कोटि छे.

(आ दशवैकालिक सूत्रनी पांचमा अध्ययननी निर्युक्तिनी गाथा छे. तेमां सूचव्युं के, जे कार्यमां जीवोने साक्षात् हणे; ते

सूत्रम्

॥७४७॥

आचारा०

॥७४८॥

साधु निमित्ते थवाथी अविसुद्धि कोटि छे.) हवे. विशुद्धि कोटि बतावे छे. मूलयथी लीघेलुं, उधारे लीघेलुं, छीनवी लीघेलुं. जेम कोइ राजा गृहस्थ पासेथी साधुने आपवा माटे छीनवी ले. तथा पारकानुं बदले लीघेलुं आबुं कोइ साधुने दान देवा माटे करे; तथा पोतानां घरथी साधुना सामे लावीने आपे; ते विशुद्ध कोटी छे. (आमां साक्षात् जीव हिंसा साधु माटे थती नथी. माटे, विशुद्ध कोटी) आ प्रमाणे साधुने आपवा कोइ बोले; तथा हुं तमारे माटे उपाप्रय बनावीश; अथवा सुधरावीश. एबुं बोले; अने ते गृहस्थ हाथ जोडीने माधुं नमावीने आहार विगेरेनी निमंत्रणा करे अने बोले हे साधु ! आ भोजन वापरो; मारां सुधारेलां घरमां रहो; ते वखते साधु जे सूत्र अर्थनो भणेलो विद्वान होय; तेणे दीनतावाळुं मन न करतां तेने ना पाडवी; ते माटे गुरु शिष्यने कहे छे:—हे आयुष्मन् ! हे साधु ! हे भिक्षु ! ते गृहस्थ बुद्धिमान होय; मित्र होय; अथवा बीजो कोइ होय तेने साधुए केवो उत्तर आपवो ? ते बतावे छे, हे आयुष्मन् ! हे गृहस्थ ! तमारुं ए वचन हुं स्वीकारतो नथी. ('खलु' अपिना अर्थमां छे, अने ते समुच्चयना अर्थमां छे.) मारे साधुनो आचार जे पाळवानो छे, तेनुं ज्ञान मने होवाथी हुं स्वीकारुं नहीं. तुं मारे माटे जीवोने दुःख देवा रूप भोजन विगेरे बनावे, अथवा उपाश्रय बनावे; तो मने ते कल्पे नहीं. कारण के, हे आयुष्मन् ! हे गृहपति ! तेवा आरंभ करावा रूप अनुष्ठानथी हुं मुक्त थयेल हुं.

माटे जाणी जोइने हुं केवी रीते स्वीकारुं ? माटे हुं स्वीकारतो नथी. आ प्रमाणे भोजन विगेरेना संस्कारनो साधुए निषेध कर्यो. पण जो, कोइ गृहस्थ प्रथमथी तेवो साधुनो अभिप्राय जाणीने छानुंज तेबुं भोजन, विगेरे करे अने साधुने आपे; तो पण, साधुए बुद्धि बळथी कोइ पण रीते जाणीने तेनो निषेध करवो ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥७४८॥

आचार
॥७४९॥

से भिक्खु परिक्षमिज वा जाव हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खु उवसंकमित्तु गा-
हावई आयगयाए पेहाए असणं वा ४ वत्थं वा ४ जाव आहटुचेएइ आवसहं वा समुस्सि-
णाइ भिक्खू परिधासेउं, तं च भिक्खू जाणिज्ञा सहसमझयाए परवागरणेण अन्नेसिं वा
सुच्चा-अयं खलु गाहावई मम अट्टाए असणं वा ४ वत्थं वा ४ जाव आवसहं वा समुस्सि-
णाइ, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्ञा अणासेवणाए त्तिबेमि (सू० २०३)
ते साधुने मसाण विगेरेमां कोइ स्थाने विचरतां कोइ गृहस्थ मळतां ते हाथ जोडीने प्रकृतिथी भद्र होय; ते मनमां विचारे के
हुं आ साधुने गुप्त रीते आरंभ करीने गोचरी विगेरे आपीश.

प्र०-शा माटे ? उ०-ते साधुने आहार करवा माटे आपीश; अथवा, साधुओने रहेवा माटे मकान बनावी आपीश. ते साधु माटे
बनावेल आहर विगेरे दोषित छे एम साधु जाणी ले. प्र०-केवी रीते जाणे ? पोतानी ताळण बुद्धिथी अथवा, तीर्थङ्करे बतावेला
उपायोथी अथवा, बीजा माणसो एटले, तेना नोकर चाकर विगेरेने पूछीने जाणो ले के आ गृहस्थ मारे माटे आरंभ करीने आ-
हार विगेरे अथवा, उपाश्रय आपे छे, आवु बीजा पासे साधु सांभळे तो, ते वातनी खात्री करीने ते साधु कहे के, आ अमारे माटे
बनावेलुं छे तेथी कल्पतुं नथी; माटे, हुं नहीं लउं. जो आवुं करनार श्रावक होय; तो, तेने दुंकाणमां पिंड निर्युक्तिनुं स्वरूप सम-
जाववुं. बीजो, भद्रक स्वभावनो होय तो, तेने निर्दोष भोजनना दाननुं फळ बतावे; तथा गोचरीना सोळ उद्धम विगेरे दोष बतावे;

सुत्रम्
॥७४९॥

आचार

॥७५०॥

तथा यथाशक्ति ते संबंधी धर्मकथा कहे छे:—

काले देशे कल्पयं शद्ग्रायुक्तेन शुद्धमनसा च । सत्कृत्य च दातव्यं दानं प्रयतात्मना सद्भ्यः ॥१॥

दानं सत्पुरुषेषु स्वल्पमपि गुणाधिकेषु विनयेन । वटकणिकेव महान्तं न्यग्रोधं सत्पलं कुरुते ॥२॥

दुःखसमुद्रं प्राज्ञास्तरन्ति पात्रापिंतेन दानेन । लघुनेव मकरनिलयं वणिजः सधानपात्रेण ॥३॥

योग्य काळ देशमां साधुने कल्पे तेबुं श्रद्धा सहित शुद्ध मनथी उद्यमवाळा यडने प्रासुक दान उत्तम साधुओने आपवुं (१) उत्तम पुरुषो जे गुणमां अधिक छे, तेमने विनय वडे थोडुं पण, आपेलुं दान मोडुं फळ आपे छे. जेम—बडनी कणिका नानी छतां, बडनं आड सांरां फळवाळू बनावे छे. (२)

तीक्ष्ण बुद्धिवाळा पात्रमां योग्य दान आपीने दुःख समुद्रने तरे छे. जेम-मगरनां स्थानवाळो मोटो समुद्र होय; तेने वेपारीओ नानां वहाण बडे तरी जाय छे. (३)

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामि कहे छे, अने हवे पछीनं पण तेओ कहे छे:—

भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा वा फुसंति, से हंता हणह खणह
छिंदह दहह पयह अलुपह विलुंपह सहसाकारेह विप्परामुसह, ते फासे धीरो पुट्ठो अहि-
यासए अदुवा आयारगोयरमाइकर्खे, तक्किया णमेणलिसं अदुवा वडगुत्तीए गोयरस्स अणुपु-

सूत्रम्

1194011

आचार
॥७५१॥

ब्रेण संमं पडिलेहए आयतगुते बुङ्कहिं एयं पवेइयं (सू० २०४)

(‘च’ समुच्चयना अर्थमां छे. ‘खलु’ वाक्यनी शोभा माटे छे.) ते भिक्षाना आचारवाळा साधुने कोइ कहेः—हे साधु ! हुं तमारे माटे भोजन विगेरे अथवा उपाश्रय विगेरे तैयार करावीश; अथवा सुधरावीश. साधुए तेने संमति न आपी होय; तो पण, ते करावे; अने भीठां वचन, अथवा बळात्कारथी हुं साधु पासे ग्रहण करावीश एवं माने; अने बीजो कोइ गृहस्थ साधुना थोडा आचारने जाणतो होय; ते पूछ्या विनाज छानुं कार्य करे; अने विचारे के, हुं तेमने भोजन विगेरे आपीश. हवे ते न भोगववाथी श्रद्धानो भंग थवाथी अथवा, मधुर सेंकडो वचनना आग्रहथी, अथवा क्रोधना आवेशथी निश्चयथी सुख दुःख पणे अवलोक जाणनारो आ साधु छे. एम जाणीने पश्चाताप पूर्वक राजानी आज्ञा लइने न्यकार भावना पामेलो द्वेषी बनीने ते साधुने मारे पण खरो ते बतावे छे. अने एक बताववाथी घणानो आदेश छे तेर्थी जेओ आ पूछीने अथवा विना पूछे आहार विगेरे लाववामां घणुं द्रव्य खरचीने साधुने अर्पण करे, अथवा द्रव्य खरची बनावेलुं भोजन विगेरे साधुओ न ले; तो तेमने ते गृहस्थ क्रोधी बनीने पीडा करे छे.

प्र०—केवी रीते ? उ०—कहे छे. ते शेठ विगेरे क्रोधी बनीने पोते साधुने मारे छे. अथवा, मारवा माटे बीजाने प्रेरणा करे छे, अने बोले छे के—आ साधुने दंडा विगेरेथी मारो; तथा एना हाथ पग कापीने घायल करो; तथा अग्नि विगेरेथी बोलो; तथा तेमना साथल्नुं मांस पकावो; तेनां वस्त्रो विगेरे लुंटी ल्यो; तथा तेनुं बधुं छीनवी ल्यो. एकदम बधुं प्रहार वडे करावो; शीघ्र पंचत्व (मरण) पमाडो; तथा, दुःख देवाना जुदा जुदा विचार करो; जुदी जुदी पीडाथी बाधा करो. आ प्रमाणे हुक्म करवाथी ते साधुने बीजाओ अनेक प्रकारे दुःखना स्पर्शो करे; तो पण, धीर बनीने ते फरसोने फरशी शांतिथी सहन करे. तथा बीजा भूख तरस

सूत्रम्
॥७५१॥

आचार

॥७५२॥

जेर्था, पोते दुःखो न थाय; तेम. बोजानां दुःखमां पोते निमित्तभूत पण न थाय. फक्त धर्म करवा माटे आश्रय आपनारूं निर्दोष भोजन विगेरे होय; तेज साधुओने आपवानुं छे.

शुं बधा पुरुषोने आ बधुं कहेबुं ? उ०—ना. आवनार पुरुष संबंधी विचार करीने कहेबुं के—आ पुरुष कोण छे ? कोने माने छे ? आग्रहवालो के, आग्रह रहित छे ? मध्यस्थ छे ? भद्रक छे ? एम बधुं विचारीने यथाशक्ति कहे अने शक्ति होय; तो, पांच अवयव अथवा, बीजी रीते ए प्रसिद्ध करे के, स्वपक्षनी स्थापना थाय; अने पर पक्षनी योग्य रीते भूलो बतावी तेने सुधारे. एवां अनन्य सदृश वचन कहे. पण साधु पोते सामर्थ्य रहित होय; अथवा, सामेनो माणस तत्त्वनी वात संभळावतां वधारे कोपे तेम होय, अथवा, अनुकूलनो प्रत्यनीक होय; तो वाक् गुसि (मौन) राखवी ते कहे छे. एटले, साधु बुद्धिमान होय; अने सांभळनार इच्छा

सूत्रम्

॥७५२॥

आचारा०
॥७५३॥

राखे, तो, साधुनो निर्दोष संयम बताववो, पण तेम न होय तो, मौन राखीने पोताना आत्मानुं हित विचारतो पिंड विशुद्धि विगेरे आचारन। विषयने उद्धम दोष विगेरेथी दोषित छे के नहि ? एम बीजाथी पूछी लङ्ने सम्यक् शुद्धि विचारे. प्र०—केवो बनीने ? उ०—आत्म गुप्त ते, सदा पोताना संयममां उपयोग राखनारो बनीने विचरे. आ में नथी कह्यं तेकुं सुधर्मास्वामि कहे छे. ‘बुद्धैः’ ते कल्प्य अकल्प्यनी विधि जाणनारा तीर्थङ्कर विगेरेए उपर बतावेलुं कह्युं छे. तथा हवे पछीनुं पण तेमनुं कहेलुं छे.

से समणुन्ने असमणुन्नस्स असमणं वा जाव नो पाइज्ञा नो कुज्ञा वेयाव-
डियं परं आढायमाणे त्तिवेमि (सू० २०५)

फक्त, गृहस्थ अथवा कुशीलीया पासेथी अकल्प्य एम जाणीने आहार विगेरे न ले. तेमज, उत्तम साधु ढीला साधुने पूर्वे बतावेल आहार विगेरे पोते पण जे शुद्ध लावेलो होय ते न आपे; अथवा, तेवा पतितो वहु आदरभानथी आहार विगेरे आपे; अ-थवा बीजी रीते ललचावे; तो पण, तेमनी वैयावच्च न करे; त्यारे पोते केवो बने ? अने कोनी वैयावच्च करे ते कहे छे :—

धर्ममायाणह पवेइयं माहणेण मङ्गमया समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा जाव कुज्ञा वेया-
वडियं परं आढायमाणे (सू० २०६) त्तिवेमि ॥८—२॥

सुरु कहे छे—हे शिष्यो ! तमे केवळी वर्द्धमान स्वामिए कहेला दान धर्मने जाणो, समनोङ्ग साधु ते योग्य विहार करनारो होय ते अपर समनोङ्ग चारित्रधारी संविश होय, समाचारीमां रही साथे गोचरी करतो होव, तेवाने अशन विगेरे चार प्रकारनो

सूत्रम्
॥७५३॥

आचार

॥७५४॥

आहार, वस्त्र पात्र विगेरे चार प्रकारनुं द्रव्य आपे, तथा ते आपवा माटे निमंत्रणा करे, अथवा पेशल वैयावच्च करे अर्थात् अंगम-दर्दन (चोळबुं चांपबुं) विगेरे पण करे, पण एथी विरुद्ध आचारवाळा जे गृहस्थो कुतीर्थिओ पासत्थाओ असमनोङ्ग साधुओ होय, तेमने आपे नहि, परंतु समनोङ्गनेज पोते आपे, तथा अतिशे आदर सत्कार करीने तथा ते वस्तु माटे सीदातो होय, अथवा तपेलो होय, तो तेनी योग्य रीते वैयावच्च करे, आथी एम बताव्युं, के गृहस्थ तथा कुशीलीया साधुनी वैयावच्च न करवी, आहार विगेरे न आपवा. पण आटलुं विशेष छे, के गृहस्थ पासे जे कल्पनीय छे ते लेबुं अने अकल्पनीयनोज निषेध छे, पण असमनोङ्ग साधु पासेथी तो सर्वथा लेवानो निषेध कर्यो. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. विमोक्ष अध्ययनमां बीजो उद्देशो समाप्त थयो.



त्रीजो उद्देशो

बीजो कहा पछी त्रीजो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अकल्पनीय आहार विगेरेनो निषेध कहो. तथा तेना निषेधथी अपमान मानीने कोइ कोप करीने मारवा तैयार थाय, तेने दान केवी रीते देबु ते यथावस्थित दान विधिनी प्ररूपणा साधुए करवी, तेम आ उद्देशामां पण आहार विगेरे निमित्त माटे घरमां पेठेला साधुनुं अंग ठंड विगेरेथी कंपतुं देखीने गृहस्थने उल्लुं सप्ताह के आ साधु काम चेष्टादिना कारणे धूजे छे, तेवा गृहस्थने यथावस्थित स्वरूप बतावीने गीतार्थ साधुए तेनी खोटी शंका दूर करवी. आ प्रमाणे आवा संबंधे आवेला उद्देशानुं सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारबुं जोइए ते कहे छे.

मज्जिञ्जमेणां वयसावि एगे संबुद्धमाणा समुद्धिया, सुच्चा मेहावी वयणं पंडियाणं निसामिया

सूत्रम्

॥७५४॥

आचार
॥७५५॥

समियाए धर्मे अरिएहि पवेइए ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा अपरिगहेमाणा नो
परिगहावंती सवावंति चणं लोगंसि निहाय दंडं पाणेहि पावं कम्मं अकुब्बमाणे एस महं
अंगथे वियाहिए, ओए जुइमस्स खेयन्ने उववायं चवणं च नज्जा (सू० २०७)

अहीं त्रण अवस्थाओ छे. जुवानी मध्यम वय, अने वृद्धावस्था छे, तेमां मध्यम वयवाळो परिपक्व (स्थिर) बुद्धिवाळो होवाथी धर्मने योग्य छे, ते प्रथम बतावे छे, केटलाक मध्यम वयमां बोधपामेला धर्म चरण माटे तैयार थएला ते समुत्थित जाणवा. जो के युवावस्था के वृद्धावस्थामां दीक्षा लेनारा होय छे, छतां पण, बाहुल्यताथी तथा प्राये मध्यम अवस्थामां भोग तथा कुतूहलनी इच्छा दूर थयेल होवाथी अविघ्नपणे धर्मनो अधिकारी थाय छे. माटे मध्यम वय लीधी छे.

प्र०—केवी रीते बोध पामेला तैयार थया छे ? उ०—कहे छे. अहीं त्रण प्रकारना बोध पामनारा जाणवा. (१) स्वयं बुद्ध (२) प्रत्येक बुद्ध, (३) बुद्धबोधित. ते त्रणमां अहीं बुद्धबोधितनो अधिकार छे, ते कहे छे. ‘मेवाकी’ ते मर्यादामां रहेल बुद्धिमान साधु पंडितो (तीर्थङ्कर) विगेरेनुं हित ग्रहण करवुं; अहित छोडवुं; ए वचन प्रथम सांभळीने पछी चिचारीने समताने धारण करे.

प्र०—शा माटे ? उ०—कारण के समता एटले मध्यस्थपणुं धारीने आर्थ तीर्थकर विगेरे ए प्रकर्षथी श्रुति चारित्ररूप धर्म कहो छे. अने मध्यम वयमां नेमणे धर्म सांभळीने बोध पामीने चारित्र लेवा तैयार थयेला छे. ते शुं करे ते कहे छे. तेओ दीक्षा लडने भोक्ष तरफ प्रयाण करी काम भोगोने त्यागी तथा जीवोने दुःख न दझने परिग्रहने धारण न करता विचरे. (पहेलुं छेलुं

सूत्रम्
॥७५५॥

आचारो

॥७५६॥

लेवाथी बचलां त्रण आवे छे.) तेथी जुठ न बोलता चोरीने त्यागी ब्रह्मचर्य पाळता विचरे एवा साधुओ पोताना देहमां पण ममत्व त्यागे छे. एमज बधा लोकने विषे कोइपण जातनो परिग्रह तेओ राखता नथी. (च समुच्चयना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम बतावे छे. णं वाक्यनी शोभा माटे छे.) वळी प्राणीओने दंडे ते दंड छे. अने ते दंड बीजा जीवने परिताप करनार छे. ते दंडने प्राणी तरफ अथवा प्राणी विषे नांखवाथी पाप थाय कर्म बंधाय तेथी ते पाप रूप कर्म ते अढार प्रकारनुं छे. तेने पोते उत्तम साधु आचरतो नथी. तथा बाह्य अभ्यन्तर ग्रन्थ छे तेने त्यागवाथी तेवा साधुने तीर्थङ्कर गणधर विगेरेए अग्रंथ (निर्ग्रन्थ) कहो छे.

प्र०—आवो कोण थाय ? उ०—‘ओजः ते अद्वितीय एटले रागद्वेष रहित होय छे. तथा द्युतिवाऽजो एटले संयम अथवा मोक्ष छे तेना खेदने जाणनारो छे. अने ते निषुण होवाथी देवलोकमां पण उपपात च्यवन छे. एम जाणीने विचारे छे के बधां संसारी स्थान अनित्य छे. एवी बुद्धिथी पोते पाप कर्मने वर्जनारो थाय छे. केटलाक पुरुषो तो मध्यम वयमां पण चारित्र लीवेला परिषह तथा इन्द्रियोथी ग्लानता पामे छे. ते बतावे छे.

आहारोवचया देहा परीसहप भंगुरा पासह एगे सविदिएहिं परिगिलायमाणेहिं (सू० २०८)

आहारथी उपचय थाय ते आहारोपचय छे.

प्र०—ते कोण छे ? उ०—देहो छे. ते देहो आहारना अभावमां झांखाश लावे छे अथवा ते नाश पामे छे. ते प्रमाणे परिषहो आवेथी भंगुर छे. तेथी आहारथी देहो पुष्ट थया छतां पण परिषहो आवतां अथवा वायु विगेरेना अटकावथी ग्लानी पामे छे. एटले गुरु शिष्यने कहे छे. हे शिष्यो तमे जुओ के केटलाक बधी इन्द्रयो झांखी पडतां कलीबताने पामे छे. ते बतावे छे. भूखथी

सुत्रम्

॥७५६॥

आचा०

॥७५७॥

पीडाएलो देखतो नथी, सांभळतो नथी, सुंघतो नथी, विगेरे जाणवुं, तेमां आहार विना केवळीनुं पण शरीर ग्लान भाव पामे छे. तो ते सिवायना बीजा जे स्वभावथीज भंगुर शरीरवाढा छे तेनुं शुं कहेवुं ?

प्र०—केवळी विनाना साधुओ अकृतार्थ छे, अने क्षुधा वेदनीयनो सज्जाव छे. तेथी तेओ आहार करे छे अने दया विगेरे महाव्रतो पाळे छे ए मानवुं ठीक छे पण, केवळी तो नियमथी मोक्षमां जनार छे. त्यारे शा माटे शरीरने धारे छे ? अने ते धारण करवा शुं काम खाय छे ?

उ०—तेने पण, चार अघाति कर्मनो सज्जाव छे. तेथी एकांतथी कृतार्थता नथी, अने तेनी खातर शरीर धारे छे ! अने आहार विना तेनुं धारण न याय; तथा तेमने क्षुधावेदनीय कर्मनो सज्जाव छे माटे खाय छे. ते कहे छे :—वेदनीयना सज्जावथी तेना करेला ११ परिसहो पण, केवळी ने ओळा के बधा परिषहो उदयमां आवे छे तेथी केवळी पण खाय छे. ए सिद्ध थयुं; अने तेथीज आहार विना इन्द्रियोनी ग्लानता छे एम बताव्युं. आ प्रमाणे तत्त्वने जाणनारो परिसहथी पीडातो होय, छतां पण शुं करे ते कहे छे :—

ओए दयं दयइ, जे संनिहाणसत्थस्स खेयन्ने से भिक्खू कालन्ने बलन्ने मायन्ने खणन्ने
विण्यन्ने समयन्ने परिगंगहं अममायमाणे कालेणुट्टाइ अपडिन्ने दुहओ छित्ता नियाइं (सू० २०९)

ओज—ते एकलो रागद्वेष रहित बनोने भूख तरसनो परिषह आवे छते पण, दया (कृपा) पाळे (धारण करे) पण परिषहथी पीडातां दया छोडी न दे. प्र०—क्यो पुरुष दयाने पाळे छे ? उ०—जे लघुकर्मा होय ते. जेनावडे सम्यक् रीते नारकी विगेरे

सूत्रम्

॥७५७॥

आचा०

॥७५८॥

गतिमां रखाय ते) संनिधान कर्म छे, तेना स्वरूपने जणावनार शाख छे, तेनो निषुण खेदज्ज छे, अथवा संनिधान कर्म छे, तेनु शख संयम छे, तेना खेदने जाणनारो छे. अर्थात् संम्यक् संयमनो जाणनारो छे अने जे संयमनी विधि जाणनारो छे, ते भिक्षु कालज्ज ते उच्चित अनुचित अवसरनो जाण छे आ बधां सूत्रोनो अर्थ 'लोक विजय' नामना बीजा अध्ययना पांचमा उद्देशामां बतावेल होवाथी त्यांथी जाणी लेबुं; तथा बलज्ज, मात्रज्ज, क्षणज्ज, विनयज्ज, समयज्ज, बधी बावतमां निषुण साधु परिग्रहनो ममत्व त्यागीने कालमां उत्थायी तथा अप्रतिज्ञ (कदाग्रह रहित) बनीने उभयथी (द्रव्य भावथी) ममताने छेदनारो बनीने ते साधु संयम अनुष्टानमां निश्चयथी वर्त्ते; तेने संयमअनुष्टानमां वर्त्ततां शुं थाय? ते कहे छे:—

तं भिक्खु सीयफासपरिवेवमाणगायं उवसंकमित्ता गाहावई ब्रूया आउसंतो समणा ! नो
खलु ते गामधम्मा—उद्वाहंति? आउसंतो गाहावई! नो खलु मम गामधम्मा उद्वाहंति, सीय
फासं च नो खलु अहं संचाएसि अहियासित्तए, नो खलु मे कप्पड अगाणकायं उज्जालित्तए
वा (पज्जालित्तए वा) कायं आयावित्तए वा पयावित्तए वा अन्नेसि वा वयणाओ, सिया स
एवं वयंतस्स परोअगणिकाय उज्जालित्ता पज्जालित्ता कायं आयाविज्ज वा, पायविज्ज वा, तं च
भिक्खू—पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणाए त्तिबेमि [सू० २१०] ॥ ८-३॥
अंतप्रांत आहारथी तेज रहित बनेला निष्किचन तथा भिक्षाथी निर्वाह करनारा साधुने गरम अवस्थानी युवानी जतां योग्य

सूत्रम्

॥७५८॥

आचार
॥७५९॥

वस्त्र ठंड रोकवा जोइए; ते न मळवाथी ठंडथी कंपता शरीरवालाने नजीक गृहस्थ मळतां शुं थाय? ते कहे छेः—ते गृहस्थ ऐर्खर्यनी गरमीथी अहंकारी छे. कस्तुरीथी लेप कर्यो छे. उत्तम जातिना केसरना जाडा रसथी गात्र लींपेलुं छे. मीन मद आगुरु घन सार धूपित रल्लिकाथी लेपेला शरीरवालो छे. अने जुवान सुंदरीओना संदोहथी बीटायेलो छे. अने शीत स्पर्शनो अनुभव जेने नाश पास्यो छे तेवो शेठीयो तेवा कंपता मुनिने जोइ विचारे के आ मुनि मारी सुंदर स्त्रीओ जे देवांगनानी रूप संपदाने हसी काढे छे, तेने जोइने सात्विक भावने पामेलो ध्रूजे छे के ठंडना लीधे? आवी रीते शंकामां पढेलो शेठ बोले, के हे आयुष्मन्! हे श्रमण! पोताना आत्मानी कुलीनताने प्रकट करतो प्रतिषेध द्वारवडे पूछे छे के तमने शुं इन्द्रियोनी उन्मत्तता दुःख दे छे? आबुं गृहस्थ पूछे तो तेनो अभिप्राय जाणीने साधुए कहेवुं, के आ गृहस्थने पोताना आत्माना अनुभव वडे अंगना (स्त्री)ना अवलोकनना प्रकट करेल भावथी खोटी शंका थइ छे, तो हुं तेनी शंका दूर करुं आबुं विचारी साधु बोले हे आयुष्मन्! हे गृहस्थ! मने इन्द्रियोनी उन्मत्तता नथीज बाधती; पण, तमे मारुं शरीर जे, कंपतुं जोयुं छे, ते फक्त ठंडनुंज कारण छे' पण ते कामदेवनो विकार नथी. अति ठंडनो स्पर्श सहन करवाने हुं शक्तिवान नथी. आ प्रमाणे साधु बोले त्यारे, ते गृहस्थ भक्ति अने करुणा! रसथी भिजायला हृदयवालो बनीने कहे केः—शीघ्र ठंड उडाडनार सारा बलेला अग्निने केम सेवतो नथी? मुनि कहे:—मने अग्निकाय सेववो कल्पतो नथी; तथा सळगाववो पण कल्पतो नथी; तथा कोइए सळगावेलो होय तो, त्यां थोडो घणो ताप लेवो पण मने कल्पतो तर्ही; तेम बीजनां वचननथी पण, एम करवुं मने कल्पतुं नथी; अथवा बीजाने अग्नि बालवानुं कहेवुं पण मने कल्पतुं नथी. ते साधुने आबुं बोलतो जाणीने ते गृहस्थ कदाच आबुं करे ते कहे छेः—

सूत्रम्
॥७५९॥

आचारा०
॥७६०॥

ते गृहस्थ आबुं मुनि पासे सांभळीने (पोतानी भक्तिर्थी) अग्नि सलगावीने भडको करीने साधुनी कायाने थोडी अथवा घणी तपावे, ते अग्नि सलगाववो मुनि देखे, ते पोतानी सुबुद्धिर्थी अथवा तीर्थङ्करना वचनोर्थी अथवा बीजा पासे तत्त्व समजीने ते गृहस्थने समजावे के आ अग्नि सेववो मने कल्पतो नथी, पण तमे साधु उपर भक्ति अने अनुकम्पार्थी पुण्यनो समूह उपार्जन कर्यो छे.
आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो

त्रीजो कहा पछी चोथो कहे छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशामां गोचरी गयेला साधुने ठंडथी शरीर कंपतां गृहस्थने खोडी शंका थाय, तो साधुए दूर करवी, पण जो गृहस्थना अभावमां जुवान खीने साधुना उपर काम चेष्टानी खोटी शंका थाय, अने कुचालनी इच्छाथी स्पर्श करवा आवे, तो गले फांसो खाइने अथवा गार्ध पृष्ठ विगेरे आपघातनुं मरण पण स्वीकारबुं; (पण खोडु काम करबुं नहिं) आबुं उपसर्गनुं कारण न होय तो आपघात न करवो, ते बताववा आ उद्देशो कहे आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिए पायचउत्थेहिं तस्स णं नो एवं भवइ—चउत्थं वत्थं जाइ-
स्सामि, से अहेसणिज्ञाइं वत्थाइं जाइज्ञा अपरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्ञा, नो धोइज्ञा नो

सूत्रम्
॥७६०॥

आचा०
॥७६१॥

धोयरक्ताइं वत्थाइं धारिजा, अपलिओवमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए, एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं (सू० २११)

अहीं प्रतिमा धारी अथवा जिनकल्पी जे अछिद्र हाथ (लब्धि) वाळो मुनि जाणवो; कारणके, तेनेज पात्र निर्योग युक्त पात्र, तथा कल्पत्रय (वस्त्रनी) आवी ओघ उपधि होय छे, तेने औपग्रहिक (संथारीउं विगेरे) उपधि होती नथी; तेमां ठंडमां शिशिर विगेरे क्रतुमां क्षौमिक (मूत्रनां) वे कपडां (२।।) हाथ लांबा पहोळां होय छे, अने बीजुं उननुं होय छे, तेवा मुनिने ठंड विशेष होय; तो पण, ते साधु बीजुं कपडुं इच्छतो नथी ते बतावे छे. जे भिक्षु त्रण कपडांथी निर्वाह करनारो छे, ते ठंडमां एक कपडुं ओढे छे. जो ठंड वधारे लागे; अने सहन न थाय तो, बीजुं ओढे. ते बन्नेथी पण, घणी ठन्डना लीधे न सहाय तो, बीजुं उननुं कपडुं पण ते बन्ने उपर ओढे छे. उनना कपडाने बहारना भागमां सर्वथा राख्वुं; अंदर तो, मूत्रनुज राख्वुं. ए त्रण वस्त्रो केवां छे? ते बतावे छे. 'पात्र चतुर्यैः' पडता आहारने न पडवा दे ते पात्र छे, अने ते पात्र ना लेवाथी पात्रनो निर्योग सात प्रकारनो पण लीधो जाणवो कारण के तेन। विना पात्र लेवाय नहीं. ते आ प्रमाणे छे:—

पतं पत्तावन्धो, पायट्वर्णं च पायकेसरिआ । पडलाइ रथत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥ १ ॥

[१] पात्र [२] पात्रानुं बन्ध [३] पात्रानु स्थापन (४) पात्र केशरिका (पूंजणी) (५) पडला (६) रज व्वाण [७] गुच्छो आ सात पात्रानो निर्योग छे. आ प्रमाणे सात प्रकारनो पात्र निर्योग तथा कल्प त्रण, तथा रजोहरण [ओघो] मुखवस्त्रिका (मुहपत्ति)

सूत्रम्
॥७६१॥

आचार

॥७६२॥

ए पांच मेलवतां बार प्रकारनो उपधि छे. आ बार प्रकारनी उपधि धारण करभारने आवो विचार न थाय, के मने आ ठन्डी रुतुमां त्रण वस्त्रोथी ठन्ड दूर थती नथी, माटे चोथुं वस्त्र हुं याची लावुं. आम अध्यवसायनो निषेध करवाथी याचवुं तो दूरथीज काढी नारुयुं. जो त्रण कल्प न होय, अने ठन्डी रुतु आवी पहोंची, तो आ जिन कल्पी विगेरे मुनि यथा एषणीय [निर्दोष] वस्त्रोनी याचन करे. उत्कर्षण अपकर्षण रहित अपरि कर्मवाळां याचे तेमां [१] उद्दिष्ट, [२] पहे, (३) अंतर, [४] उज्ज्ञयथम्मा ए चार वस्त्रनी एषणा छे, तेमां पाछली बेनो अग्रह छे, बाकीनी बे लेवाय छे, तेमां कोइपण एकनो अभिग्रह होय छे. याचना करतां शुद्ध वस्त्रो मळे, तो ले अने जेवां लीधां तेवांज पहेरे, पण, तेने उत्कर्षण के धोवुं विगेरे परिकर्म न करे तेज बतावे छे. अचित्त जळ वडे पण न धुए स्थविर कल्पीने तो वर्षांद आव्या पहेला अथवा मंदवाडमां अचित्त पाणीथी यतनाथी धोवानी अनुज्ञा (संमति) छे, पण जिनकल्पीने तेम धोवुं न कल्पे, तेम प्रथम धोइने पछी रंगेलां कपडां होय ते पण न पहेरे, तथा बीजा गामे जतां वस्त्र संताज्या विना चाले, अर्थात् अंत प्रांत (तदन सादां जीर्ण जेवां) वस्त्र धारे; के तेने चोरावाना डरथी ढांकी राखवां न पडे तेथीज जिनकल्पी मुनि अवम चेलिक छे; तेने चेल (वस्त्र) प्रमाणथी तथा मूळथी अवम [ओछी कींमतनुं] होय; तेथी अवम चेलिक छे; ('सु' अवधारणना अर्थमां छे,) आ प्रमाणे वस्त्रधारी जिनकल्पी मुनिने त्रिकल्पवाळी अथवा बार प्रकारनी ओघ उपविवाळी सामग्री होय छे. पण बीजी उपधि न होय; अने ठन्ड दूर थतां ते वस्त्रो पण त्यजी देवानां छे, ते बतावे छे.

अह पुण एवं जाणिज्ञा-उवाइकंते खलु हेमंते गिम्हे पडिवन्ने अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिष्ठ-

सूत्रम्

॥७६२॥

आचा०

॥७६३॥

विज्ञा अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (सू० २१२)

जो, ते वस्त्रो बीजा शीयाळा सुधी चाले तेवां होय, तो बन्ने वस्त्रे पडिलेहणा करी धारण करे; अथवा, पासे राखे पण जो जीर्ण जेवां थइ गयां होय तेवुं जाणे तो, ते त्यजी दे ते आ सूत्र वडे बतावे छे. पछी ते साधु एम जाणे के, निश्चे हवे हेमंत कठु [शीयाळो] गयो; अने उनाळो आव्यो छे. ठंड पण दूर थइ छे, अने आ वस्त्रो पण जीर्ण थइ गयां छे. एवुं जाणीने ते वस्त्रो त्याग करे. जो वधां जीर्ण थयेलां न होय; तो जे जे जीर्ण होय ते परठवी दे, अने त्यागीने निःसंग थइने विचरे. पण जो शिशिर (पोर माघ) वीत्या पछी कोइ क्षेत्र काळ के पुरुषने आश्रयी शीत (ठन्डी) वधारे लागती होय तो शुं करवुं? ते कहे छे:—शीत जतां वस्त्रो त्यागवां अथवा क्षेत्रादिना गुणथी हिम पडनारो वायरो ठन्डो वाय तो, आत्मानी तुलना तथा ठन्डनी परीक्षा करवा सान्तर उत्तर वस्त्रवाळो थाय. अर्थात् तेमांथी कांइक तो ओढे; कांइक बाजुए राखे पण, ठन्डनी शंकाथी त्यजी न दे. अथवा अवम चेल [ओछां वस्त्रवाळो] ते एक कल्पना त्यागवाथी वे वस्त्र धारण करे, अने धीरे धीरे ठन्ड जतां बीजुं वस्त्र पण दूर करे, तेथी एक साढो (चादर) थी शरीर ढांकनारो बने, अथवा तदन शीतनो अभाव थाय तो ते पण त्यजी दे, अने पोते अचेल (वस्त्र रहित) बने एटले तेनी पासे मात्र मुहपत्ति अने रजोहरण (ओघो) ए बेज मात्र उपथि रहे.

प्र०—ए एक वस्त्र पण शा माटे त्यजी दे? ते कहे छे.

लाघवियं आगममाणे, तवं से अभिसमन्नागण भवइ (सू० २१३)

सूत्रम्

॥७६३॥

आचारा०
॥७६४॥

लघुनो भाव लाघव जेने होय ते लाघविक छे, तेवी लाघविक (लघुता) ने पोते धारण करवा एक पण वस्त्र त्यजी दे, अथवा शरीर अने उपकरणना कर्ममां लाघव पणाने पामीने वस्त्र त्याग करे, तेवा त्यागीने शुं थाय ? ते कहे छे. ते वस्त्रनो परित्याग करनार साधुने तपनी प्राप्ति थाय छे. कारण के कायाने क्षेत्र आपबो ते पण बाह्य तपनो भेद छे. कहुं छे के:—

“ पंचहिं ठाणेहिं सप्तणां निर्गंथाणं अचेल गते पसत्थे भवति तंजहा, ! अप्पा पडिलेहा १

वेसासिए रुवे २ तवे अणुमए ३ लाघवे पसत्थे ४ विउले इन्द्रियनिगहे ५ ”

पांच कारणे साधु निर्गंथने अचेलकपणुं प्रशंसवा योग्य छे. [१] अल्पपडिलेहणा (२) विश्वासवाळुं रूप (३) तपनी अनुमति [४] प्रशस्त लाघव, [५] अतिशे इन्द्रियनो निग्रह आ जिनेश्वरे कहुं छे ते बतावे छे:—

जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमिच्चा । सद्बओ सद्बत्ताए समत्तमेव सममि जाणिजा [सू० २१४]

आ वधुं वीर वर्द्धमान स्वामीए कहेलुं छे एम जाणीने बधा प्रकारोथी सर्व आत्माथी सम्यक्त्व अथवा समत्वपणुं धारे, अर्थात् सचेल अचेल अवस्थानी तुलनाने पोते जाणे, अने आ सेवन परिङ्गाथी पालन करे; पण जे साधुनी शक्ति तेवी न होय, तो ते प्रभुनो मार्ग वरोबर न जाणी शके, तो ते साधु हवे जे बतावे छे, तेवा अध्यवसायवाळो थाय ते कहे छे.

जस्त पां भिक्खुस्स एवं भवइ-पुट्टो खलु अहमंसि नालमहमंसि सीयफासं अहियासित्तए, से वसुमं सद्वसमन्नागाय पन्नाणेणं अप्पाणेण केइ अकरणयाए आउद्दे तवस्सिणा हु तं सेयं जमेगे

सुत्रम्

॥७६४॥

आचा०
॥७६५॥

विहमाइए तत्थावि तस्स कालपरियाए सेऽवि तत्थ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहायतणं
हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिवेमि [सू० २१५] ८-४ ॥विमोक्षाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः॥

(यं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षुने मंद संहनना कारणे आवो अध्यवसाय थाय, के हु रोग आतंकथी अथवा ठन्ड विगे-
रेना कारणे अथवा स्त्री विगेरेना उपसर्गथी मारुं आ शरीर त्यागवुं ते श्रेय छे, पण ठन्ड विगेरेनुं दुःख के भाव ठन्ड ते स्त्री विगे-
रेनो उपसर्ग सहन करवा हुं शक्तिवान नथी; तेथी, मारे भक्तपरिज्ञा इंगित परण अथवा पादप उपगमन उत्सर्गथी मरण करवा
योग्य छे. पण, मारे आ अवसरे तेबुं करवुं बनी शके तेबुं नथी. कारण के, तेमां अमुक समय सुधी काळ क्षेप करवो जोइए. ते उपसर्ग
माराथी सहन थाय तेम नथी; अथवा, रोगथी वेदना घणो काळ सहेवाने हुं शक्तिमान नथी. तो मारे हमणा अपवादनुं वेहानस
अथवा गार्द्धपृष्ठ मरण स्वीकारवुं योग्य छे. पण, जे उपसर्गथी पीडायलोहोय ते पाप सेवबुं तेने योग्य नथी तेबुं बताववा कहे छेः-

‘स’ ते साधुने वसु-द्रव्य (संयम) छे, ते संयमवाळो होय ते वसुमान् छे. तेने अनुक्रमे सिद्धांतनुं ज्ञान प्राप्त थवा छतां, कोइ
स्त्रीना कटाक्षनो उपसर्ग संभव थतां पण. ते न सेववाथी ‘आवृतो’ (आ समंतात् व्यवस्थित चारे बाजुथी मर्यादामां रहेलो ते)
आवृत छे, अथवा वायु विगेरेथी थयेल ठन्डो स्पर्श जे दुःख आपनार छे, तेनी चिकित्सा न करवाथी वसुमान् सिद्धांतर्थी प्राप्त करेल
ज्ञानवाळा आत्मा वडे व्यवस्थित छे, तेवो उपसर्ग आवतां वायु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी शुं करे? ते कहे
छे. (‘हु’ अव्यय हेतुना अर्थमां छे.) जेथी, घणो काळ वायु विगेरेनी ठन्डी वेदनाने सहन न करी शकवाथी अथवा, जे कारणथी

सूत्रम्
॥७६५॥

आचा०

॥७६६॥

युवा स्त्री उपसर्ग करवा आवेली छे, ते विष भक्षणथी के, फांसो खाइने मरवानुं बताव्या छतां पण न मुके; तेथी, ते तपस्त्रीए घणो काळ जुदा जुदा उपायो वडे करेली तपस्थाना धनवाळा साधुने मरवुं तेज श्रेय छे, जेमके कोइ साधुने तेना सगांए स्त्रीवाळा ओर-डामां प्रवेश कराव्यो, अने प्रेमवाळी पत्नीए घणीवार प्रार्थना कर्या छतां साधुए धैर्य राख्युं. पण अंते नीकळवानो बीजो उपाय न जोवाथी फांसो खाधो, तेम फांसो खावा माटे उंचे लटकवुं, अथवा विष भक्षण करवुं, अथवा उंचेथी पडवुं, तेज प्रमाणे घणो काळ ठन्ड विगेरे सहन न थवाथी सुर्दर्शन माफक प्राण त्यागवा. शंका—फांसो खावो विगेरे बाळ मरण छे, अने ते अनर्थ माटे छे, त्यारे तेनो केवी रीते तमे उगदेश कर्यो? कारण के सिद्धांतमां कह्युं छे के:—

“ इच्चेण बालमरणेण मरमाणे जीवे अणंतेहि नेरइयभवगगहणेहि अप्पाणं संजोएइ जाव

अणाइयं चणं अणवयगं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो भुज्जो परियट्टिति ”

उ०—आ दोष अमारा अहंत (जिनेश्वर) ना मतमां नथी, कारण के कंइपण एकांतथी निषेध कर्यो छे, के स्वीकार्यु छे, तेवुं नथी फक्त एक मैथुनमां जुदुं छे; अने सिवाय दरेकमां द्रव्य क्षेत्र काळ भावने आश्रयीने जे प्रथम निषेध कर्यो हतो, तेज स्वीकाराय छे, उत्सर्ग मार्ग पण कोइ बखत अगुण (नुकशान) माटे छे अने अपवाद पण गुणने माटे काळ [समय] जाणनारा साधुने थाय छे, तेज बतावे छे. दीर्घ काळ संयम पाळीने संलेखना विधि ए काळना पर्यायवडे भक्तपरिज्ञा विगेरेनुं मरण गुणने माटे छे, अने स्त्री विगेरेना उपसर्गमां वेहानस गार्धपृष्ठ विगेरेथी मरण थाय तेमां काळ पर्यायज छे. अर्थात् जेवी रीते भक्त परिज्ञा विगेरेनुं मरण गुणवाळुं छे, तेम आ काळ पर्यायना मरण जेवुं वेहानस विगेरे मरण लाभदायी छे. घणा काळ पर्यायमां जेटलुं

सुत्रम्

॥७६६॥

आचा०
॥७६७॥

कर्म आसाधु खपावे छे, तेटलुंज आवा समयमां थोडा काळमां कर्म क्षय करी नाखे छे ते बतावे छे. ‘सोऽपि’ वेहानस विगेरेथी मरनारो पण फक्त भक्त परिज्ञा विगेरे करनारो नहि पण आ साधु वेहानस विगेरे मरणमां (‘विअंति कारण्ति’) विशेष प्रकारे अन्तक्रिया करनारो ते व्यन्तिकारक छे तेवाने तेवा समयमां वेहानसादि मरण उत्सर्गज मार्ग छे. कारणके, आवुं अकाळ मरण जे अपवाद रूप छे, तेना बडे मरेला अनन्ता सिद्धो पूर्वे थया अने थशे. उपसंहार करवा कहे छे के, आ उपर बतावेलुं वेहानस विगेरे मरण मोह दूर थयेला साधुओनी कर्त्तव्यताथी आयतन [आश्रय] छे अने अपाय दूर करतुं होवाथी हित छे. जन्मांतरमां पण सुख आपनार होवाथी सुख छे. तथा काळ आवेलो होवाथी क्षम (युक्त) छे. तथा, कर्म क्षय करनार होवाथी निःश्रेयस छे. तथा, पुण्यनो अनुगम उपार्जन करवाथी आनुगमिक छे, आ प्रमाणे सुधर्मास्त्रामी कहे छेः—
चोथो उद्देशो समाप्त.

पांचमो उद्देशो

चोथो उद्देशो कहीने हवे पांचमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे गया उद्देशामां गार्धपृष्ठ विगेरे बाल्परण बताव्युं पण आ उद्देशामां तो तेथी उल्लुं भक्तपरिज्ञानामनुं मरण ग्लान भाव पामेला साधुए स्वीकारवुं ते कहे छे. तेथी आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

सूत्रम्
॥७६७॥

आचारो
॥७६८॥

जे भिक्खु दोहिं वत्थेहिं परिबुसिए पायतइएहिं तस्स णं नो एवं भवइ तइयं वथं जाइ-
स्सामि, से अहेसणिज्ञाइं वत्थाइ जाइज्ञा जाव एवं खु तस्स भिक्खुस्स सामगियं, अह पुण
एवं जाणिज्ञा-उवाइकंते खलु हेमंते गिम्हे पडिवणे, अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिद्विज्ञा,
अहापरिजुन्नाइं परिद्वित्ता अदुवा संतरुत्तरे अदुवा ओमचेले अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले
लाघवियं आगममाणे तवं से अभिसमन्नागए भवइ जमेयं भगवया पवेइयं तमेव अभि-
समिच्छा सद्बओ सद्बत्ताए सम्मतमेव समभिजाणिया, जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-पुट्ठो
अबलो अहमसि नालमहमंसि गिहंतरसंकमणं भिक्खायरियं गमणाए, से एवं वयंतस्स परो
अभिहडं असणं वा ४ आहट्टु दलइज्ञा, से पुद्वामेव आलोइज्ञा-आउसंतो ? नो खलु मे
कपड़ अभिहडं असणं ४ भुत्तए वा पायए वा अन्ने वा एयप्पगारे (सू० २१६)

तेमां त्रण कल्पमां रहेल स्थविरकल्पी अथवा जिनकल्पी मुनि होय, पण वे कल्प (वस्त्र) धारण करनार अवश्ये जिनकल्पी
होय, अथवा परिहार विशुद्धिक अथवा यथालंदिक के प्रतिमाधारी तेमांनो कोइ पण होय, आ सूत्रमां बतावेल जे जिनकल्पी विगेरे
वे वस्त्रो धारण करनारो होय, आमां वस्त्र शब्द सामान्यथी लीक्हो छे, माटे एक सूत्रनुं बीजुं उननुं एम वे वस्त्र धारण करी संय-

सूत्रम
॥७६८॥

आचार्य
॥७६९॥

ममां रहेल छे, केवां वे कल्प वस्त्र छे ? उ०—पात्र बीजुं धारण करेलो, साधु छे. ते बधुं पूर्वना सूत्र प्रमाणे जाणवुं, ते ठन्डथी पीडाया सुधीनुं जाणवुं, ते प्रमाणे अहीं कहे के हुं वायु विगेरेन। रोगथी पीडायेल निर्बल होवाथी एक घरथी बीजे वेर जवा असमर्थ छुं तेथी भीक्षा माटे जवा हुं अशक्त छुं आवुं बोलनार साधु. पासे कोइ गृहस्थ उभो होय, ते साधुनुं बोलवुं सांभळीने अथवा बोल्या विना पण तेने अशक्त देखीने पर (बीजो) गृहस्थ विगेरे अनुकम्पा तथा भक्तिना रसथी कमळ हृदयवाळो बनीने अभिहत ते जीवोने दुःख दइ बनावेलुं अशन पान खादिम स्वादिम लावीने ते साधुने आपे, ते समये ग्लान साधुए सूत्रार्थने अनु-सारे जीवितने नहि वांछतां मरवुं बहेतर ! एम विचारीने तेणे शुं करवुं ते कहे छे, पूर्वे बतावेला जिन कल्पी विगेरे चारेमांथी कोइ पण एक साधुए प्रथम विचारवुं, के उद्धम विगेरे क्या दोषथी आ दूषित छे ? तेमां अभ्याहृत जाणीने तेनो निषेध करवो, ते आ प्रमाणे हे आयुष्मन ! हे गृहपते ! आ मारा सामे आणेलुं अशन खावाने, पणी पीवाने अथवा तेवुं बीजुं आधाकर्म विगेरे दोषथी दुष्ट अमने कल्पतुं नथी, आ प्रमाणे ते दान आपता गृहस्थने समजावे, बीजो प्रतिमां—

“ तं भिक्खुं कोइ गाहावई उवसंकमितु वूया, आउसंते समणा ! अहन्नं तव अट्टाए असणं वा ४ अभिहं
दलामि, से पूव्वामेव जाणेज्जा—आउसन्तो गाहावई ! जन्नं तुमं मम अट्टाए असणं वा ४ अभिहं चेतेसि
णोय खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असणं वा ४ भोक्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारेत्ति ”

आमां पण तेज पाठ छे के कोइ गृहस्थ साधु पासे आवीने कहेके हुं तमारे माटे चार प्रकारनो आहारमांथी कोइ पण सामे लावीने आवुं ! ते साधु प्रथमथी जाणे तो कहे के गृहस्थ ! तुं मारे माटे कंइ पण सामे लावीने आपे तो मने खावा पीवाने कल्पे

सूत्रम्
॥७६९॥

आचारो
॥७७०॥

नहि, तेम तेवुं बीजुं पण न कल्पे.

आ प्रमाणे निषेध करेलो पण श्रावक सम्यगदृष्टि प्रकृति भद्रक अथवा मिथ्यादृष्टिमांथी कोइ पण दयालु एवुं चितवे, के आ गच्छन साधु पिक्षा लेवा जवाने अशक्त छे, तेम बीजाने लाववा पण कही शके नहि, माटे तेणे निषेध कर्या छतां पण हुं कोइ बहाने लावीने आपीश ए प्रमाणे विचारीने आहार विगेरे एम लावीने आपे, तो ते समये साधुए ते आहारने अनेषणीय (अयोग्य) छे, एम विचारीने ते गृहस्थने निषेध करवो. वली—

जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्ये—अहं च खलु पडिन्नतो अपडिन्नतेहिं गिलाणो अगिलाणेहिं
अभिक्खं साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइजिस्सामि, अहं वाचि खलु अपडिन्नतो
पडिन्नतस्स अगिलाणो गिलाणस्स अभिक्खं साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए आ-
हट्टु परिन्नं अणुक्खिंस्सामि आहडं च साइजिस्सामि १, अहट्टु परिन्नं आणक्खिस्सामि आ-
हडं च नो साइजिस्सामि २, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च सा इजिस्सामि
३, आहट्टु परिन्नं नो आणक्खिस्सामि आहडं च नो साइजिस्सामि ४, एवं से अहाकिट्टि-
यमेव धर्मं समभिजाणमाणे संते विरए सुसमाहियलेसे तत्थाचि तस्स कालपरियाए से

सूत्रम्

॥७७०॥

आचार
॥७७१॥

तत्थ विअंतिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुह खमं निस्सेसं आणुगामियं त्तिबेमि
(सू० २१७) ॥८-५॥ विमोक्षाध्ययने पंचम उद्देशकः ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) जे भिक्षु परिहार विशुद्धि चारित्रवाळो अथवा यथालंदिक होय, तेने हवे पछी कहेवातो प्रकल्प (आचार) छे, ते आ प्रमाणे (खलु वाक्यनी शोभा माटे, च समुच्चयना अर्थमां छे) हुं बीजाए करेली वैयावच्चनी अभिलाषा राखीश, हुं केवो छुं ? प्रतिज्ञपूर्व वैयावच्च करवाने बीजाए कहेलो छुं अर्थात् तेओ कहे छे, के अमे तमारी वैयावच्च यथा उचित करीए, ते बीजा केवा छे !

प्रः—अप्रतिज्ञपूर्व न कहेला; हुं केवो छुं ? उः—विकृष्ट तपवडे कर्तव्यतामां अशक्त छुं अथवा वायु विगेरे रोकावाथी ग्लान छुं बीजा कहेनारा केवा छे ? अग्लान छे, उचित कर्तव्य करवाने शक्तिवान छे, तेमां परिहार विशुद्धि चारित्रवाळा तप करनारनी अनुपारिहारिक (वैयावच्च करनार) सेवा करे छे, ते वैयावच्च करनार कल्पमां रहो होय, अथवा बीजो पण होय, हवे जो ते सेवा करनार पण ग्लान (मांदा) होय, तो ते बीजानी वैयावच्च न करे, ए प्रमाणे यथालंदिक साधुनुं पण जाणबुं, पण एठलुं विशेष के स्थविरकल्पी साधु पण तेनी सेवा करी शके छे, ते बतावे छे.

निर्जराने हृदयमां विचारीने सरखा कल्पवाळा साधर्मिक अथवा एक कल्पमां रहेला बीजा साधुओथी करायेली वैयावच्चने हुं इच्छीश जेनो आ आचारछे, ते तेबा आचारने पाळतोभक्त परिज्ञावडे पण जीवितने छोडे, पण आचारनुं खंडन न करे आ भावार्थछे;

सूत्रम्

॥७७१॥

आचारो
॥७७२॥

तेज प्रमाणे अन्य साधर्मिक वडे करायेलुं वैयावच्च अनुभति आपेलुं छे. हवे बीजानी वैयावच्च पाते करे ते बतावे छे (च समुच्चयना अर्थमां अने अपि पुनःना अर्थमां छे अने ते पूर्वना कहेवाथी केंद्र विशेष बताववा माटे छे. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे) अने हुं अप्रतिज्ञप्त कहेवायेलो हुं अने जे बीजो प्रतिज्ञप्त वैयावच्च न करवाने माटे कहेवायेलो छे ते ग्लान साधुनी हुं अग्लान (साजो) हु माटे निर्जराने उद्देशीने तेवा कलषधारी साधार्मिक साधुनी वैयावच्च करुं;

प्र०—शा माटे ? तेना उपकार [शांति] ने माटे तेथी आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करीने पण भक्त परिज्ञाए प्राणोने छोडे पण प्रतिज्ञानुं खंडन न करे, [आ सूत्रनो परमार्थ छे] हवे प्रतिज्ञा विशेषना द्वारवडे चोभंगी कहे छे. कोइ एक आवी प्रतिज्ञा करे छे के हुं बीजा ग्लान साधर्मिक साधुने आहार विगेरे लावी आपीश, तथा हुं वैयावच्च पण योग्य रीते करीश, तथा अपर [बीजा] साधर्मिके आणेण आहार विगेरेने वापरीश, आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करीने वैयावच्च करे (१) तथा बीजो साधु आवी प्रतिज्ञा करे के हुं बीजा माटे गोचरी विगेरे शोधीश, पण बीजानो आहार विगेरे लावेलो खाइश नहि, (२) त्रीजो आवी प्रतिज्ञा करे के हुं बीजाने निमिते आहार विगेरे शोधीश नहि पण बीजानो लावेलो खाइश, [३] चोथो आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करे, हुं बीजाने निमिते आहार विगेरे शोधीश नहि, तेम बीजानुं लावेलुं खाइश पण नहि [४] आ प्रमाणे जुदी जुदी प्रतिज्ञाओ करीने कोइ जग्याए ग्लायमान (मांदो) पण थाय तो पण जीवितने त्याग करे, पण प्रतिज्ञानो भंग न करे. हवे आ विषयने संपूर्ण करवा कहे छे. आ प्रमाणे कहेली विधि ए तत्वने जाणनारो ते साधु शरीर विगेरेनो मोह छोडनारो वनीने यथाकीर्तिं धर्मनेज वरोवर जाणीने आसेवन परिज्ञावडे पालतो तथा लाघविकने इच्छतो विगेरे चोथा उद्देशामां जे कहुं, ते अहिं बधुं जाणी लेबुं, तथा गोते कषायना उपशमथी शांत छे, अथवा अनादि

सूत्रम्
॥७७२॥

आचा०
॥७७३॥

संसारमां पर्यटन करवाथी श्रांत छे, ते सावध अनुष्टानथी विरत छे, शोभन लेइया ते जेणे अंतःकरणनी निर्मलवृत्ति तेजोलेइया विगेरे धारण करवाथी तेसुसमाहृत लेइयावाळो छे, आवो बनीने पूर्वे कहेली प्रतिज्ञा लइने पाळवामां समर्थ छे, ते तप अथवा रोग ना कारणे ग्लान भावने पामेलो होय, छतां पण ते पोतानी प्रतिज्ञानो लोप न करतो शरीर त्याख्यान करे, अने ते भक्त परिज्ञामां पण काळ पर्यायवडे अनागत् परिज्ञा (बार वर्षनी संलेखनानो समय नथी, तेमां पण काळ पर्याय छे, जेणे शिष्योने भणावी गणावी तैयार कर्या होय, अने तप वडे संलिखित देहवाळो होय तेनो जे काळ पर्याय मृत्युनो अवसर प्रशंसवा योग्य छे, तेवो आ ग्लान थयेला कल्पधारीने पण एझेज अवसर छे. कारण के बन्नेमां कर्मनी निर्जरा समान छे, ते कल्पधारी भिक्षु ग्लानपणाथी अणशननां विधानमां व्यन्तिकारक कर्म क्षय करनारो छे बाकीनुं बधुं पूर्व माफक जाणबुं पांचमो उद्देशो समाप्त.



छटो उद्देशो

पांचमो कहो पछी छटो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां बताव्युं, के ग्लान साधुए भक्त प्रत्याख्यान करबुं, अने आ उद्देशामां बतावशे के घृतिसंहनन विगेरेथी बळवाळो साधु एकत्र भावनाने भावीने इंगित मरण करे आ संबंधे आवेला आ उद्देशानुं पहेलुं सूत कहे छे.

जे भिकखु एगेण वत्थेण परिवुसिए पायविर्द्धएण, तस्स णं नो एवं भवइ बिझ्यं वत्थं जाइ-

सूत्रम्

॥७७३॥

आचारा०
॥७७४॥

स्सामि, से अहेसणिजं वत्थं जाइज्ञा अंहापरिग्गहियं वत्थं धारिज्ञा जाव गिम्हे पडिवन्ने
अहापरिजुन्नं वत्थं परिट्टविज्ञा २ त्ता अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे
जाव समत्तमेव समभिजाणिया (सू० २१८)

जिनकल्पी विगेरे जे साधुने एवो अभिग्रह होय के मारे एक वस्त्र धारण करबुं अने बीजुं पात्र राखबुं तेवा उत्तम साधुने
मनमां एम न आवे, के बीजुं वस्त्र याचुं. ते पोताने जरुर पडतां फक्त ठन्डी क्रुतुमां एकज निर्दोष वस्त्र याची लावे, अने विधि
प्रमणे लाची पहेरे, पण ज्यारे उनाळो आवे, त्यारे जुनुं वस्त्र जीर्ण थवाथी तेने परठवी दे, पण बीजा शोयाळामां चाले तेबुं होय
तो पोते ते एक साटक (चादर) ने धारण करे, अने जीर्ण वस्त्र परठवी दीधुं होय, तो पोते वस्त्र रहित थइने विचरे, ते स्थिर मति-
वाळा साधुनुं आ लायवपणुं आगम अनुसारे होवाथी सम्यक्त्व अथवा सर्व प्राणी उपर समभावपणुं के रागद्वेष रहित पणुं जाणबुं
तथा ते साधुने लघुता होवाथी तेने एकत्व भावनानो अध्यवसाय थाय ते बतावे छे.

जस्स पं भिकखुस्स एवं भवइ—एगे अहमंमि न मे अतिथि कोइ न याहमवि, कस्सवि, एवं
से एगागिणमेव अप्पाणं समभिजाणिज्ञा, लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए
भवइ जाव समभिजाणिया (सू० २१९)

सूत्रम्
॥७७४॥

आचारो
॥७७५॥

(णं वाक्यनी शेभा माटे छे) जे साधुने आवो विचार थाय के “ हुं एकलो छुं, संसारमां भ्रमण करतां परमार्थ दृष्टिए जोतां मने उपकार करनार बीजो कोइ नथी, अने हुं पण बीजा कोइना दुःखने दूर करवामां सहायक नथी, कारण के पोताना करेलां कर्मनुं फल भोगववामां सर्वं जीवोने इश्वर [समर्थ] पणु छे ” आ प्रमाणे आ साधु पोताना आत्माने अन्तरदृष्टिए सम्यग् रीते एकलो जाणे, अने आ आत्माने नरक विगेरेनां दुःखोथी बचाववा शरण आपवा योग्य बीजो नथी, एवुं मानतो होय ते पोताने जे जे रोग विगेरे दुःख देनारां कारणो आवे, त्यारे बीजाना शरणनी उपेक्षा करतो “मैं कर्यु छे माटे मारेज भोगवबुं” आवो निश्चल विचार करीने सम्यग् रीते भोगवे छे.

प०—ते केवी रीते एम समताथी सहन करे ? उ०—लाघविय विगेरे चोथा उद्देशा २१५ सू०मां बताव्युं ते “ समत्वपणुं जाणबुं ” त्यांसुधी जाणबुं, के आ साधुने कर्मनी लघुता थवाथी आ लोक परलोक बन्नेमां हित सुख निश्रेयस माटे थाय छे अने परंपराए मोक्ष फल आपनार छे—तेथी तेणे एकत्वभावना भाववी आ अध्ययनना बीजा उद्देशामां उद्भव उत्पादन एषणा बतावी ते आ प्रमाणे “आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा ४” विगेरे सू० २०२मां बताव्युं ते प्रमाणे पांचमां उद्देशामां ग्रहण एषणा बतावी, “सीया य से एवं वयं तस्सवि परो अभिहडं असणं वा ४ आहडुं दलएजा इत्यादि [मुत्र २१६मां वचमां आ पाठ छे] आ सुत्रवडे ग्रास एषणा बतावी तेने हवे पछीना सूत्रमां विशेषथी बताववा सूत्र कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा असणं वा ४ आहारे माणे नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं

सूत्रम्

॥७७५॥

आचा०
॥७७६॥

हणुयं संचारिज्ञा आसाएमाणे, दाहिणाओ वामं हणुयं नो संचारिज्ञा आसाएमाणे, से अ-
णासायमाणे लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ, जमेयं भगवया पवेइयं
तमेवं अभिसमिच्छा सबओ सबत्ताए समत्तमेव अ (सम) भिजाणीया (सू० २२०)

ते पूर्व बतावेलो साधु अथवा साध्वी अशन विगेरे आहार उद्भव उत्पादन एषणाथी शुद्ध अने प्रत्युत्पन्न ते ग्रहण एषणा
शुद्ध एटले १६ गृहस्थ दान देनारना तथा सोळ लेनारना तथा दश बनेना भेगा मळी कुल ४२ दोषथी रहित आहार लावीने
गोचरी करतां जे पांच दोष अंगार धूम विगेरे छे तेने वर्जीने आहार करे, ते अंगार अने धूम रागद्वेषना कारणे थाय छे, तेमां पण
सरस नीरस आहार आवे तो रागद्वेष थाय छे, अने कारणनो अभाव यतां कार्यनो पण अभाव छे, एम जाणीने रसनी उपलब्धि
[स्वाद]नुं निमित्त त्यजवानुं बतावे छे. ते साधु आहार करतां डाबी बाजुथी जमणी बाजु स्वाद लेवा माटे भोजन विगेरे न लइ
जाय तेज प्रमाणे स्वाद लेवा जमणी बाजुथी डाबी बाजु न लइ जाय कारणके संसारना स्वादथी रसनी प्राप्तिमां रागद्वेषनुं निमित्त
छे, अने तेथीज अंगार, तथा धूम दोष लागे छे, जेथी उत्तम साधु साध्वीए जे कंइ स्वादिष्ट होय तेनो स्वाद न करवो बीजी प्रतिमां
“आढायमाणे” पाठ छे, तेनो अर्थ आ छे, के “आहारमां आदरवाळो मूर्च्छावाळो शुद्ध बनीने आहारने आम तेम न फेरवे”

हनु (हडपची)मां आम तेम डाबी जमणीमां न फेरववुं, तेम बीजे पण स्वाद लेवो नहि ते बतावे छे. ‘स’ ते साधु चारे
प्रकारना आहारने वापतो रागद्वेष छोडीने खाय, तेज प्रमाणे कोइ निमित्तथी डाबी जमणी बाजु आहार फेरववो पडे तो पण पोते

सूत्रम्

॥७७६॥

आचारो

॥७७७॥

स्वाद कर्या विना फेरवे. प्रः—शा माटे! उः—आहारनी लाघवताने स्वीकारतो आस्वाद न करे, आ प्रमाणे आस्वादना निषेधथी अंतप्रांत आहारनो स्वीकार पण कहेलो समजवो. आ प्रमाणे स्वाद न करवाथी ते साधुने कर्मनी बहोळी निर्जरा थाय छे, ते बधुं पूर्व माफक छे, समपणु समत्वने पामे अथवा सम्यक्त्व निश्चल थाय ए बधुं पूर्व माफक समजबुं. तेवा उत्तम साधु अथवा साध्वीने अंत प्रांत आहार खावाथी मांस लोही ओळा थवाथी जर्जरीत हाडकां थवाथी संयम अनुष्ठान शरीरथी बरोबर न थवाथी खेद थाय, तेवी कायचेष्टावाळाने शरीर त्यागवानी बुद्धि थाय, ते बतावे छे.

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवड—से गिलामि च खलु अहं इमंमि समए इमं सरोरगं अणु-
पुव्वेण परिवहित्तए, से अणुपुव्वेण आहारं संवद्विज्ञा, अणुपुव्वेण आहारं संवद्विता, कसाए
पयणुए किञ्चा समाहियज्जे फलगावयट्टो उट्टाय भिक्खु अभिनिवुडच्चे (सू० २२१)

एकत्वभावना भावनार जे साधुने आहार उपकरणमां लाघवपणुं प्राप्त थयुं होय, तेने आवो अभिप्राय थाय छे, (से शब्दनो अर्थ तत् छे अने ते वाक्यना उपन्यास माटे छे, च समुच्चयना अर्थमां छे, खलु अवधारणना अर्थमां छे) के हुं आ संयमना अव-
सरमां लुखा आहारथी अथवा रोग उत्पन्न थवाथी पीढाइने ज्ञानि पामी अशक्त थयो छुं, लूखा आहारथी के तपथी शरीर अशक्त थवाथी अनुपूर्विए योग्य रीते आवश्यक क्रिया के प्रतिलेखना विगेरे क्रिया करवामां अशक्त बनी गयो छुं. अने शरीर दरेक क्षणे नवळुं पडतुं होवाथी एक बे उपवास के आंबील तप वडे आहारनो संक्षेप करे. अर्थात् साजा शरीरमां बार वर्ष सुधी अनुक्रमे थोडा

सूत्रम्

॥७७७॥

आचार
॥७७८॥

घणा तपे संलेखना थती होय, ते अहीं ग्रहण न करे, पण ग्लान साधुने तेटलो काळ स्थिति न रहे, माटे तेवी दुंका काळनी अनुपूर्वी वाळी द्रव्य संलेखना माटे आहारने रोके, आवी द्रव्य संलेखना करीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छेः—

बे त्रण चार पांच उपवास विगेरेनो अनुक्रमे तप करीने आहारनो संक्षेप करे, अने कषायोने ओळा करीने शरीरनो मोह छोडे, कषायो हंमेशां ओळा करवा जोइए, पण आ संलेखनामां तो अवश्ये विशेष प्रकारे ओळा करवा, एथी तेमने विशेषथी ओळा करी सम्यकप्रकारे स्थापन कर्यु छे, शरीर (अर्चा) जेणे तेवो मुनि “समाहित अर्च” छे, (नियमित कायना व्यापारवाळो छे,) अथवा अर्च्या ते लेश्या छे, ते लेश्याने सम्यक् रीते स्थापी छे माटे अति विशुद्ध अध्यवसाय वाळो पोते बन्यो छे, अथवा अर्च्या ते क्रोधादि अध्यवसाय रूप ज्वाळाने शांत करवाथी समाहित अर्च्या वाळो छे, तेवा साधुए कर्म क्षय रूप फळ (तेने क प्रत्यय लगाडवाथी फलक थयुं) ने संसार भ्रमण रूप आपदामां अर्थ (प्रयोजन वाळो छे माटे ते फलक आपद् अर्थी कहेवाय छे, अथवा फलक (पाटीया)ने बंने बाजुथी वांसला विगेरेथी सरखुं करवा छोले तेम अहीं बाहा अभ्यंतर अवकृष्ट थवाथी [आर्ष नचन प्रमाणे विग्रह करतां] ‘फलगावयद्वी’ छे, अथवा दुर्बचन [महेणां] रूप वांसलाथी छोलवा छतां कषायना अभावथी फलक माफक रहे छे, तेवा स्वभावथी पोते ‘फलकावस्थायी’ छे, अर्थात् पोते ‘वासी चन्दन कल्प’ जेवो छे, [आ प्रमाणे मागधी सूत्रना अर्थ कर्या, कर्म क्षय रूप फळनो अर्थी, ते संसार भ्रमणनी आपदामांथी छुटवानो अर्थी, तथा क्रोधादिना ओळा थवाथी पाटीया जेवो मध्यस्थ रागद्वेष रहित बताव्यो] आवो उत्तम साधु प्रतिदिन साकार भक्त प्रत्याख्यान वाळो छे अने घणो बळवान रोग आवतां शीघ्र मरण नो उद्यम करनार बनो अभि निवृत्ता अर्च्चवाळो एटले शरीर संताप रहित बने, धैर्य तथा संवयण विगे-

सूत्रम्
॥७७८॥

आचा०
॥७७९॥

रेथी बुक्त होय, ते महा पुरुषोए आचरेला इङ्गित मरण ने स्वीकारे. प्र० केवी रीते ? ते कहे छे.

अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा खेडं वा कब्बडं वा मटंबं वा पट्टणं वा दोणमुहं वा आ-
गरं वा आसमं वा सन्निवेसं वा नेगमं वा रायहाणिं वा तणाइं जाइज्ञा तणाइं जाइत्ता से
तमायाए एगंतमवक्त्रमिज्ञा, एगतमवक्त्रमित्ता अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबोए अप्पहरिए अ-
प्पोसे अप्पोदए अप्पुतिंगपणगदगमद्वियमक्कडासंताणए पडिलेहिय २ पमज्जिथ २ त-
णाइं संथरिज्ञा, तणाइं संथरित्ता इत्थ विसमए इत्तरियं कुज्ञा, तं सच्चं सच्चवाई ओए-
तिन्ने छिन्न कहं कहे आईयद्वे अणाईए चिच्चाण भेउरं कायं संविहूय विरुवरूवे परीसहो-
वसगे अस्सिविस्सं मणयाए भेरव मणुचिन्ने तत्थावि तस्स काल परियाए जाव अणुगा-
मियं तिबेमि (सू० २२२) ॥८-६॥ विमोक्षाध्ययने षष्ठ उद्देशकः

बुद्धि विगेरे गुणोनो ग्रास करे अथवा अढार करो ज्यां लेवाय ते गाम छे, (बधी जग्या एवा शब्दनो अर्थ गुजरातीमां अ-
थवा लेवो) ज्यां कर न होय ते न कर (नगर) छे, धूळना ढगलाथी कोट बनाव्यो होय ते खेट (खेडु) छे, नाना कोटथी वीटा-
येलुं ते कर्बट छे, २॥ गाउने आंतरे गाम होय ते मटंबं छे, पत्तन (पाटल) बे प्रकारे छे. जल पत्तन ते कानन द्वीप विगेरे छे,

सुत्रम्
॥७७९॥

आचारा०
॥७८०॥

स्थल पत्तन ते मथुरा छे, द्रोण मुख ते जळ के स्थल मार्गे नीकल्बा तथा पेसवाना रस्ता होय जेपके भरुच खंभात [बंदर] छे सोना चांदी विगेरेनी खाणने अकर छे, तापम विगेरेनो मठ ते आश्रम [आश्रय] छे, यात्रा निमित्ते मळेलां माणसोनो ज्या जमाव थतो होय ते संनिवेश छे, घणा वाणीया [वेपारी] नुं रहेठाण ते “नैगम” छे, राजाने रहेवानुं नगर ते राज्यधानी छे. आमांथी कोइपण जग्याए जडने घासनी याचना करे.

प्र०—शा माटे ? उ०—पोताने संथारो करवा माटे सुकुं निर्जीव घास दर्भ वीरण विगेरेने कोइ गाम विगेरेमां जडने तेना मालिकनी आज्ञा लङ्ने पोलुं सडेलुं लीलुं छोटीने सुकुं घास ले, ते लङ्ने घास एकांत स्थल पहाडनी गुफा विगेरेमां जड महा स्थंडिल शोधे ते कहे छे, जेमां कीडी विगेरेनां इन्डां न होय, जेमां बे इन्द्रिय जीवो न होय, तथा नीवार श्यामाक विगेरे बीजो न होय, तथा लीलुं घास दरो विगेरे न होय, तथा उपर के अंदर ठारनुं पाणी पडेलुं न होय [अर्थात् छांटा पडेला न होय,] तथा वरसादनुं के नीचेनुं पाणी तेमां पडेलं न होय, तेज प्रमाणे कीडीयारुं, पांच वर्णनी सेवाळ, तुर्तनी पाणीथी पलाकेली माटी करोळीयानां जाळां रहित निर्दोष जग्या होय, तेवा महा स्थंडिलमां घासने पाथरे. प्र०—केवी रीते ? ते कहे छे. ते जग्याने आंखथी बरोबर जोइनेपछी रजोहरणथी बरोबर पूंजीने[दरेकमां बे वार लेवानुं कारण बरोबर ज्ञए]संथारो पाथरीने झाडा पेशावनी जमिन बरोबर जोइने पूर्व दिशाना मोढे संथारा उपर बेसी हथेळी अने ललाटमां रजोहरण फसावीने सिद्ध भगवन्तने नमस्कार करीने पञ्चपरमेष्ठिने याद करी (अपि शब्दनो अन्यत्र अर्थ छे) समयमां मुकरर करेला स्थानना इङ्गित मरण करे, (इत्वर शब्दनो अर्थ पादपोपगमननी अपेक्षा माटे छे तेथी) पादपोपगमन अणसण अथवा करे, (पण इत्वरनो अर्थ साकार अमुक काळ

सूत्रम
॥७८०॥

आचा०

॥७८१॥

सुधीनुं एवो अर्थ न लेवो) कारण के जिन कल्पी विगेरे मुनिने बीजा काळ्यमां पण साकार प्रत्याख्याननो संभव नथी, तो प्रत्याख्यान जेवा अंतिम वखते साकारनो संभव क्यांथी होय? कारण के इत्वर ते अमुक काळ्नुं पञ्चकखाण रोगी श्रवक करे, के जो आरोग्यी पांच दीवसमां मुकाइश, तो पछी भोजन करीश, ते शिवाय नहीं करुं विगेरे इत्वर पञ्चकखाण छे, पण इङ्गित मरण तो धैर्य संहनन विगेरेना बलवालो पोतानी मेलेज पासुं फेरवानी विगेरे क्रिया करनारो आखी जींदगी सुधी चारे आहारनो त्याग करे छे. कहुं छे के:—

पञ्चकखइ आहारं, चउचिवहं णियमओ गुरुसमीवे; इङ्गियदेसंमि तहा, चिट्ठंपि हु नियमओ कुणइ ॥ १ ॥

उवत्तइ परिअत्तइ, काइगमाईऽवि अप्पणा कुणइ; सब्बमिह अप्पणच्चिअण, अब्बजोगेण धितिवलिओ ॥ २ ॥

चारे प्रकारना आहारनुं गुरु पासे नियमथी प्रत्याख्यान करे, अने इङ्गित(मुक्करर करेलां)भागमां चेष्टा पण नियमथी करे छे, [१] पासुं बदले, बाजुए जाय अथवा ठल्लो मात्रुं करे, ते पण जाते करे, ते धैर्य तथा बलवालो पोताना सिवाय बीजा पासे न करावे.

प्र.—इङ्गित मरण केवुं छे? अने कोण करे? ते कहे छे. संत पुरुषोनुं हित करे तेथी ते इंगित मरण सत्य छे. अने सुगति मार्गे लड जवामां ते अविसंवादपणे होवाथी तथा सर्वज्ञना उपदेशथी ते इंगित मरण सत्य [तथ्य] छे. तथा पोते पण सत्य बोलनार होवाथी सत्यवादी छे, कारण के आखी जींदगी सुधी यथोक्त अनुष्ठान करवानी प्रतिज्ञा लीधेझी ते भार उपाडवा समर्थ होवाथी अने तेमज पालवाथी सत्यवादी छे, तथा ‘ओज’ पोते रागद्वेष रहित छे. तथा संसार सागरने तर्या छे, अने भूतकाळ माफक भविष्यमां पण तरवा माटे तेवो उपचार करवाथी अवतीर्ण छे, तथा जेणे राग विगेरेनी विकथा कोइ पण रीते न करवानुं नकी

सूत्रम्

॥७८१॥

आचारा०

॥७८२॥

करवाथी छिन्न कथंकथ छे, अथवा आ इंगित मरणनी प्रतिज्ञा केवी रीते पार उतारीश ? एवी कथा जेणे छेदी नांखी, माटे छिन्न कथंकथ छे. कारण के दुष्कर अनुष्ठान करनारो तेज कथंकथी छे. पण ते महा पुरुषपणे होवाथी ते व्याकुल्ताने पामतो नथी, तेज प्रमाणे आ साधुए बधी रीते अतिशयथी जीवादि पदार्थी जाणी लीधाथी ते अतीत अर्थ छे, अथवा आदत्त अर्थ छे.

अथवा बधी रीते अर्थी अतिक्रांत कर्या छे, अर्थात् जेने प्रयोजन हवे कथुं बाकी नथी. ते उपस्त व्यापारवालो छे. तेज प्रमाणे बधी रीते 'इत' ते अतीत, अने तेवो नहीं माटे अनातीत छे, अथवा अनादत्त संसार करनारो ते. संसार अर्णव पारगामी बन्यो छे. आवो निःस्पृही साधु इङ्गित मरण स्वीकारे छे, ते साधु विधिए प्रति क्षणे क्षय पामता भिदुर शरीरनो मोह छोडीने जे औदारिक शरीर कर्म संबंधी आवेलुं छे, तेने वोसिरावे छे. अने जे परिसह उपसर्गी जुदा जुदा आवे, तेनुं मंथन करे, सम्यग् रीते सहन करी आ सर्वज्ञ प्रणीत आगममां विश्वास राखीने अविसंवादना अध्यवसायपणाथी भयानक अनुष्ठान जे कलीब पुरुषोथी न विचाराय, तेबुं इंगित मरण पोते स्वीकार्यु छे, जो के रोगना कारणे आ तेणे स्वीकार्यु छे छतां पण तेनो लाभ काल पर्याय आगत जेटलोज छे, ते बतावे छे, रोग पीडाना कारणे मरण स्वीकार्यु छतां तेनो लाभ लांचा काळ जेटलोज छे. एटले काळ पर्यायमांज लाभ थाय. तेम अहीं पण थाय छे. ते काळज्ञ साधुने आज काल पर्याय छे, कर्मनो क्षय बन्नेमां समानज छे. कह्युं छे के:—“सेवि तत्थ वियांत कारए” तेनो अर्थ पूर्व माफक छे, अने समजाय तेम छे के अहीं पण पुष्कल निर्जरा छे. (आ उद्देशमां रोगी साधु इङ्गित के पादपोपगमन अणसण करे तो तेटला थोडा काळमां समभावे घणुं दुःख सहेवाथी गच्छमां रही जे कर्म खपावे तेटलुंज आ थोडा काळमां खपावे.) छद्वो उद्देशो समाप्त.

सूत्रम्

॥७८२॥

आचारा०

॥७८३॥

सातमो उद्देशो

छट्ठो कहीने हवे सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां एकत्व भावना भावनार वृति संहनन विगेरेथी युक्त साधुनुं इंगित मरण बताव्युं, अने अहीं तेज एकत्व भावना प्रतिमाओवडे बतावे छे, एथी अहीं ते प्रतिमाओ बतावे छे, तथा वधारे विशिष्ट संघयणवाळो पादपोपगमन अणजण पण करे, आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

जे भिक्खु अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ-चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं अहियासित्तए दंसमसगफासं अहियासित्तए एगयरे अन्नतरे विरूव्रूवे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छायणं चऽहं नो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पेइ कडिबंधणं धारित्तए (सू० २२३)

जे साधु प्रतिमा धारण करेलो अने विशेष अभिग्रहथी अचेल (वस्त्ररहित) पणे सयममां रहेलो होय, ते भिक्षुने आवो अभिप्राय थाय छे, के हुं वृति संहनन विगेरे युक्त होवाथी वैराग्य भावनाथी भावित अंतःकरणवाळो छुं. अने आगम चक्षुवडे (चारे गतिनुं ज्ञान होवाथी) नारकतिर्यचनुं दुःख जाणुं छुं. अने मानुं छुं के मारे मोक्ष जेवुं मोडुं फळ लेवानुं होवाथी तृणनो स्पर्श कंइ दुःख देतो नथी, तेज प्रमाणे ठन्ड, ताप, डांस, मच्छरनो स्पर्श सहन करवा शक्तिमान छुं, तथा एक जातना के जुदी जुदी

सूत्रम्

॥७८३॥

आचा०

॥७८४॥

जातिना अनुकूल के प्रतिकूल विरूपरूपवाला फरशो सहन करवाने हुं शक्तिवान् छुं, पण लज्जाने लीधे गुहा प्रदेशने ढांकवानी जरुर होवाथी ते छोडवा हुं चाहतो नथी. अने आ स्वभावथीज अथवा साधनना विकृत रूपणाथी ते साधुने शरम लागे, तो तेने चोळ-पट्ठो पहेरवो कल्पे छे, अने ते पहोळाइमां एक हाथने चार आंगळनो होय, अने लंबाइमां केडना प्रमाणमां होय, तेवो गणतरीनो एक राखे पण, जो तेवां कारणो न होय, तो अचेलपणेज विहार करे, अने अचेलपणेज ठन्ड विगेरे स्पर्श सारी रीते सहन करे, ए बताववा कहे छे.—

अनुवा तथ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसन्ति सीयफासा फुसन्ति तेउफासा फुसन्ति
दंसमसगफासा फुसन्ति एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेइ, अचेले लाघवियं
आगममाणे जाव समभिजाणिया (सू० २२४)

एवु कारण तेने होय, तो ते साधु वस्त्र धारण करे, अथवा पोते लज्जा न पामतो होय, तो अचेल रही संयम पाळे, अने वस्त्र-रहित संयम पाळतां तेने त्रुणना फरशो फरशे, तथा ठंड ताप डांस मच्छरना फरसो दुःख दे तेवा एक जातना के जुदी जुदी जातना भोगववा छतां पोते अचेल रही कर्मनुं लाघवपणुं माने, अने तेमांज समत्व माने, वळी प्रतिमाधारी साधुज विशेष अभिग्रह धारण करे, ते आ प्रमाणे के हुं बीजा प्रतिमाधारी मुनिओने किंचित् आपीश, अथवा तेमनी पासेथी लेइश एवो कोइ पण जातनो अभिग्रह धारण करे, तेनी चोभंगी कहे छे,

सूत्रम्

॥७८४॥

आचा०
॥७८५॥

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—अहं च खलु अन्नेसि भिक्खूणं असणं वा ४ आहटु दलइ-
स्सामि आरडं च साइजिस्सामि १ जस्स णं भिक्खुस एवं भवइ—अहं च खलु अन्नेसि
भिक्खूणं असणं वा ४ आहटु दलइस्सामि आहडं चनो साइस्सामि २ जस्स णं भिक्खूस्स
एवं भवइ अहं च खलु असणं वा ४ आहटु नो दलइस्सामि आहडं च साइजिस्सामि
३ जस्स णं मिक्खूस्स एवं भवइ अहंच खलु अन्नेसि भिक्खूणं असणं वा ४ आहटु नो
दलइस्सामि आहडं च नो साइजिस्सामि ४, अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण अहेसाणिजेण
अहापरिग्हिएणं असणेण वा ४ अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए, अहं
वाचि तेण अहाइरित्तेण अहेसाणिजेण अहापरिग्हिएणं असणेण वा पाणेण वा ४ अभि-
कंख साहम्मितहिं कीरमाणं वेयावडियं साइजिसामि लाघवियं आगममाणे जाव सम्मत्तमेव
समभिजाणिया (सू० २२५)

आ बयुं पूर्वे सू० २१७मां आवी गयुं छे, तेथी संस्कृत वडे कहे छे, जे भिक्षुने आवो अभिग्रह होय, के हुं बीजा साधुओ माटे

सूत्रम्
॥७८५॥

आचारो

॥७८६॥

आहार लावीने आपीश, तथा तेमनुं लावेलुं स्वाइश (१) बीजा साधुने आवो अभिग्रह होय के बीजा साधुओने आहार लावीने आपीश पण बीजानो लावेलो स्वाइश नहि. (२) कोइने आवो अभिग्रह होय के बीजाने माटे आहार लावीने आपीश नहि, पण तेमने लावेलो स्वाइश [३] बीजाने माटे लावीने आपीश नहि तेम लावेलो स्वाइश पण नहि. आचारमांनो कोइ पण अभिग्रह धारण करे, अथवा प्रथमना त्रणमांनो एक पद वडेज कोइ अभिग्रह करे ते बतावे छे, जे साधुने आवो अभिग्रह होय, के हुं बीजा ए आहार करतां वधेला आहारनुं भोजन करीश, कारण के ते प्रतिमा धारीओने तेबुंज एषणीय [स्वावा योग्य] छे, ते आ प्रमाणे. पांच प्राभृतिकामां आग्रह छे, बेनो अभिग्रह छे, तेमज पोताने माटे लीधेला आहारमांथी साधर्मिक साधुनी वैयावच्च निर्जराने उहेशीने करे, जो, के तेमणे प्रतिमा धारण करेली होवाथी एक जग्याए भेगा थळने न स्वाय, पण तेमनो अभिग्रह एक सरखो होवाथी सांभोगिक छे, अने तेथी तेवा उत्तम साधुनां उपकरण लाववा माटे हवे वैयावच्च करूं. आवो अभिग्रह कोइ ले, तथा बीजुं बतावे छे. [वा शब्दथी बीजो पक्ष बतावे छे अपि शब्द पुनःना अर्थमां छे] अथवा हुं तेमणे लीधेली गोचरीमांथी ४ निर्जराने उहेशीने साधर्मिकाए करेली वैयावच्चने स्वीकारीश अथवा जे बीजानी वैयावच्च करे तेनी हुं अनुमोदना करीश. के हे साधो ! तमे बहु सारुं कर्युं छे ! एवुं वचन बोलीश, तथा काया वडे तथा प्रसन्न मनवाळा भाववडे अनुमोदना करीश, आ वधुं शा माटे करे ? कर्मनी लघुता माटे. आ प्रमाणे कोइ पण अभिग्रह धारण करेलो अचेल के सचेल साधु शरीर पीडा होय अथवा न होय, पण पोतानुं आयु थोडुं रहेलुं जाणीने उद्यत मरण स्वीकारे, ते बतावे छे :—

जस्त णं भिक्खुस्स एवं भवइ—से गिलामि खलु अहं इमस्मि समए इमं सरोरगं अण-

सूत्रम्

॥७८६॥

आचारो
॥७८७॥

पुब्वेणं परिवहित्तए, से अणुपुब्वेण आहारं संवद्विजा २ कसाए पंयणुए किञ्चा समाहियच्चे
फलगावयद्वी उद्वाय भिक्खु अभिनिवृद्धुध्चे अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा जाव राय
हाणि वा तणां जाइज्जा जाव संथरिज्जा, इत्थवि समए कायं च जोगं च ईरियं च पच्च-
कखाइज्जा, तं सच्चं सच्चावाई ओए तिन्ने छिन्नकहंकहे आइयट्टे अणाईए चिच्चाणं भे-
उरं कायं संविहुणिय विरूवरूवे परीसहोवसगे अस्सिं विस्सभणाए भेरवमणुचिन्ने तत्ववि-
तस्स काल परियाए सेवि तत्थ वियन्तिकारए, इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुहं खमं निस्सेसं
आणुगामियं तिबेमि (सू० २२६) ॥ ८-७ ॥

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे;) ते भिक्षुने आवो अभिप्राय थाय छे, के हुं ग्लान थयो छुं, एम जाणीने सू० २२२मां वताव्या
प्रमाणे वास लावीने एकांत निर्दोष जग्यामां पाथरे अने त्यां बेसीने शुं करे ? ते कहे छे, आ अवसरमां पण बीजे स्थले नहि पण
तेज जग्याए संथारामां बेसीने सिद्धनी समक्ष पोतानी येळेज पांच महाव्रतनो फरी आरोप करे [फरी चालवा गणी जाय] त्यार-
पछी चार आहारनुं पच्चक्खाण करे, पछी पादपोपगमन अणसण माटे शरीरने स्थिर करे, अने तेनो वेपार ते संकोचवुं, लांवा करवुं
के आंख मीचवी उघाडवी ते पण रोके, तथा इरण ते इर्या ते सुक्ष्म, काय वचन संबन्धी तथा मन संबन्धी पण अप्रशस्तनुं पच्चक्खाण

सूत्रम्
॥७८७॥

आचार

119cc11

करे, अने ते पादपोपगमन अणसण सत्य सत्यवादी विगेरे बधुं गया उद्देशा प्रमाणे जाणबुं,[इति तथा ब्रह्मीमि शब्दो पण जाणीताढे.]
सातमो उद्देशो समाप्त.

॥ इतिश्री आचाराङ्गसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रोरस्तु ॥

सूत्रम्

॥७८८॥

समाप्त.

॥ इति श्रीआचाराद्यसूत्रे चतुर्थो भागः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

સ્વરૂપાદિત પ્રાણી

